

वर्ष: ५ अंक: ९ सितंबर, २०२५

मूल्य: ६० रु.

पृष्ठ : ४४

राजस्थान टुडे



**ताजियान की
मुख्यान**

4

**दोस्ती इनितहान
लेती है...**

7

**सत्ता, संपत्ति
और संदेह**

10

**पीके बिगाड़ेंगे
किसका खेल**

15

एकता की जान है,
हिंदी भारत की शान है।

ବେଳେ ରାତରି
ଜାତକରି

14 सितंबर

ਹਿੰਦੀ ਦਿਪਲ

की हार्दिक शुभकामनाएँ



राजस्थान ट्रेड

आपकी पत्रिका, आपकी बात



RNI No. RAJHIN/2020/11458
वर्ष 5, अंक 9, सिंतबर, 2025
(प्रत्येक माह 15 तारीख को प्रकाशित)

प्रधान सम्पादक
दिनेश रामावत

राजनीतिक सम्पादक
सुरेश व्यास

सम्पादक
अजय अस्थाना

प्रबंध सम्पादक
राकेश गांधी

सह सम्पादक
बलवंत राज मेहता

ऐच्छिक
राजेंद्र यादव

संपादकीय कार्यालय
बी-4, फॉर्थ फ्लॉर, एम.आर. हाईट्स
महावीर कॉलोनी, भास्कर सर्किल,
रातनाड़ा, जोधपुर - 342011
फोटोग्राफर नंबर - 8107800000
ई-मेल - rajasthantoday@gmail.com

सभी विवादों का निपटारा जोधपुर की सीमा
में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में
किया जाएगा।

राजस्थान टुडे में प्रकाशित आलेख लेखकों की
राय है। इसे राजस्थान टुडे की राय नहीं समझा
जाए। राजस्थान टुडे के मुद्रक, प्रकाशक और
सम्पादक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। हमारी
भावना किसी वर्च या व्यक्ति को आहत करना
नहीं है। विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का
उत्तरदायित्व राजस्थान टुडे का नहीं होगा।

• मारवाड़ मीडिया प्लस के लिए मुद्रक एवं
प्रकाशक पूर्ण अस्थाना द्वारा बी-4, फॉर्थ फ्लॉर,
महावीर कॉलोनी, रातनाड़ा, जोधपुर-342011 से
प्रकाशित और डी.बी.कॉर्प लिमिटेड, 01 पारश्वनाथ
इंडस्ट्रीजल एरिया, रिलायंस वेवर हाउस के पास,
मोगरा कला, जोधपुर-342802 में मुद्रित,
सम्पादक : अंजय अस्थाना।

अंदर विशेष

- 4** अपनी बात
तानजियान की मुस्कान



- 7** कवर स्टोरी
दोस्ती इमितहान लेती है...



नियमित कालम

- 13** बोल हरि बोल
14 बात बेलगाम
36 अभिव्यक्ति
42 ग्रहों की चाल

- 30** भारत के युवा: टेस्ट क्रिकेट
का नया स्वर्णकाल



- 33** 'टरबन गैन' जे.आर. मेहता
34 विरासत-अक्षरधाम मंदिर : आकर्षक स्थापत्य
39 'War 2' की बॉक्स ऑफिस जंग...

- 10** राजनीति...
सत्ता, संपत्ति और संदेह

- 11** राजनीति...
बदलते समीकरणों के पीछे की हलचल

- 15** बिहार चुनाव...
पीके बिंगाड़ेगे किसका खेल

- 17** राजकाज...
सबक लेने के लिए हादसे का इंतजार आखिर क्यों..?

- 19** आपदा...
आहत पहाड़ का प्रतिशोध

- 24** दिल्ली...
विदेशी डिग्री, ग्लोबल करियर

- 26** परिणाम...
एआइ क्रांति में बराबरी की दावेदारी

- 37** आध्यात्म...
सकारात्मक व्यक्तित्व का जादू



- 40** यात्रा प्रयंग...
कैलाश यात्रा और आत्मा का साक्षात्कार

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक : वैष्णविक शक्ति संतुलन का सक्रिय खिलाड़ी बना भारत तानजियान की मुद्दाएँ

तानजियान में हुई शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक ऐसे समय हुई जब अमेरिका राष्ट्रपति ट्रंप दुनिया पर टैरिफ़ का दबाव बना रहे थे। लेकिन मोदी, पुतिन और शी जिनपिंग की साझा उपस्थिति ने एशियाई एकता और आत्मविश्वास का सशक्त संदेश दिया। यह सम्मेलन न केवल अमेरिकी दबाव की अनदेखी था, बल्कि बहुधुर्वीय वैश्विक व्यवस्था की ओर निर्णायिक कदम भी।



दिनेश रामायान
प्रधान समापदक



हितों पर खड़े हो सकते हैं।

अमेरिका के लिए यह स्थिति असहज है। ट्रंप को उम्मीद थी कि 50 प्रतिशत टैरिफ़ की धमकी देकर भारत को डराया जा सकता है, लेकिन भारत ने रूस से तेल खीरीदान बंद नहीं किया। उलटे चीन और रूस के साथ मंच साझा कर यह दिखा दिया कि वह दबाव में झुकने वाला नहीं है। अमेरिका की बेचैनी की वजह यह भी है कि भारत अब न केवल सबसे बड़ा बाजार है, बल्कि एक ऐसा देश भी है जिसकी ऊर्जा ज़रूरतें उसकी नीति को आकार देती है। भारत अब रूस से तेल खीरीदता रहा, तो अमेरिका की 'रूस को अलग-थलग करो' रणनीति अधीरी रह जाएगी।

तानजियान की बैठक ने साफ कर दिया कि दुनिया अब एकधुर्वीय नहीं रही। शीत युद्ध के बाद अमेरिका अकेला महाशक्ति बनकर उभरा था, लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। रूस और चीन पहले ही अमेरिकी प्रभुत्व को चुनौती दे रहे हैं और अब भारत का इस त्रिकोण में जुड़ा अमेरिकी नीति निर्माताओं के लिए सिरदर्द है।

हालांकि इस नई धुरी के भीतर कई अंतर्विरोध भी हैं। भारत और चीन के बीच सीमा विवाद आज भी तनाव का कारण है। रूस और चीन की निकटता कहीं भारत की स्वतंत्र विदेश नीति पर दबाव न बना दे, इसका खतरा बना रहता है। अमेरिका और पश्चिम से तकनीक व निवेश की निर्भरता भारत को पूरी तरह स्वतंत्र नहीं होने देती। परंतु इन जटिलताओं के बावजूद तानजियान का संदेश यही है कि भारत अब मूक दर्शक नहीं सक्रिय निर्णायिक बन चुका है।

आखिरकार इस पूरी बैठक का सबसे बड़ा प्रतीक वही साझा मुस्कान थी, जिसे दुनिया ने देखा। यह मुस्कान दरअसल एशियाई आत्मविश्वास का प्रतीक थी। यह संदेश था कि अमेरिका की धमकियों और टैरिफ़ युद्ध के बीच भी एशिया अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। भारत ने दिखा दिया कि वह दबाव से नहीं, अपनी ताकत और संतुलन से नीतियां तय करेगा।

तानजियान से जो तस्वीर उभरी है वह भविष्य की राजनीति का नक्शा है। अमेरिका अब अकेला निर्णायिक नहीं, बल्कि कई ध्रुवों में से एक है। रूस और चीन अपनी जगह मजबूत हैं। भारत उभरता हुआ निर्णायिक है। और इन तीनों का त्रिकोण मिलकर एक ऐसी शक्ति संरचना गढ़ सकता है जो ट्रंप के टैरिफ़ वार को केवल चुनौती ही नहीं देती, बल्कि बहुधुर्वीय दुनिया की नींव भी रखेगी। यही तानजियान की असली उपलब्धि है और यही आने वाले समय का सबसे बड़ा संदेश भी।

शं शाई सहयोग संगठन की बैठक 31 अगस्त और 1 सितंबर को चीन के तानजियान शहर में ऐसे समय आयोजित हुई, जब वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था उथल-पुथल से गुजर रही थी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप एक और चीन के खिलाफ व्यापारिक युद्ध छेड़े हुए हैं तो दूसरी ओर रूस से सस्ता तेल खीरीदाने पर भारत को भी दंडात्मक शुल्क के दबाव में ला रहे हैं। परंतु इस बैठक से जो तस्वीरें दुनिया के सामने आईं, उससे ट्रंप की रणनीति की चमक फैकी हुई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन एक साथ खड़े होकर मुस्कुरा रहे थे, सहज बातचीत कर रहे थे और आत्मविश्वास से भरे दिख रहे थे। ये दृश्य महज औपचारिकता नहीं थे, बल्कि शक्ति संतुलन के बदलते परिदृश्य का सजीव प्रमाण थे।

एससीओ की स्थापना दो दशक पहले क्षेत्रीय सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी सहयोग के लिए की गई थी, पर समय के साथ यह मंच सामूहिक एशियाई शक्ति के प्रतीक के रूप में उभरा है। इस बार की बैठक का महत्व इसलिए और बढ़ गया, क्योंकि यह ऐसे समय हुई जब दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था अमेरिका अपने टैरिफ़ हथियार से चीन और भारत दोनों को झुकाने की कोशिश कर रही थी। लेकिन तानजियान की मुस्कान इस बात का ऐलान कर रही थीं कि एशियाई देश अमेरिकी दबाव के आगे झुकने वाले नहीं हैं।

ट्रंप की रणनीति स्पष्ट है। वह टैरिफ़ लगाकर न केवल चीन की औद्योगिक ताकत को चोट पहुंचाना चाहते हैं, बल्कि भारत को भी रूस से ऊर्जा खीरीदाने पर सजा देने के बाहर अमेरिका-पश्चिमी खेमे का अनुयायी बनाना चाहते हैं। उनका सोचना है कि आर्थिक दबाव किसी भी देश को नीतिगत बदलाव करने पर मजबूर कर सकता है। पर भारत ने तानजियान में यह दिखा दिया कि उसकी विदेश नीति अब डर और दबाव से नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और संतुलन से तय होगी। मोदी का जिस सहजता से पुतिन और जिनपिंग के साथ संवाद हुआ, उससे यह संदेश दिया जाना चाहिए कि भारत अब अपनी विदेश नीति का निर्माता बना रहा है।

कि भारत न केवल अमेरिका का विकल्प खोज सकता है बल्कि रूस और चीन जैसे देशों के साथ भी बराबरी के स्तर पर खड़ा हो सकता है।

भारत की विदेश चाहें तो अमेरिका की दंडात्मक नीतियों का मिलकर सामना कर सकते हैं। यह चुनौती थी ट्रंप की उस नीति को, जो हर देश को अलग-थलग कर अपने हित में मोड़ना चाहती है। और यह संकेत भी था कि भविष्य में एक नया शक्ति त्रिकोण बन सकता है, जिसमें भारत, चीन और रूस अमेरिका के वर्चस्व को सीधी चुनौती देंगे।

भारत की भूमिका इस पूरे परिदृश्य में सबसे अहम है। चीन और भारत के बीच सीमा विवाद अब भी तनाव का कारण है। रूस और अमेरिका के बीच शीतयुद्ध जैसी तनाती जारी है, लेकिन भारत ने इन सबके बीच संतुलन साधने की क्षमता दिखाई है। भारत नाटो का हिस्सा नहीं है, पर विश्चम से संवाद बनाए रखता है। रूस से तेल और हथियार खीरीदता है, लेकिन अमेरिका से भी तकनीक और निवेश लेता है। चीन से प्रतिस्पर्धी भी करता है, पर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सहयोग का रास्ता भी खुला रखता है। यही संतुलन भारत को नई शक्ति राजनीति का केंद्र बना देता है।

रूस और चीन का मोदी के साथ सहज व्यवहार भी केवल मित्रता का भाव नहीं था, बल्कि एक रणनीतिक अनिवार्यता थी। रूस जानता है कि भारत उसका सबसे बड़ा हथियार और ऊर्जा बाजार है, और पुतिन भारत को खोकर चीन पर पूरी तरह निर्भर नहीं रहना चाहते। चीन जानता है कि एशिया में अमेरिकी 'इंडो-पैसिफिक' रणनीति का संतुलन भारत के बिना संभव नहीं है। इसलिए तानजियान की मित्रता का दृश्य सोची-समझी रणनीति था, जिसने यह संदेश दिया कि तीनों देश साझा

अमेरिकी टैरिफ नीतियों की आंधी के बीच एशियाई देशों की साझा रणनीति

आर्थिक दबावों के बीच सहयोग का सूत्र

तानजियान में सम्पन्न शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की 25वीं शिखर बैठक ऐसे समय हुई है जब अमेरिका की टैरिफ नीतियां वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गहरा दबाव बना रही हैं। इस पृष्ठभूमि में एशियाई देशों का एकजुट होकर साझा रणनीति तलाशना विशेष महत्व रखता है। भारत के लिए यह सम्मेलन केवल कूटनीतिक औपचारिकता भर नहीं था, बल्कि पड़ोसी देशों से रिश्तों में नई ऊर्जा भरने और आर्थिक-सुरक्षा हितों को साधने का अवसर भी है। बैठक में आतंकवाद के विरुद्ध साझा संकल्प, ऊर्जा सहयोग, कनेक्टिविटी परियोजनाओं और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे विविध क्षेत्रों पर सहमति बनी। मोदी की 'सुरक्षा, कनेक्टिविटी और अवसर' वाली रूपरेखा भारत की प्राथमिकताओं को स्पष्ट करती है। यदि इन पहलों को ठोस योजनाओं में बदला गया तो भारत की क्षेत्रीय स्थिति और वैश्विक संतुलनकारी भूमिका दोनों मजबूत होंगी।



राजस्थान टुडे न्यूज डेस्क

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की 25वीं शिखर बैठक हाल ही में चीन के तानजियान में सम्पन्न हुई। यह सम्मेलन ऐसे समय हुआ है जब अमेरिका अपनी टैरिफ नीति से वैश्विक व्यापारिक संतुलन को चुनौती दे रहा है। एशियाई देशों का इस परिस्थिति में एकजुट होना न केवल सामयिक है, बल्कि भू-राजनीतिक समीकरणों को नई दिशा देने वाला भी है।

बैठक का उद्देश्य सदस्य देशों को साझा सुरक्षा, ऊर्जा सहयोग और आर्थिक साझेदारी के एक मजबूत ढांचे से जोड़ना रहा। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने बहुपक्षवाद का समर्थन करते हुए "ग्लोबल गवर्नेंस इनिशिएटिव" का खाका पेश किया। उन्होंने ऊर्जा सहयोग मंच के विस्तार और एससीओ विकास बैंक की स्थापना का प्रस्ताव दिया। इस पहल के साथ उन्होंने अमेरिकी प्रभुत्व से दूरी बनाने और एक नए वैश्विक संतुलन की ओर बढ़ने का आह्वान किया।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भी एससीओ को "वास्तविक बहुपक्षवाद" का मंच करार दिया। उन्होंने डॉलर पर निर्भरता घटाकर आपसी मुद्राओं में व्यापार बढ़ाने का आह्वान किया। यह कदम एशियाई देशों को पश्चिमी दबावों से अपेक्षाकृत स्वतंत्र बनाने में सहायता हो सकता है।

सुरक्षा, कनेक्टिविटी और अवसर

- भारत के लिए यह सम्मेलन विशेष महत्व रखता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में सुरक्षा, कनेक्टिविटी और अवसर, इन तीन स्तंभों को भारत की प्राथमिकता बताया। उन्होंने साफ संकेत दिया कि भारत सहयोग की राजनीति चाहता है, किसी भी तरह की निर्भरता की नहीं। यह यात्रा विशेष भी रही, क्योंकि सात वर्षों बाद भारत और चीन के शीर्ष नेतृत्व ने आमने-सामने मुलाकात कर संबंध सुधारने की इच्छा जताई।
- भारत और रूस के बीच भी गहन बातचीत हुई। उर्वरक, अंतरिक्ष, सुरक्षा और संस्कृति जैसे विषयों पर सहयोग को और मजबूती देने की सहमति बनी। मोदी ने रणनीतिक स्तर पर भारत-रूस संबंधों को "विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त साझेदारी" करार दिया। यह संदेश अमेरिका सहित पश्चिमी जगत को साफ इशारा है कि भारत अपनी कृतनीति को बहुपक्षीय और संतुलनकारी बनाए रखेगा।
- सुरक्षा के मोर्चे पर भी बैठक भारत के लिए लाभकारी रही। एससीओ सदस्यों ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए हालिया आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की और आतंकवाद के खिलाफ साझा प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। भारत लंबे समय से यह मुद्दा उठाता रहा है कि आतंकवाद किसी एक देश या क्षेत्र का संकट नहीं, बल्कि वैश्विक चुनौती है। इस पर सर्वसम्मति से सहमति भारत की रणनीति को मजबूत बनाती है।

एआइ में सहयोग बढ़ाने पर सहमति

- बैठक की एक और खासियत तकनीकी सहयोग रही। सदस्य देशों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के क्षेत्र में साझेदारी को गहराने पर सहमति जतायी। भारत ने इस सहयोग की रूपरेखा में समान अवसर सुनिश्चित करने पर बल दिया। यह कदम भविष्य की डिजिटल प्रतिस्पर्धा में भारत और पड़ोसी देशों के लिए बराबरी का अवसर उपलब्ध करा सकता है।
- पाकिस्तान के साथ हालांकि रिश्तों में कोई नई पहल देखने को नहीं मिली। प्रधानमंत्री मोदी और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ ने एक-दूसरे से दूरी बनाए रखी। यह संकेत है कि संबंध सुधारने की दिशा में अभी लंबा रास्ता तय करना बाकी है।
- सही मायने में तानजियान एससीओ सम्मेलन भारत के लिए एक बहुपक्षीय मंच का अवसर है। अमेरिका के बढ़ते दबावों के बीच यदि भारत अपने पड़ोसियों के साथ आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को ठोस परियोजनाओं में ढालने में सफल होता है, तो यह न केवल उसकी रणनीतिक स्थिति को मजबूत करेगा, बल्कि वैश्विक राजनीति में भी संतुलनकारी भूमिका निभाने का मार्ग प्रशस्त करेगा।
- स्थान – तानजियान, चीन
- तिथि – 31 अगस्त–1 सितंबर 2025
- भागीदारी – चीन, भारत, रूस, पाकिस्तान, मध्य एशियाई देश, ईरान आदि
- मुख्य विषय – सुरक्षा, आतंकवाद-रोधी रणनीति, ऊर्जा सहयोग, क्षेत्रीय कनेक्टिविटी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता
- भारत की भूमिका – मोदी ने "सुरक्षा, कनेक्टिविटी और अवसर" को प्राथमिकता बताया
- सुरक्षा पहलू – पहलगाम हमले की कड़ी निंदा, आतंकवाद के विरुद्ध साझा संकल्प
- नवीनता – एआइ सहयोग का प्रस्ताव, एससीओ विकास बैंक की अवधारणा



राजस्थान SI भर्ती घोटाला अदालत ने बचाया भरोसा, राजनीति ने तोड़ा विश्वास

राजस्थान हाईकोर्ट द्वारा 28 अगस्त को एसआई भर्ती परीक्षा 2021 को निरस्त करना सिर्फ एक न्यायिक निर्णय नहीं, बल्कि प्रदेश की राजनीति, प्रशासन और नैतिकता की असलियत उजागर करने वाला ऐतिहासिक आदेश है। कोर्ट ने माना कि परीक्षा में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी हुई और लोक सेवा आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष संजय क्षोत्रिय, मौजूदा सदस्य मंजू शर्मा और संगीता आर्य की भूमिका की जांच कराने का निर्देश दिया। इस घटनाक्रम ने कांग्रेस और भाजपा दोनों की राजनीतिक दोहरेपन की पोल खोल दी—कांग्रेस ने अपने शासन में दोषियों को बचाया और भाजपा ने सत्ता में आने के बाद उन्हीं चेहरों को संरक्षण दिया। हाईकोर्ट ने साफ किया कि दोषियों को छोड़ने से व्यवस्था की विश्वसनीयता खत्म होगी।



राजस्थान टुडे न्यूज डेस्क

राजस्थान हाईकोर्ट के न्यायाधीश समीक्षा जैन का 28 अगस्त का आदेश केवल एक परीक्षा निरस्त करने का निर्णय नहीं था, बल्कि यह पूरे प्रशासनिक और राजनीतिक तंत्र पर कराया तमाचा था। न्यायालय ने साफ कहा कि एसआई भर्ती परीक्षा 2021 में गड़बड़ी इतनी व्यापक थी कि इसे वैध मानना न्याय के साथ खिलवाड़ होगा। न्यायपालिका ने उस उम्मीद को जिन्हा किया है, जो बेरोजगार युवाओं ने लंबे संघर्ष के बाद लगभग खो दी थी।

859 पदों के लिए आयोजित इस परीक्षा में हजारों अभ्यर्थियों ने मेहनत और सपनों की कीमत चुकाई थी। लेकिन परीक्षा के पेपरलीक और धोधली ने युवाओं का भरोसा तोड़ा। अदालत का यह निर्णय उन्हें आश्वस्त करता है कि न्याय देर से सही, पर मिलेगा जरूर।

राजनीति का दोहरा चेहरा

यह मामला भाजपा और कांग्रेस, दोनों दलों की सियासी चालबाजियों को नंगा करता है। जब यह परीक्षा कांग्रेस शासन में हुई, तब भाजपा विषय में थी और उसने बड़े जोर-शोर से परीक्षा निरस्त करने की मांग की। उस समय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इसे उत्करा दिया और आरोपियों को बचाने में लगे रहे।

लेकिन सत्ता बदलने के बाद भाजपा ने भी वही रुख अखिलयार किया जो कांग्रेस ने लिया था। भाजपा सरकार ने कोर्ट में पूरी ताकत झोकी कि परीक्षा निरस्त न हो। सबान उठता है कि आखिर क्यों? जबाब साफ है—दोनों पार्टियां अपने-अपने नियुक्त लोगों को बचाने और भ्रष्ट तंत्र को संरक्षित करने में बराबर की दोषी हैं।

जनता ने यह दोहरेपन साफ-साफ देख लिया है। परीक्षा में गड़बड़ी के लिए जिम्मेदार लोग सत्ता की रंग बदलती राजनीति की छत्रछाया में सुरक्षित रहे।

आयोग की भूमिका और संजय क्षोत्रिय का संरक्षण

■ राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC) जैसी सर्वेधानिक संस्था पर भरोसा होना चाहिए था, लेकिन यही संस्था भ्रष्टाचार का अहु बन गई। परीक्षा के दौरान संजय क्षोत्रिय अध्यक्ष थे, जिनकी नियुक्ति कांग्रेस शासन में हुई। पहले कांग्रेस ने उन्हें बचाया और फिर भाजपा ने।

■ हैरानी की बात यह है कि क्षोत्रिय आराम से सेवानिवृत्त हो गए और नौ महीने बाद भी भाजपा सरकार ने उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। जब तक कोर्ट ने सख्त टिप्पणी नहीं की, तब तक सरकार मौन साथे रही। यह सबाल भाजपा पर भी भारी है कि “भ्रष्टाचार विरोधी” छवि का दम भरने वाली पार्टी ने क्षेत्रिय को संरक्षण कर्यों दिया?

जेल में कटारा और रायका, पर बाकी मुक्त क्यों?

परीक्षा घोटाले में सदस्य बाबूलाल कटारा और रामूराम रायका जेल में बंद हैं। लेकिन बाकी आरोपित सदस्य आज भी पदों पर जमे हुए हैं। क्या यह न्याय है कि कुछ को बलि का बकरा बनाया जाए और बाकी सत्ता के रिश्तों के कारण बचते रहें? हाईकोर्ट की टिप्पणी ने इस दोहरे रवैये को उजागर कर दिया है।

कुमार विश्वास व नैतिकता का सवाल

■ इस प्रकरण का सबसे संवेदनशील और चर्चित पहलू है—कुमार विश्वास का नाम अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा। लोक सेवा आयोग की मौजूदा सदस्य मंजू शर्मा, जो हाईकोर्ट की टिप्पणी के दायरे में आई है, कुमार विश्वास की पत्नी हैं।

■ कुमार विश्वास रामायण पर प्रवचन देते हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम राम का उदाहरण देकर जनता को नैतिकता और मर्यादा का पाठ पढ़ाते हैं। सबाल यह है कि जब उनकी पत्नी खुद गड़बड़ी के आरोप में घिरी है, तब क्या वह नैतिकता का वही पाठ घर में लागू करेंगे? क्या वह सार्वजनिक रूप से पत्नी को इस्तीफा देने के लिए कहेंगे?

संगीता आर्य व अफसरशाही का गठजोड़

■ दूसरी ओर, आयोग की सदस्य संगीता आर्य का नाम भी हाईकोर्ट ने लिया है। वह पूर्व मुख्य सचिव निरंजन आर्य की पत्नी है। निरंजन आर्य गहलोत सरकार के सबसे भरोसेमंद अफसर रहे। उनकी कार्यशैली पर पहले भी सबाल उठते रहे। संगीता आर्य की नियुक्ति में भी यही राजनीतिक संरक्षण साफ दिखता है।

■ ऐसे में उनसे किसी नैतिक त्याग की उम्मीद करना बेमानी है। लेकिन जनता अब यह सब देख और समझ रही है कि अफसरशाही और राजनीति किस तरह से हाथ में हाथ डालकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है।

युवाओं का आँकड़ा और टूटा भरोसा

■ इस परीक्षा घोटाले से सबसे ज्यादा चोट उन युवाओं को ली गई है जिन्होंने अपने भविष्य की आस में वर्षों तैयारी की थी। राजस्थान जैसे राज्य में बेरोजगारी पहले से बड़ी समस्या है। जब परीक्षा जैसी प्रक्रिया भी धांधली से दूषित हो, तब युवाओं का भरोसा व्यवस्था से टूटना स्वाभाविक है।

■ हजारों उम्मीदवार मानसिक तनाव, आर्थिक नुकसान और सामाजिक उपहास का शिकार हुए। उनके परिजनों ने उम्मीदें पाली थीं कि मेहनत रंग लाएँगी। लेकिन सत्ता की मिलीभगत ने सब कुछ छीन लिया। यह मानवीय पीड़ा किसी भी सरकार के लिए चेतावनी है कि यदि भरोसा खो गया, तो सिर्फ सत्ता ही नहीं, पूरी व्यवस्था अस्थिर हो जाएगी।

नैतिकता बनाम राजनीति

■ यह प्रकरण हमें सिखाता है कि राजनीति और नैतिकता का रिश्ता आज भी कमज़ोर है। कांग्रेस और भाजपा दोनों ने सत्ता की सुविधा के अनुसार रुख बदला। आयोग के सदस्य नैतिकता से इस्तीफा देने की बजाय पद पर टिके रहने का रास्ता चुनेंगे। और बड़े नामों से जुड़े रिश्ते समाज के सामने आदर्श के बजाय सदेह खड़ा करेंगे। लेकिन सबाल यह है कि क्या हम सिर्फ अदालतों पर ही भरोसा करते रहेंगे? क्या राजनीतिक दल और समाज खुद नैतिकता की कसौटी पर खरे उतरने की कोशिश करेंगे?

असली परीक्षा अभी बाकी है

■ राजस्थान हाईकोर्ट का यह आदेश जनता की जीत और व्यवस्था के लिए आईना है। लेकिन असली परीक्षा अभी बाकी है। क्या सरकार दोषियों पर ठोक कार्रवाई करेगी या फिर राजनीतिक समीकरणों के चलते मामला फिर दबा दिया जाएगा?

■ युवाओं की पीड़ा, न्यायपालिका की सख्ती और जनता की निगाहें अब सरकार पर टिकी हैं। यह सिर्फ एसआई भर्ती परीक्षा का सबाल नहीं, बल्कि पूरे प्रशासनिक तंत्र की विश्वसनीयता का प्रश्न है। अगर दोषियों को नहीं सजा मिली, तो आने वाली पीड़ियाँ मान लेंगी कि इस व्यवस्था में मेहनत का कोई मूल्य नहीं है और भ्रष्टाचार ही सफलता की कुंजी है।

नया अवसर : अमेरिका के टैरिफ टेएट के बाद भारत के कदीब आया चीन

दोस्ती इच्छितान लेती है...



राजेश कर्सरा
वरिष्ठ पत्रकार एवं
राजनीति विश्लेषक

राष्ट्रपति पद की दूसरी पारी में दुनिया पर धाक जमाने की डोनाल्ड ट्रंप की जिद अमेरिका पर ही भारी पड़ रही है। अपने सभी बड़े फैसलों पर देश के अंदर ही आलोचना का शिकार बनने वाले ट्रंप भारत पर दबाव बनाने के सारे हथकण्डे अपना चुके हैं। लेकिन न तो वे भारत को झुका पाए और न ही उसे तोड़ पाए। उल्टे भारत की बढ़ती राजनीतिक, अर्थिक और सामरिक ताकत को भाँप नहीं पाए। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत का सबसे मजबूत दोस्त रूस उसके साथ और सशक्त भरोसे के साथ डटकर खड़ा हो गया तो मौके का फायदा उठाकर चीन भी दोनों का साझेदार बनने के लिए साथ आ गया। तीनों देशों की जुगलबंदी किस तरह से दुनिया में असर दिखाएगी, इसका अंदाजा अमेरिका और राष्ट्रपति ट्रंप को होने लग गया है। ताजा हाल तो यह है कि ट्रंप के भारत विरोधी फैसले के खिलाफ अमेरिका में भी शोर मचने लगा है। अमेरिकन राष्ट्रपति की विदेश नीति पर सवाल खड़े होने लगे हैं। साथ ही भारत पर जबरदस्ती टैरिफ थोपना और पाकिस्तान के साथ रिश्तों को बेहतर बनाने को वहां सबसे बड़ी गलती मान रहे हैं।



बार-बार मुहं की खाकर भी नहीं संभल रहे ट्रंप

भारत को लेकर बीते कई समय से आक्रमक रूख रखने वाले राष्ट्रपति ट्रंप ने बार-बार भारत को संकट में डालने का काम किया। इसकी शुरूआत उन्होंने अप्रैल में पहलगाम में हुए अंतकी हमले के बाद की। भारत और पाकिस्तान के बीच शुरू हुए तनाव को कम करने की बजाय उन्होंने आग के भड़कने का इंतजार किया। उन्होंने आंतकवादी हमले की तो आलोचना की, पर खुले तौर पर पाकिस्तान को जिम्मेदार ठहराने से बचते रहे। परदे के पीछे से पाकिस्तान को सहयोग भी देते रहे। यह सोचकर की भारत उसकी मदद के बिना कुछ नहीं कर पाएगा। लेकिन भारत ने पाकिस्तान पर कड़ी पार्बद्धियां लगाने और ऑपरेशन सिंदूर को जिस तरह से अंजाम दिया, उसने अमेरिका को हिलाकर रख दिया। भारत ने छश्श रूप से पाकिस्तान का सहयोग कर रखे अमेरिका, चीन और तुर्किए को कड़ा और करारा जवाब दिया। इसके बाद पाकिस्तान ने महज 48 घंटे में सरेंडर कर सीजफायर की गुहार लगाई तो ट्रंप ने इस मौके को लपकते हुए भारत को फिर घेरने का काम किया। उन्होंने भारत और पाकिस्तान के द्विपक्षीय मुद्दे पर खुलेआम हस्तक्षेप किया। दोनों देशों से पहले खुद ने सोशल मीडिया पोस्ट से सीजफायर का ऐलान कर दिया। ट्रैड और टैरिफ का टेरर दिखाकर भारत

पर दबाव बनाने की कोशिश की। भारत में राजनीतिक भूचाल लाने और भ्रम फैलाने जैसा महायाप किया। ट्रंप को लगा कि भारत में इस तरह की चिंगारी को लगाकर वे बड़ी आग का फैला देंगे। लेकिन भारत और यहां की सरकार ने फिर ट्रंप की चाल को नाकाम किया। शांत रहकर और प्रभावी तरीके से हर नकारात्मक संदेश का अपने अंदाज में जवाब दिया।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्पष्ट किया कि भारत को हल्के में आकूना भूल होगी। भारत ने राजनीतिक और कूटनीतिक दूरदर्शिता का परिचय देकर विपरीत हालात को काबू में कर लिया। ट्रंप ने बार-बार मिल रही शिकस्त को बदाशत नहीं किया और भारत पर 50 फीसदी टैरिफ का बोझ लाद दिया। इतना ही नहीं, पाकिस्तान को अपनी गोद में बैठाकर भारत को अप्रत्यक्ष चुनौती देने का बेजा काम किया। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध विराम करने में नाकाम रहे अमेरिकन राष्ट्रपति ने भारत पर अपनी खीझ उतारी। टैरिफ लगाने के पीछे भी रूस से तेल की खरीद का कारण बताया। हालांकि ट्रंप के इस झूठ का खुलासा भी कुछ दिनों में हो गया और सारा सच समझे आ गया। रूस पर कोई बस नहीं चलने पर भारत को निशाने पर लेने का कुत्सित प्रयास किया गया।

रूस-चीन से रिश्तों को और बेहतर बनाने में जुटा भारत

भारत पर लगातार कूटनीतिक प्रहार करके अमेरिका ने खुद ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली। बार-बार भारत की रणनीति को समझने में नाकाम रहे ट्रंप ये तक नहीं भाँप पाए कि भारत उनकी सोच, समझ और योजना से कहां आगे पहुंच गया है। इस समय अमेरिका अपने ही बुने गए जाल में फँस चुका है। उसने कल्पना तक नहीं की होगी कि भारत इतनी जल्दी सारे विकल्प खोलकर सामने रख देगा। रूस के साथ चीन का भी साथ उसको मिल जाएगा। इन परिस्थितियों में यदि ट्रंप अपना रूख बदलने की भी सोचते हैं तो भी उनको और अमेरिका को काफी नुकसान हो चुका है। दुनिया के सामने एक्सप्रोज हो गया कि ट्रंप ने भारत के साथ क्या-क्या किया। वहां भारत भी अमेरिका के असली रंग पहचान गया।

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिकन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को अपना अच्छा दोस्त माना। दोनों की दोस्ती के बारे में विश्वभर में चर्चाएं चलीं। इसके बावजूद ट्रंप ने जो किया वह अविश्वसनीय है। जिसे उसने अपना दास्त कहा, उसके साथ इस तरह का व्यवहार कैसे किया, ये सवाल तो जरूर पूछे जाएं? ट्रंप के ऐसे फैसलों से अमेरिका को लेकर भारत पूर्णतया सतर्क हो गया। साथ ही रूस और चीन से अपने अंतर्णालों को और बेहतर करने की दिशा में रोडमैप बनाने का काम भी शुरू कर दिया। इसका असर भी दिखने लगा है। तभी तो अमेरिकी अर्थसास्त्री जेफरी सैक्सन ने ट्रंप प्रश्नाशन के फैसले की खुलास कर आलोचना की। उन्होंने ट्रंप के भारत पर लगाए गए 50 फीसदी के फैसले को राजनीतिक और कूटनीतिक मूर्खतापूर्ण कदम बताया। वहां, वरिष्ठ अमेरिकी कांग्रेस सदस्य ग्रेगरी मीक्स ने कहा कि भारत और अमेरिका के बीच बेहतर संबंध बनने में दो दशक लगे, लेकिन ट्रंप के फैसले से इस रिश्ते पर असर पड़ेगा। भारत पर लगाए टैरिफ पर रिपब्लिकन नेताओं ने भी चिंता जाहिर की। रिपब्लिकन नेता निक्की हेली ने इसको गलत और चिंतापूर्ण बताया। हेली ने भारत और अमेरिका के बीच साझेदारी में दरार को वारिंगटन की ओर से बड़ी भूल करार दिया।



अमेरिका के सारे तर्क बेमानी, खुल गई पोल

ट्रंप प्रशासन ने भारत पर एक्स्ट्रा टैरिफ लगाने के पीछे अजीबोगरीब तर्क दिए। अमेरिका ने बताया कि भारत, रूस से तेल खरीद रहा है, जिसकी वजह से भारत अप्रत्यक्ष तौर पर यूक्रेन युद्ध में उसकी मदद कर रहा है। इसके जवाब में भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने स्पष्ट कहा कि अमेरिका का यह फैसला समझ से परे है, क्योंकि भारत की तुलना में चीन, रूस से ज्यादा कच्चा तेल खरीदता है। ऐसे में अमेरिका, चीन के रूस से तेल खरीदने पर कार्रवाई कर्यों नहीं कर रहा है, जबकि पहले अमेरिका ने भारत को रूस से तेल खरीदने के लिए कहा था, ताकि वैशिवक तेल की कीमतें कम रहें। इसी तरह से अमेरिका का पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जॉन बोल्टन ने भी कहा कि रूसी तेल की खरीदारी के लिए भारत को जिम्मेदार ठहराना और उस पर 25 फीसदी के टैरिफ को 50 फीसदी तक बढ़ाना ट्रंप की एक गलती है। उन्होंने अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसा काम किया। उन्हें ध्यान रखना होगा कि यह कोई ऐसा फैसला नहीं, जिसे अमेरिकी कांग्रेस या जनता ने व्यापक रूप से समर्थन दिया हो।

भारत-रूस और चीन बदल रहे दुनिया का समीकरण

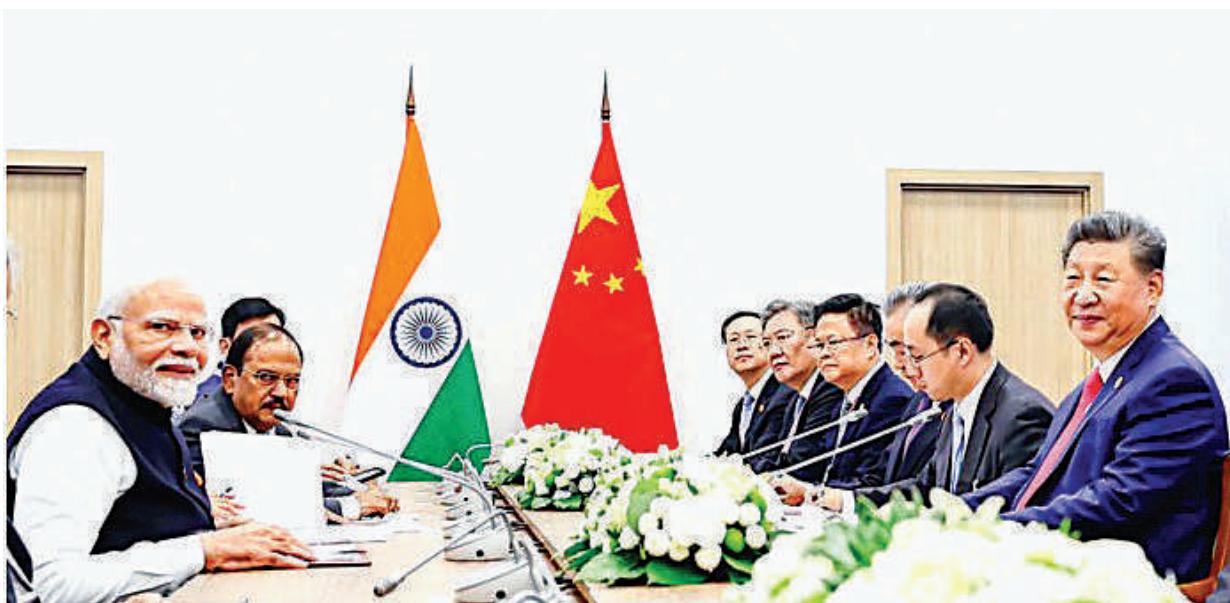
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बनी व्यवस्था में अमेरिका और सोवियत संघ शक्ति के दो बड़े केंद्र थे। 1990 के बाद विघ्नन होने से रूस इस दौड़ से बाहर हो गया। इसके बाद संयुक्त राज्य अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा शक्तिशाली देश बन गया। वर्ष 2000 के बाद उदारावाद और वैश्वीकरण की सीढ़ी पर सवार भारत की अर्थव्यवस्था ने आर्थिक चमत्कार किए। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के कार्यकाल में 8 फीसदी की विकास दर ने भारत की इकोनॉमी की तस्वीर बदली। आज भारत दुनिया की सप्लाई चेन का अहम हिस्सा है। चार ट्रिलियन डॉलर के साथ दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था है और तीसरे पायदान तक पहुंचने के करीब है।
- इधर, चीन ने ढाई दशक में आश्चर्यजनक आर्थिक तरक्की हासिल की। 2001 में डब्ल्यूटीओ में शामिल होने के बाद वैशिवक व्यापार में हिस्सेदारी बढ़ाई। ग्लोबल एक्सपोर्ट में उसकी हिस्सेदारी करीब 15 फीसदी हो गई। बुनियादी ढांचे और औद्योगिक रूप में उसने भारी निवेश कर वैशिवक आपूर्ति शृंखला का केंद्र बना गया। तकनीकी उन्नति, विकास, सेमीकंडक्टर और एआइ के क्षेत्र में चीन के किए गए नवाचारों ने उसको दुनिया में अग्रणी बना दिया। करीब 19 ट्रिलियन डॉलर के आर्थिक ढांचे के साथ वह अमेरिका के बाद दूसरे नम्बर पर आ गया। जल्द उसे पछाड़ने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

ब्रिक्स और एससीओ संगठनों ने दी अमेरिका को चुनौती



अमेरिका से अलग ब्रिक्स और एससीओ जैसे संगठनों में मजबूत साझेदार बनकर भारत, चीन और रूस ने गैर-डॉलर व्यापार को बढ़ावा दिया और अमेरिकी वित्तीय प्रभुत्व को चुनौती दी। विश्व बैंक की मानें तो ब्रिक्स देश वैशिवक जीडीपी का 26 प्रतिशत हिस्सा रखते हैं, जो जी-7 के 44 प्रतिशत से कम है। लेकिन यह डेटा तेजी से बढ़ रहा है। भारत और चीन रूस का 80 फीसदी से अधिक कच्चा तेल खरीदते हैं। चीन के साथ सीमा विवाद और प्रतिस्पर्धा के बावजूद भारत रणनीतिक और कूटनीतिक स्वायत्तता बनाकर रखता है। यानी भारत न तो अमेरिकी खेमे में पूरी तरह से शामिल है और न ही चीन-रूस के खेमे में। ब्रिक्स और एससीओ के फैलते दायरे से पश्चिमी दबदबे का संतुलन बिगड़ गया है। ट्रंप का असली डर यही है कि यदि भारत और चीन जैसे देश रूस के साथ मिलकर वैशिवक संस्थाओं, व्यापार और फाइनेंस में अमेरिका को दरकिनार करने लगे तो उनकी पकड़ कमज़ोर पड़ जाएगी। भारत, चीन और रूस के बीच कूटनीतिक और रणनीतिक गतिविधियां तेजी से बदल रही हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सात साल बाद चीन यात्रा पर जा रहे हैं, तो पुतिन भी लम्बे समय बाद भारत आ रहे हैं। भारत अपनी विदेश और आर्थिक नीति में पहले से कहीं ज्यादा निर्भीक और आत्मनिर्भार बन रहा है और अमेरिका की यही सबसे बड़ी चिंता है।

भारत के चीन के साथ संबंधों में आने लगी नरमी



अमेरिका के टैरिफ ने भारत के रणनीतिक दृष्टिकोण को बदल दिया है। इससे जहां भारत के अमेरिका के साथ संबंधों में कड़वाहट आने लगी है, वहां चीन से संबंधों में सुधार हो रहा है। हाल में चीनी विदेश मंत्री वांग यी की भारत यात्रा ने इसकी सकारात्मक शुरुआत की। वे भारत की तीन दिवसीय यात्रा पर आए। यहां विदेश मंत्री एवं जयशंकर, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के साथ सीमा मुद्रों पर विशेष प्रतिनिधियों की नए दौर की वार्ता की तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी मिले। चीनी विदेश मंत्री ने भारत पर लगाए गए 50 फीसदी टैक्स को अमेरिका का मनमाना रखेया करार दिया। टैरिफ के इस्तेमाल को अन्य देशों को दबाने के हथियार के रूप में इस्तेमाल करने पर अमेरिका की निंदा की। भारत में चीन के राजदूत शू फेंहोंग ने कहा कि धमकाने वाले को एक इंच भी दो, वह एक मील ले लेगा। गलवान घाटी में मई 2020 हुए सैन्य गतिरोध के बाद दोनों

देशों में तनाव बढ़ा था। इसके बाद अक्टूबर-2024 में डेमोक्रॉट और देपसांग में अंतिम संघर्ष बिंदुओं से सैनिकों की वापसी के लिए हुए समझौते के बाद गतिरोध कम होना शुरू हुआ जो तेजी से आगे बढ़ा। भारत ने हाल ही चीनी नागरिकों को पर्यटक वीजा देना शुरू किया, जो यात्रा और आदान-प्रदान को बहाल करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम रहा। चीन ने भी पांच वर्षों में पहली बार भारतीय नागरिकों के लिए कैलाश मानसरोवर यात्रा खोलकर संबंधों को बेहतर करने का काम किया। उत्तराखण्ड में लिपुलेख, हिमाचल प्रदेश में शिपकी ला और सिक्किम में नाथू ला दर्दे से भी सीमा व्यापार बहाल करने के प्रयास जारी हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान दोनों देशों के बीच निलंबित हुई हवाई सेवाएं सितम्बर से शुरू होने को है। सरकार ने भारतीय एयरलाइंस को इसके लिए तैयार रहने को कहा है। चीन ने भारत को यूरिया निर्यात पर प्रतिबंधों में भी छील दी।

अपने ही बुने जाल में फंस गए ट्रंप

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने देश को कर्ज के जाल से बाहर निकालने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपना रहे हैं। उन्होंने दुनिया भर के देशों पर जमकर टैरिफ लगाया। लेकिन इसका उल्टा असर होने लगा। इस साल अमेरिका में 446 बड़ी कम्पनियां दिवालिया हो चुकीं हैं। यह 2020 में कोरोना काल के आंकड़े से 12 फीसदी ज्यादा है। केवल जुलाई में 71 बड़ी कम्पनियां दिवालिया हुईं। ट्रंप ने विदेशी सामान पर अप्रैल में 10 प्रतिशत टैरिफ लगाया था। इसके बाद अमेरिका में दिवालिया होने वाली कम्पनियों की संख्या में तेजी आई। साल 2025 की पहली छमाही में 371 बड़ी अमेरिकी कम्पनियां दिवालिया हुईं। जून में 63 कम्पनियों ने बैंकरप्सी के लिए ऑवेदन किया। इस साल दिवालिया होने वाली कम्पनियों में 1990 और 2000 के दशक

के कई पॉपुलर ब्रांड्स शामिल हैं। ट्रंप के फैसलों की सबसे ज्यादा मार स्पॉलकैप कम्पनियों पर पड़ी। 2024 के अंत में नुकसान में चल रही रसेल 2000 कम्पनियों की संख्या बढ़कर 43 फीसदी पहुंच गई जो 2020 के बाद सबसे ज्यादा है। 2008 के संकट के समय यह आंकड़ा 41 फीसदी था। कई बार के बदलाव के बावजूद अमेरिका में टैरिफ अभी बहुत ज्यादा है। अमेरिका का इफेक्टिव टैरिफ 17.3 फीसदी है जो 1935 के बाद सबसे ज्यादा है। इस साल इंडस्ट्रियल सेक्टर की 70 कम्पनियां दिवालिया हुईं, जबकि कन्ज्यूमर डिस्क्रेशनरी सेक्टर की 61 कम्पनियां पर ताले लग गए। हेल्थकेयर सेक्टर की 32, कन्ज्यूमर स्टैपलस की 22, आईटी की 21, फाइनेंशियल की 13, रियल एस्टेट की 11, कम्यूनिकेशन सर्विसेज के 11, मटीरियल्स की 7, यूटिलिटीज तथा एनर्जी सेक्टर की चार कम्पनियां बंद हो गईं।



महाशक्ति पर बेरोजगारी और महंगाई का बढ़ा खतरा

टैरिफ से देश में महंगाई और बेरोजगारी बढ़ने का भी खतरा है। जुलाई में 11 फीसदी छोटी कम्पनियों ने कहा कि उनकी बिक्री बहुत खराब रही है। यह अमेरिका में बेरोजगारी का अहम संकेत है। अमेरिका में छोटी कम्पनियां 6.23 करोड़ लोगों, यानी 45.9 फीसदी लोगों को रोजगार मिला है। अमेरिका में 20 से 24 साल के युवाओं की बेरोजगारी पिछले तीन महीने में औसतन 8.1 फीसदी रही, जो चार साल में सबसे ज्यादा है। यह 2008 के स्तर पर है। लागत कम करने के लिए कम्पनियां एआइ का सहारा ले रही हैं और एटी लेवल पर जॉब कटौती कर रही हैं। महंगाई भी सिर उठाने लगी है। पीपीआई महंगाई में 0.9 फीसदी तेजी आई है जो 2022 के बाद सबसे ज्यादा है। कोर सीपीआई महंगाई भी 3 फीसदी के ऊपर चली गई है। इससे फेडरल रिजर्व के लिए ब्याज दरों में कटौती करना मुश्किल हो गया है।

लोकतंत्र की मजबूती के लिए नेताओं का आर्थिक रूप से पारदर्शी होना जरूरी

सत्ता, संपत्ति और संदेह

आपराधिक पृष्ठभूमि वाले नेताओं पर निगरानी की पहल स्वागतयोग्य है, लेकिन लोकतंत्र की असली कसौटी यह होगी कि जनता अपने प्रतिनिधियों से सिफ़र स्वच्छ छवि ही नहीं, बल्कि इमानदार संपत्ति विवरण भी पाए। अपने प्रभाव के चलते नेता अक्सर अपनी सम्पत्ति के असली विवरण को गोल कर जाते हैं।



राकेश गांधी
विरिष्ट पत्रकार



भा रीतीय लोकतंत्र का मूल्यांकन केवल संविधान संशोधनों या न्यायालय के आदेशों से नहीं, बल्कि उस भरोसे से होता है जो जनता और उसके प्रतिनिधियों के बीच कायम रहता है। 130वां संविधान संशोधन की गहमागहमी के बीच एक बार फिर यह मुद्दा अर्थिक महत्वपूर्ण लगता है कि क्या केवल आपराधिक मामलों पर रोक ही पर्याप्त है? या फिर अब वह समय आ गया है जब नेताओं की संपत्ति और उनके हलफनामों की सच्चाई को भी लोकतात्रिक विमर्श के केंद्र में लाया जाए।

यह सुखद है कि न्यायपालिका और संसद आपराधिक पृष्ठभूमि वाले जनप्रतिनिधियों को लेकर सजग हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल अपराधमुक्त होना ही एक नेता की योग्यता का पैमाना होना चाहिए? लोकतंत्र की जड़ें तभी मजबूत होंगी जब उसके प्रतिनिधि आर्थिक रूप से भी पारदर्शी हों। ऐसा अक्सर अब तक इसलिए नहीं हो पा रहा है, क्योंकि वे अपने प्रभाव का भरपूर उपयोग करते हैं। जनता चाहकर भी ऐसे सवाल नहीं उठा पाती। ऐसे में संसद व न्यायपालिका ही जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि वो जनता की भावना के अनुरूप इस मामले में पहल करे। देश में कई उदाहरण हैं जहां नेताओं ने पहली बार चुनाव लड़ते समय अपनी संपत्ति लाखों में बताई और कुछ वर्षों में वही संपत्ति करोड़ों में पहुंच गई। सवाल यह नहीं कि संपत्ति बढ़ी क्यों, सवाल यह है कि यह बृद्धि किस आधार पर और किस वैध आय से हुई। ऐसा उनके लिए आसमान से क्या बरस गया?

- जब तक कानून में यह प्रावधान नहीं होगा कि झूठा संपत्ति विवरण देने वाले नेताओं की संपत्ति जब्त हो सकती है, तब तक इस प्रवृत्ति पर रोक नहीं लगेगी। एक आम नागरिक से आग टैक्स चोरी के नाम पर संपत्ति कुर्क की जा सकती है, तो फिर नेताओं पर यही कठोरता क्यों न दिखाई जाए?
- कई देशों में राजनेताओं की आय-व्यय की सार्वजनिक जांच होती है और गलत विवरण देने पर तकाल कार्रवाई की जाती है। भारत जैसे बड़े लोकतंत्र में जहां राजनीति केवल शासन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक अवसर का भी बड़ा ज़रिया बन गई है, वहां यह और भी आवश्यक हो जाता है।
- विडंबना यह है कि जिन नेताओं ने अपने कागजों में मामूली संपत्ति दिखाई होती है, वही जमीन पर राजाओं जैसे ठाट-बाट से जीवन जीते हैं। आलीशान बंगले, महंगी गडियां, विदेश यात्राएं और चुनावी रैलियों पर बेहिसाब खर्च। ये सब उस असमानता को उजागर करते हैं जो कागज और हकीकत के बीच पसरी हुई है। जनता यह सवाल पूछने का हक रखती है कि आखिर वह पैसा आता कहां से है? अगर जवाब नहीं मिलता तो यह लोकतंत्र के प्रति अविश्वास को और गहरा करता है।

चुनाव आयोग के समक्ष दायर किए जाने वाले हलफनामे नेता की इमानदारी की पहली सीढ़ी माने जाते हैं। लेकिन अक्सर यही दस्तावेज सत्य और असत्य के बीच झूलते हुए दिखते हैं। कई मामलों में नेताओं ने संपत्ति का सही ब्यौरा छिपाया, कम करके बताया या फिर ऐसे स्रोत बताए जिनकी जांच तक कभी नहीं हुई। अगर कोई जनप्रतिनिधि अपने हलफनामे में 10 लाख की संपत्ति लिखता है और अगले ही कार्यकाल में यह कई करोड़ हो जाती है, तो इस पर सवाल उठाना स्वाभाविक है। लोकतंत्र की आत्मा यह कहती है कि ऐसे मामलों में केवल चुनाव आयोग को नहीं, बल्कि स्वतंत्र जांच एजेंसियों को भी अधिकार होना चाहिए कि वे इसकी तह तक जाएं।

- लोकतंत्र की सफलता केवल बहुमत के आंकड़ों से नहीं मापी जा सकती। उसकी असली परीक्षा यह है कि जनता यह महसूस करे कि उसका प्रतिनिधि सचमुच उसकी आवाज़ है, न कि किसी छिपे कारोबारी या आपराधिक मामलों पर अंकुश लगाने का एक बड़ा कदम है, लेकिन यह अधूरा है। अब आवश्यक है कि इसमें यह भी जोड़ा जाए कि झूठे हलफनामे और बेहिसाब संपत्ति पर कानूनी शिकंजा कसा जाए। जब लोकतंत्र जनता के विश्वास पर टिका हो तो नेताओं के लिए यह कोई विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्य होनी चाहिए कि वे अपनी संपत्ति और स्रोत पूरी सच्चाई के साथ प्रस्तुत करें। अन्यथा, संविधान चाहे जितने संशोधन कर ले, लोकतंत्र की आत्मा अधूरी ही रहेगी।
- आज जब जनता महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार से जूझ रही है, तब नेताओं का अव्याख्येय वैभव केवल आक्रोश ही पैदा करता है। इसलिए समय आ गया है कि हम कहें, आपराधिकता के साथ-साथ आर्थिक अपारदर्शिता भी लोकतंत्र के लिए उतनी ही घातक है।

राजस्थान की सियासत: बदलते समीकरणों के पीछे की हलचल

सत्ता-संगठन की खींचतान में नए समीकरणों की आहट

राजस्थान की राजनीति इन दिनों गहन हलचल से गुजर रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के दिल्ली दौरों और वसुंधरा राजे की सक्रियता ने भाजपा के भीतर बदलाव की अटकलों को हवा दी है। उधर, उपराष्ट्रपति पद से जगदीप धनखड़ का इस्तीफा, संघ-भाजपा के बीच खींचतान और राष्ट्रीय अध्यक्ष पद को लेकर असमंजस ने हालात और पेचीदा बना दिए हैं। फिलहाल कोई बड़ा बदलाव तुरंत होता दिख नहीं रहा, लेकिन सियासी गलियारों में यह मान लिया गया है कि जब भी कुछ होगा, वह चौंकाने वाला ही होगा।



सुरेश व्यास वरिष्ठ पत्रकार
एवं राजनीतिक विश्लेषक

क हते हैं, राजनीति में कुछ भी निश्चित नहीं होता। जो दिखाई देता है, वह होता नहीं, और जो होता है, वह अक्सर दिखाई नहीं देता। यही हाल इन दिनों राजस्थान की राजनीति में नजर आ रहा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का दिल्ली जाना कई अटकलों को जन्म देता है, वहीं पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे की प्रधानमंत्री ने देंद्र मोदी से मुलाकात इन अटकलों को और हवा दे देती है। भले ही हकीकत में ऐसा कुछ न हो रहा हो, लेकिन क्यासों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा। इसमें दो राय नहीं कि राजस्थान की राजनीति, खासकर भाजपा के अन्दरखाने, भारी हलचल से गुजर रही है।

बात राजस्थान की राजनीति की ही नहीं है, दिल्ली में भी पिछले करीब एक सवा माह से यही हाल हैं। राजस्थान के जाए जन्में ख्यातनाम वकील जगदीप धनखड़ संसद के मानसून सत्र के पहले ही दिन उपराष्ट्रपति पद से अचानक इस्तीफा देकर राजनीतिक भूचाल ला देते हैं। इस्तीफे के एक माह बाद

भी उनका पता नहीं चलता कि वे हैं कहाँ? क्यों मौन हैं? क्यों सामने नहीं आ रहे? क्या प्रधानमंत्री मोदी से उनकी अदावत इतनी बढ़ गई है कि नया उपराष्ट्रपति चुने जाने तक धनखड़ उपराष्ट्रपति निवास से बाहर ही नहीं आ सकेंगे और न किसी से मिल सकेंगे व न किसी से बात कर सकेंगे? सूत्रों के अनुसार सिस्पि घर में योगा करके स्टाफ के साथ टेनिस खेलते रहेंगे।

इधर, मानसून सत्र में बिहार विधानसभा चुनाव से पहले चुनाव आयोग की ओर से करवाए जा रहे मतदाता सूचियों के विशेष सघन पुनरीक्षण (एसआईआर) के मुद्दे पर चर्चा की मांग को लेकर चल रहे हंगामे के बीच लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के पीएम मोदी पर बोट चोरी के आरोप से सरकार एक और दुविधा में घिरी नजर आती है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव को लेकर चल रही राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ (आरएसएस) से तनातीनी के कारण मोदी-शाह की जोड़ी पहले से ही तनाव में है। पहले तो मोदी आरएसएस की प्रशंसा लाल किले की प्राचीर से करके विवाद में घिरने से भी नहीं चूके और बात में उपराष्ट्रपति पद के लिए उन्हें एनडीए प्रत्याशी के रूप में आरएसएस से जुड़े रहे महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन को चुनना पड़ा। भाजपा अध्यक्ष के चुनाव की बात तो लगातार ठंडे बस्ते में डालनी ही पड़ रही है।



आलाकमान की ऐसी स्थितियों के बीच मुख्यमंत्री के दौरों और वसुंधरा की मोदी से मुलाकातों को राजस्थान में किसी बदलाव से जोड़ना समझ से परे नजर आता है। राजनीतिक विश्लेषक हालांकि मानते हैं कि मुख्यमंत्री के रूप में भजनलाल के कामकाज से मोदी-शाह संतुष्ट नहीं हैं। दिल्ली पहुंच रहा उनका फीडबैक भी कोई अच्छा नहीं है। न भजनलाल सरकार को कोई ऐसा काम दिख रहा है, जो उपलब्धि के रूप में गिनाया जा सके। फिर भी मुख्यमंत्री बदलने की बात फिलहाल तो नजर आ नहीं रही।

दिल्ली में राजस्थान से जुड़े एक नेता ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि राजस्थान में मुख्यमंत्री बने भजनलाल को डेढ़ साल से ज्यादा का वक्त हो गया है। यह वह समय है, जब पार्टियां अगले चुनाव की तैयारी में जुटने की कोशिश करती हैं। जाहिर है फिर मुख्यमंत्री और सरकार के कामकाज की समीक्षा भी होती है, लेकिन भजनलाल के मामले में तो यही कहा जा सकता है कि मुख्यमंत्री के पद के लिए उनके नाम की पर्ची किस्मत से खुली थी और ये किस्मत ही उन्हें अभी तक पद पर बनाए हुए हैं। दिल्ली में परिस्थितियां बदली हुई नहीं होती तो अभी राजस्थान समेत दो या तीन राज्यों के भाजपा मुख्यमंत्री बदल गए होते। अभी उपराष्ट्रपति चुनाव से पहले या यूं कहें कि बिहार चुनाव के नतीजे आने तक इस सम्बन्ध में कोई क्यास लगाना समीचीन प्रतीत नहीं होता।



वसुंधरा की सक्रियता के मायने

वसुंधरा की सक्रियता पर भाजपा के सूत्रों का कहना है कि ये कोई नई बात नहीं है। संसद सत्र के दौरान प्रधानमंत्री भले ही सदन में नहीं जाएं, लेकिन संसद भवन स्थित अपने दफ्तर में मौजूद रहते हैं। यह ऐसा बक्त छोता है, जब किसी से भी मुलाकात आसानी से हो सकती है। वसुंधरा भी लम्बे समय से पीएम से मिलना चाह रही थी, तो उन्हें मौका मिल गया। फिर मौजूदा सियासी हालात में इस मुलाकात के कोई न कोई राजनीतिक निहितार्थ हो सकते हैं, लेकिन वसुंधरा को राजस्थान की गद्दी सौंपना मोदी के लिए भी इतना आसान नहीं होगा। हाँ, संघ-भाजपा की तनाती में बीच के रास्ते में उन्हें भाजपा अध्यक्ष पद लाने का बीच वाला रास्ता जरूर निकल सकता है। सम्भवतः इस मुद्दे पर ही वसुंधरा से कोई बात हुई होगी। लेकिन मोदी के मन में क्या है, वह उनके अलावा कोई जान नहीं सकता।

बिना सिर- पैर की अटकलें

इन सूत्रों का कहना है कि भजनलाल के दिल्ली दौरों में भी सरकार के कामकाज, मंत्रिमंडल के विस्तार या पुर्णांठन व चुनाव से पहले माहौल बनाने के लिए राजनीतिक नियुक्तियों के मुद्दे पर जरूर बात हुई है। इसके अलावा कोई बात अटकलें ही हो सकती हैं और अटकलों के सिर पैर नहीं होते। सूत्रों के अनुसार गुजरात में विजय रूपानी को हटाकर भूपेंद्र पटेल को मुख्यमंत्री बनाने जैसा फैसला गुजरात में दोहराए जाने के साथ राजस्थान में भी लागू किया जा सकता है, लेकिन अभी हालात ऐसे फैसलों की अनुमति नहीं देते।

नेताओं की धड़कनें बढ़ी

फिलवक्त, इन अटकलों के बीच भाजपा के स्थानीय नेताओं की धड़कनें जरूर बढ़ी हुई हैं। कारण है मंत्रिमंडल का विस्तार या पुर्णांठन और राजनीतिक नियुक्तियां। धड़कनें उन मंत्रियों की भी बढ़ी हुई हैं, जिन्हें हटाने या जिनके विभाग बदलने की चर्चाएं हो रही हैं। इसके पीछे भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ का वह बयान भी है, जिसमें उन्होंने कहा था कि सत्ता संगठन से है। संगठन सत्ता बनाता है। भाजपा में कोई कुर्सी के लिए काम नहीं करता। उन्होंने साफ शब्दों में यह भी कह दिया था कि कुछ मंत्रियों को संगठन में भी लिया जा सकता है। कारण कि अभी तक राठौड़ प्रदेश कार्यकारिणी भी नहीं बना पाए हैं और ऐसे में मंत्रियों को संगठन में लेने का उनका बयान काफी कुछ इशारा करता है। यह अलग बात है कि ऐसा कब होता है।

जहाँ तक राजनीतिक नियुक्तियों और मंत्रिमंडल का सवाल है, दिल्ली के बदले हुए हालात ने कई लोगों के लिए आपदा में अवसर का मौका दे दिया है। माना जा रहा है कि जिस तरह अरुण चतुर्वेदी को राज्य वित्त आयोग का अध्यक्ष बनाया गया है, उसी तरह कई उन पुराने नेताओं की लॉटरी भी खुल सकती है, जिन्हें अब तक भजनलाल सरकार में पूरी तरब्जो नहीं मिली है। इसी तरह वसुंधरा राजे से समर्थक कई विधायक भी इस अवसर पर मंत्री पद हासिल करने का मंसूबा पाले हुए धूम रहे हैं। फिर दोहराना पड़ रहा है कि होगा क्या, यह निश्चित नहीं है, लेकिन जो होगा, वो चौंकाने वाला जरूर होगा।

तेज वर्सेज तेजः लाल हो एहे लालू के लाल



हरीश मालिक
लेखक और वरिष्ठ व्यंग्यकार

मानसून इस बार जल्दबाजी में हैं। अपना कोटा जल्द से जल्द पूरा करने पर मूसलाधार बरसने पर उतारू है। उधर संसद के मानसून सत्र में विपक्षी भी सवालों के नश्तर लेकर कमर कसे हुए हैं तो सरकार भी पूरी तरह से मुस्तैद और तैयार हैं। यह अलग बात है कि रणनीति बनाने के लिए इंडी अलायंस के दल एक जगह जुट नहीं पाए तो एकजुटता दिखाने के लिए ऑनलाइन बैठक करनी पड़ गई। कुछ भी कहिए इस बार दोनों ही मानसून जबरदस्त रहने वाले हैं...

ला लू के लाल कमाल कर रहे हैं। धोती फाड़ के रूमाल कर रहे हैं। लालू ने तो दिल पर पथर रखकर और अपने सुरक्षित भविष्य के लिए छोटे तेजस्वी से गठजोड़ कर लिया है। लेकिन बेचारी राबड़ी देवी का करे। उसके दोनों लाल एक-दूसरे को देख लाल हो रहे हैं। उसकी ममता दोनों के लिए हिलों मार रही है, लेकिन बीच में तेजप्रताप के लिव-इन रिलेशनशिप की कटार आ रही है। लालू को अपना चारा खाना तो बर्दाश्त है, लेकिन बेटे का कहीं और मुंह मारना भी रास नहीं आ रहा है! लालू को भरोसा है कि कुछ भी कर ले, बड़का तेजप्रताप जीत ना पाएगा, लेकिन वो 'वोट कटुआ' जरूर साबित हो सकता है। इसीलिए आरजेडी नेताओं की पतलून जरा ढीली हो रही है। इस बीच, भाजपाइयों की तो तेजप्रताप के एक्स हैंडल पर



गिर्ध-दृष्टि बनी हुई है। इधर महागठबंधन के खिलाफ कोई ट्रॉट किया तो उधर हर प्लेटफार्म पर वायरल हुआ!

युवराज की बार-बार की माफी काफी नहीं

एक जमाना था जब मतदाता पत्र से वोट डाले जाते थे। बड़ा सरल समय था। जीतने के लिए सिर्फ बैलेट बास को अपने कब्जे में करना होता था। बांग, लठैत यह बड़ी आसानी से कर भी लेते थे। बाद में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) आई, जो कांग्रेस को कतई नहीं भाई। क्योंकि कांग्रेस को लगता था कि कुछ राज्यों को छोड़ दें तो ज्यादातर में इवीएम भाजपा के ही वोट उगलती है। इस पर अंगुली ही नहीं, कांग्रेस ने अपना पूरा हाथ का चिह्न उठा दिया। लेकिन बात नहीं बनी। अब बिहार विधानसभा चुनाव से पहले बोट-चोरी का बम लाए हैं। इस शिघूफे पर चुनाव आयोग भड़क गया। शपथ-पत्र दो या देश से माफी मांगे। चचा जान बोले हैं कि एक ही बंदे पर बार-बार माफी का दबाव क्यों? यह अलग बात है कि बंदा पहले ही अलग-अलग केस में इतनी बार माफी मांग चुका है तो एक बार और मांग लेने पर उसका क्या बिगड़ेगा।

कर्म किए जा, फल की चिंता मत कर

कांग्रेस के लिए वोट-चोरी की मुद्दा बूमरँग साबित हो रहा है। दरअसल, वोट चोरी के इस शिघूफे की बीच एक खुलासा हुआ है कि सोनिया गांधी का वोट तो तब ही बन गया था, जब उन्हें भारतीय नारिकाता भी नहीं मिली थी। बोले तो फर्जी वोट की चोरी। लेकिन सरकार अपनी तो फर्जी वोट का बना लेना बड़ी बात नहीं है। उस सरकार के लिए तो बिल्कुल नहीं जो भारतीय नौसेना के युद्धपोत आईएनएस विराट का इस्तेमाल टैक्सी के रूप में कर सकती है। दिसम्बर 1987 के अखबारों की कतरने साक्षी हैं कि पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ससुराल वालों के साथ लक्ष्मीप छुट्टी मनाने के लिए गए थे। चौंकाने वाली बात तो यह भी है युवराज की छुट्टियों में खलल ना पड़े, इसीलिए तब वहां माहीलैंड से लक्ष्मीप तक आम लोगों की एंट्री तक को रोक दिया गया। तत्कालीन सरकार के ऐसे बड़े-बड़े कारनामों को आंकने के बाद ही क्या भाजपाइयों को फर्जी वोट जैसे अदने से आरोप लगाने चाहिए?

फैमिली प्लानिंग बनी फैमिली फार्मिंग

एक छोटी कहानी का लब्बोलुआब यह है कि दूसरों के लिए गहू खोदने वाला खुद उसी गहू में गिर जाता है। चीन चूलू होने के बावजूद उसी गहू में जा गिरा है। चीन में कभी आबादी को बोझ समझते हुए “वन चाइल्ड पॉलिसी” के तहत अतिरिक्त बच्चे पैदा करने पर भारी जुर्माना लगाया जाता था। इसके बाद पड़ासी भारत ने चीन को आबादी में पछाड़कर नंबर वन का ताज हासिल कर लिया। उधर चीन को बड़ों की बढ़ती फौज के कारण अपना थूका ही चाटना पड़ा। अब ज्यादा बच्चे होने पर चीन जुर्माना लगाने के बजाय माता-पिता को प्रोत्साहन दे रहा है। 2025 से बच्चे के जन्म पर 3,600 युआन सालाना (लगभग 44,000) की सख्तियां या भुगतान का प्रावधान है। बोले तो पहले जहां पर फैमिली प्लानिंग का जोर था, वहां अब फैमिली फार्मिंग पर फोकस हो गया है। बच्चे पैदा करो और पैसा पाओ।

चलते-चलते.. सवाल - पूर्व उपराष्ट्रपति धनबद्र साहब आजकल कहां हैं..?

जवाब - उन्हें तो ट्रूप भी ढूँढ रहे हैं। शायद उनकी ‘चुप रहने की कीमत’ पर मनचाही टैरिफ मिल जाए।

सक्षाटे, सनक और सिस्टम का संगम

को

टा की कोचिंग नगरी जहां कभी सपनों के टेके पर लाखों कमरे बिकते थे, अब खाली कमरों में गूंजते सन्नाटे पूछ रहे हैं, “बच्चों, गलती हमारी थी या सिस्टम की?” वहीं, रिंगस के स्कूल में ज्ञान की जगह धूंसे और सम्मान की जगह तमाचे बंटते दिखे। बांसवाड़ा में तो डॉक्टर कम, बिना डिग्री वाले ‘जादूदार’ ज्यादा निकले, जिन्हें देखकर भगवान भी असमंजस में होंगे कि इलाज हो रहा है या सीधे बुलावा भेजना पड़ेगा। उधर जयपुर में दिव्यांगता भी कागज पर दिव्य हो गई, असली संघर्ष करने वाले किनारे खड़े रह गए और फर्जी बैसाखियों पर लोग सरकारी नौकरी तक दौड़ गए। ये सब दृश्य मिलकर एक ही सवाल खड़ा करते हैं, हमारी शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यवस्था आखिर कब तक तमाशों के इस म्यूजियम में सजी रहेंगी? सिस्टम बदल रहा है या बस नए-नए कारनामों से हमें हंसाता-रुलाता रहेगा?

कोटा का कोचिंग.. सक्षाटा

क

भी जो शहर “आईआईटी-एम्स की फैक्ट्री” कहलाता था, वो आज हॉस्टलों के खाली कमरों में गूंजते सवारों से पूछ रहा है, “बच्चों, हमसे क्या भूल हुई?” बात ही कुछ ऐसी है। अब बच्चे ऑनलाइन पढ़ने लगे हैं, और माता-पिता भी समझदार हो गए...，“बेटा, कोटा भेजने से अच्छा है घर में ही दाल-रोटी खा के डॉक्टर-इंजिनियर बन जा। कम से कम किराया तो नहीं देना पड़ेगा।” हॉस्टल मालिक जो कभी 12 हजार रुपये लेकर “छोटा कमरा, बड़ी उमीदें” बेचते थे, अब 1500 रुपये में “कूलर फ्री, कैंसिलेशन फ्री” ऑफर दे रहे हैं। मेस में जहां पहले बच्चे लाइन में खड़े रहते थे, अब रोटियां खुद टेबल पर बैठती सोचती हैं, “आज कोई आएगा भी या नहीं?” और कोटा? वो अब भी अपने पुराने पोस्टरों के साए में बैठा है, उम्मीद करते हुए “शायद अगला सत्र मेरा हो!”



इलाज से ज्यादा इजाजत जरूरी है!

बा

था। जहां डॉक्टर नहीं, “डॉक्टरी का जज्बा” इलाज कर रहा था। बिना डिग्री, बिना पंजीकरण और बिना अनुमति के। कुछ सज्जन सेवा-भाव में इतने लीन थे कि गली-गली क्लीनिक खोल रखे थे। मरीज आते थे, इलाज होता था, और कई बार बीमारी की जगह भगवान सीधे बुला लेते थे। जैसे ही मेडिकल विभाग की नींद खुली, तो एक-एक कर “जादूगर डॉक्टर” धुएं की तरह उड़ गए! कुछ ने तो मौके पर गायब होने का ऐसा हुनर दिखाया कि हॉलीवुड भी शर्मिंदा हो जाए। जिनके पास स्टेथोस्कोप था, उनके पास डिग्री नहीं थी। जिनके पास दवा थी, उनकी पहचान पर भी शक था। सवाल ये नहीं कि इलाज हो रहा था, सवाल ये है कि इलाज किससे हो रहा था? शुक्र है चिकित्सा विभाग ने मुहिम चलाई, बरना अगला अस्पताल शायद नींबू-मिर्च टांग कर चलने लगता। अब देखना ये है कि अगली बार “डॉक्टर साहब” कौन से मोहल्ले में रहस्यमयी वापसी करते हैं!



रीं

गर्स के सबसे बड़े स्कूल में भामाशाह समारोह तो हुआ, लेकिन माहौल ऐसा बना कि लगता था ज्ञान का नहीं, कुश्ती का अखाड़ा सजा हो। बच्चों को सम्मानित करने की सूची पर बहस शुरू हुई और देखते-ही-देखते “विचार-विमर्श” ने “हाथापाई” का रूप ले लिया। गुरुजन अपने-अपने तर्क नहीं, एक-दूसरे की कॉलर पकड़ रहे थे। छात्र सम्मानित होते-होते खुद डर गए, ये सम्मान है या सजा? जिस समारोह में शिक्षा के उजाले की बात होनी थी, वहां तमाचे गूंज रहे थे। बाजार के लोग समझ नहीं पाए कि ये स्कूल है या कोई नया धारावाहिक “गुरु-गहर” ऑन एयर हो गया है। पुलिस आई तो स्कूल वीरान था। कुछ गुरुजन ऐसे गायब मिले जैसे परीक्षा में नकल पकड़े जाने पर स्ट्रॉबेरी क्लास छोड़ते हैं। शिक्षा मंत्रालय को चाहिए कि अगली बार स्कूलों में “गुस्सा प्रबंधन” भी पढ़ाया जाए, क्योंकि अब स्कूलों में ज्ञान कम, ग्लैडिएटर भावना ज्यादा दिखती है।



दिव्यांगता का फर्जी लाइसेंस

ज

यपुर में एसओजी ने ऐसा फर्जीवाड़ा पकड़ा है, जिसे सुनकर असली दिव्यांग भी की टेंशन..., बस एक फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्र बनवाइए और सरकारी सेवा में आराम फरमाइए। जांच में 24 ऐसे ‘काबिल’ लोग निकले, जिनकी दिव्यांगता सिर्फ कागज पर थी, चाल-दाल में तो मानो दौड़ प्रतियोगिता का अभ्यास चल रहा हो। एसएमएस मेडिकल कॉलेज, जयपुर के विशेषज्ञ डॉक्टरों ने इनकी ‘कागजी बैसाखियाँ’ तोड़ दीं, लेकिन असली दिव्यांगों का हक कौन लौटाएगा? अगर फर्जीवाड़े के लिए कोई ओलंपिक होता, तो ये खिलाड़ी स्वर्ण पदक लाते। इवेंट का नाम होता “पेपर बैसाखी स्प्रिंट”। असली संघर्ष करने वाले आज भी कतार में हैं, और ये लोग अब तक वेतन भोग रहे थे। यह दिव्यांगता नहीं, व्यवस्था की मजबूरी का सबसे बड़ा तमाशा है।



• बलवंत राज मेहता

तिकड़ी मुकाबले में किसके पाले में जाएगी जनता? पीके बिगाड़ेंगे किसका खेल

बिहार में विधानसभा चुनाव की घोषणा सितम्बर में होने की उम्मीद है और राजनीतिक सरगर्मी चरम पर है। भाजपा 'अब नहीं तो कभी नहीं' की रणनीति पर काम कर रही है तो नीतीश कुमार सुशासन और महिला वोट बैंक के भरोसे हैं। महागठबंधन बेरोजगारी, पलायन और कानून-व्यवस्था को मुद्दा बनाकर सड़कों पर है, जबकि प्रशांत किशोर की जनसुराज जाति-धर्म से ऊपर उठकर नई राजनीति का सपना दिखा रही है। सबल यही है कि बाढ़, अपराध और पलायन से जूझते बिहार की जनता किसे चुनती है— पुराना भरोसा, विपक्ष का वादा या फिर पीके का नया विकल्प?



राधा रमण
वरिष्ठ पत्रकार



बि हार में विधानसभा चुनाव की घोषणा सितम्बर में किसी समय होने की संभावना है। ज्यादा उम्मीद प्रधानमंत्री के बिहार दौरे के बाद की है। प्रधानमंत्री तकरीबन हर माह बिहार आते- जाते रहते हैं। जहां जाते हैं, करोड़ों की सौगत बांटते हैं, लोक लुभावन घोषणाएं करते हैं। इस बार भाजपा बिहार में सरकार बनाने पर आमदा दिखती है। उसके लिए 'अभी नहीं तो कभी नहीं' की स्थिति है। फिलहाल प्रदेश में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी है। उसके 80 विधायक हैं। भाजपा के लिए यह संख्या सर्वाधिक है। 243 सदस्यीय विधानसभा में बहुमत के लिए कम से कम 122 विधायक चाहिए। सबल यह कि वाकी के विधायक कहां से आएंगे? पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व में प्रवक्ता रहे डॉ विनोद शर्मा कहते हैं कि बिहार में इस बार एनडीए की लहर है। नीतीश कुमार की अगुवाई में सरकार ने समाज के हर तरफे के लोगों को राहत पहुंचाई है। किसानों को 120 यूनिट बिजली मुफ्त मिल रही है, अंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का मानदेव बढ़ा है। पत्रकारों, बुजुर्गों, विधायाओं और जेपी अंदोलन के मीसाबंदियों के पेंशन में दोगुनी से अधिक की बढ़ोतरी की गई है। सड़कें चक्राचक हैं और नौकरियों की बहार है। जनता को और क्या चाहिए?

■ इसमें दो राय नहीं कि बिहार की महिलाओं के सिर पर नीतीश का जादू सिर चढ़कर बोलता रहा है। यह वोट इस बार नीतीश के पक्ष में कितना जाएगा, यह चुनाव परिणाम के बाद पता चलेगा, क्योंकि बिहार के अधिकांश जिले बाढ़ की चेपट में हैं और करीब 17 लाख आबादी सड़कों और राहत केंद्रों में शरण लिए हुए हैं। इनमें सर्वाधिक संख्या महिलाओं और बच्चों की है। दूसरी तरफ राज्य में अपराधी पुलिस के रसूखों को खुलेआम चुनौती दे रहे हैं। विपक्ष इसे एनडीए का जंगलराज बता रहा है। महिलाएं इस अराजकता से भी पीड़ित हैं। ऐसे में महिला वोटरों में बिखराव हो जाए तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। राज्य में नीतीश की बिरादरी कुर्मी जाति का वोट करीब 6 प्रतिशत है, यह वोट भी अभी तक नीतीश के पक्ष में पड़ता रहा है। यही वजह है कि नीतीश पिछले 20 वर्षों से अधिक समय से बिहार की सत्ता पर काबिज हैं।

■ बिहार में महागठबंधन भी इस बार पूरा जोर लगाये हुए है। राज्य में महागठबंधन की वोटर अधिकार यात्रा निकाली जा रही है। इसकी शुरुआत 17 अगस्त से शेरशाह सूरी की धरती सासाराम से हो चुकी है। इसे जनता का अपार समर्थन मिल रहा है। यह यात्रा एक सितम्बर को पटना के गांधी मैदान में समाप्त होगी। इसमें महागठबंधन के सभी घटक दल शामिल हैं। बिहार के नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव के अलावा कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी भी शहर-शहर धूम रहे हैं। विपक्ष राज्य से पलायन, बेरोजगारी और कानून व्यवस्था का मुद्दा जोर-शोर से उठा रहा है। लोगों को नौकरी और डोमिसाइल नीति बनाने की बात कह रहा है। एसआईआर के खतरे के प्रति आगाह कर रहा है। सरकार बनने पर महिलाओं को ढाई हजार रुपये प्रतिमाह देने और सुशासन का ख्वाब दिखा रहा है।

■ इस बीच बिहार के माउन्टेन मैन दशरथ मांझी के परिजनों के लिए गयाजी के गहलोर गांव में पक्का घर बनवाकर राहुल गांधी ने अपनी जय-जयकार करा ली है। दशरथ के बेटे भागीरथ मांझी इसके लिए नीतीश कुमार से लेकर जीतनराम मांझी और भाजपा के कई बड़े नेताओं का चक्रकर लगाकर थक चुके थे। इससे आसपास के गांवों में भी राहुल के लिए हमदर्दी जगी है। देखने वाली बात होगी कि यह सहानुभूति वोट में कितनी तब्दील हो पाती है।

जनसुराज की गतिविधियां बढ़ी



बिहार की सियासत का तीसरा केंद्र बने प्रशांत किशोर (पीके) की पार्टी जनसुराज पर सबकी निगाहें टिकी हैं। एनडीए और महागठबंधन से समान दूरी बनानेवाले लोग आजकल पीके की तरफ खिंचे चले आ रहे हैं। कहना न होगा कि ऐसे लोगों की संख्या भी कम नहीं है। इनमें रिटायर्ड आईएस, आईपीएस की संख्या काफी है। इसके लिए प्रशांत किशोर बिहार के बाहर रहने वाले प्रवासियों के संपर्क में हैं। उधर, राज्य में जनसुराज की गतिविधियां लगातार जारी हैं। विधानसभा स्तर तक कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं। पीके ने पलायन के मुद्दे को ठीक से पकड़ा है। वह कहते हैं कि बिहार की बदहाली में यहां के नेताओं की बड़ी भूमिका है। जब तक झारखण्ड राज्य नहीं बना था, बिहार की बदहाली कम दिखती थी। अब सरेआम हो चुकी है। वह मतदाताओं से कहते हैं कि इस बार का मतदान अपने बच्चों का भविष्य

बनाने के लिए कीजिए। बिहार में रोजी-रोजगार की व्यवस्था के लिए कीजिए। प्रशांत अपनी सभाओं में नीतीश और लालू दोनों को बिहार की बदहाली के लिए बराबर का जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। कहते हैं कि पिछले 35 वर्षों से बिहार में इन्हीं दोनों का शासन रहा है। वह दोनों को नागनाथ और सांपनाथ बताते हैं। कहते हैं कि दोनों विषधर हैं, दोनों डंसते हैं। प्रशांत किशोर जाने-माने चुनावी रणनीतिकार रहे हैं। वर्ष 2014 के संसदीय चुनाव में नरेंद्र मोदी के चुनावी रणनीतिकार रहे थे। भाजपा को सत्ता में लाने का श्रेय उन्हें दिया जाता है। इससे उनकी लोकप्रियता और कमाई दोनों बढ़ी है। इस बार वह जनता दल (यूनाइटेड) और राष्ट्रीय जनता दल दोनों पर बराबर हमलावर हो रहे हैं। आश्चर्य यह कि प्रशांत किशोर पर जवाबी हमला जदयू और राजद कम बल्कि भाजपा ज्यादा कर रही है।

अर्श पर या फिर फर्श पर

- पिछले दिनों चार सीटों के हुए उपचुनाव में जनसुराज तीन सीटों पर दूसरे स्थान पर रही थी। उसे 10 प्रतिशत से ज्यादा वोट मिले थे। पीके बताते हैं कि भाजपा को दस प्रतिशत वोट पाने में 20 साल लगे थे। उपचुनाव के समय हमारी तैयारी प्रीमियर थी। तब भी इतने वोट मिले। वह कहते हैं कि 'विधानसभा चुनाव में जनसुराज या तो अर्श पर रहेगी या फर्श पर रहेगी। बीच की गुंजाइश काफी कम है। अगर लोगों ने जातिधर्म से हटकर मतदान किया तो हम अकेले अपने बूते पर सरकार बना सकते हैं।' लेकिन बिहार में जाति की राजनीति लंबे समय से जड़ जमाये हैं। वहां के लोग डॉक्टर और मास्टर भी अपनी जाति का ही खोजते हैं। ऐसे में प्रशांत की जनसुराज क्या गुल खिलाती है, यह समय बताएगा।

- रोहतास जिले के बगेयां गांव निवासी सामाजिक कार्यकर्ता सूर्यकेश्वर सिंह कहते हैं कि प्रशांत किशोर बिहार के केजरीवाल बनने की जुगत में हैं। वह चुनाव जीतें अथवा नहीं लेकिन दोनों मुख्य गठबंधनों (एनडीए और महागठबंधन) का खेल जरूर खारब करेंगे।

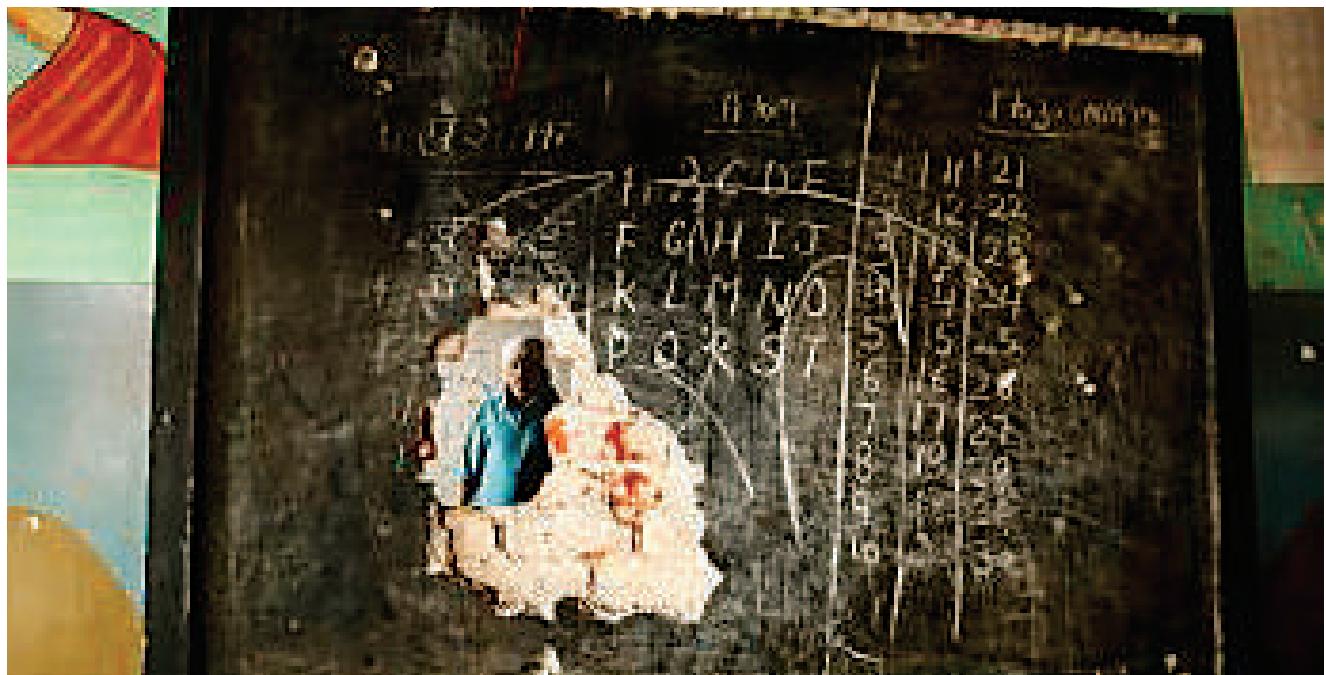
इस बीच, गंभीर अपराधों में 30 दिन के लिए जेल जाने पर प्रधानमंत्री अथवा मुख्यमंत्रियों को पद से हटाने संबंधी बिल को कैबिनेट की मंजूरी और संसद में पेश कर केंद्र सरकार ने बड़ा दाव चल दिया है। अगर यह बिल कानून बन जाता है तो इसका देशव्यापी असर पड़ेगा और बिहार भी इससे अछूता नहीं रहेगा। यही कारण है कि विषय इस बिल का पुरुजोर विरोध कर रहा है। विषय की यह आशंका निर्मूल नहीं है कि सरकार इसका इस्तेमाल विषय की सरकारों को बखास्त करने के लिए करेगी। बिहार में विषय के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार तेजस्वी यादव हैं। उन पर पहले से ही कई आपराधिक मुकदमें दर्ज हैं। ऐसे में यह सवाल मौजूद है कि अगर केंद्र सरकार का बिल संसद से पारित होकर कानून बन जाता है और महागठबंधन बिहार में चुनाव जीत भी जाता है तो उसकी सरकार कितनी टिकाऊ होगी। वैसे यह कानून बनाने के लिए संसद के दोनों सदनों में सरकार को दो तिहाई बहुमत की दरकार पड़ेगी जो सरकार के पास फिलहाल नहीं है।



सबक लेने के लिए हादसे का इंतजार आखिर क्यों..?



शिक्षा विभाग में बरसों तक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में काम कर चुके शिक्षाविद् और साहित्यकार डा. राजेन्द्र मोहन शर्मा कहते हैं कि यह मसला अपेक्षा से ज्यादा उपेक्षा का है। सबकुछ जानते हुए भी जिम्मेदार अधिकारी खामोश बने रहते हैं। इसका बड़ा कारण है प्रशासनिक उदासीनता, भ्रष्टाचार और प्राथमिकताओं का गलत चयन। अधिकारियों का मौन उनकी जवाबदेही की कमी को दर्शाता है और इसी के नतीजे के रूप में झालावाड़ जैसी घटनाएं सामने आती हैं।



क हा जाता है कि अकल बादाम खाने से नहीं, ठोकर खाने से आती है और हमारे सरकारी सिस्टम पर यह कहावत पूरी तरह से फिट बैठती है। जब तक कोई हादसा ना हो, कुछ लोगों की जान ना जाए, कोई बड़ा नुकसान ना हो, तब तक हमारा सिस्टम सबकुछ देखते हुए भी आंखें मूँदे रहता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है हमारी सरकारी इमारतें। नब्बे प्रतिशत सरकारी स्कूल, कॉलेज, अस्पताल या दफ्तर पहली नजर में ही इस बात का आभास दे देते हैं कि ये सरकारी हैं और इनका हाल तभी सुधर सकता है, जब यहां कोई हादसा हो जाए या फिर संयोग से कोई अफसर या नेता ऐसा आ जाए। जो बेहतर कार्यदशाओं में काम करना चाहता हो या निर्माण कार्य से उसके "हित" सीधे तौर पर जुड़े हों।

झालावाड़ के पिपलोदा स्कूल में पिछले दिनों जो हुआ, वह दुःखद तो था, लेकिन अप्रत्याशित नहीं। पूरे प्रदेश में ऐसा हादसा कहीं भी हो सकता था और आगे भी हो सकता है, क्योंकि ऐसे सरकारी भवन प्रदेश के हर गांव, तहसील और जिला मुख्यालय ही नहीं, राजधानी जयपुर में भी मौजूद हैं।

कुछ उदाहरण देखिए

- उदयपुर में 13 उप स्वास्थ्य केन्द्र बेहद जर्जर स्थिति में, वहीं 264 स्वास्थ्य केंद्र ऐसे हैं, जहां छतों से पानी टपक रहा है। दीवारों पर सीलन आ रही है।
- कोटा जिले के अरण्डखेड़ा आदर्श प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का भवन जर्जर हो चुका है। कमरों की दीवारों का प्लास्टर उखड़ चुका है।
- जयपुर के एसएमएस अस्पताल से तो अक्सर फॉल्स सीलिंग और प्लास्टर टूटकर गिरने की खबरें आती रहती हैं।
- अजमेर में राज्य बीमा एवं प्रावधारी पिधि विभाग की इमारत इतनी जर्जर हो चुकी है कि अब उसके हिस्से गिरने लगे हैं। हाल ही में हुई बारिश के दौरान मुख्य द्वार के ऊपर का छज्जा भरभरा कर गिर पड़ा, जिससे विभाग को मुख्य द्वार बंद करना पड़ा।
- चौमू में सरकारी स्कूल, पटवार भवन, पंचायत भवन कभी भी गिरने की स्थिति में आ चुके हैं।

ये सब तो बानगी भर हैं, जो झालावाड़ हादसे के बाद विभिन्न मीडिया रिपोर्ट में सामने आए हैं, लेकिन ऐसी इमारतों के बारे में जानने के लिए हमें किसी मीडिया रिपोर्ट की जरूरत नहीं है। प्रदेश के किसी भी हिस्से में चले जाइए, आपको कोई ना कोई बेहाल जर्जर सरकारी इमारत दिख ही जाएगी।

हादसे के बाद याद आई जर्जर सरकारी इमारतों की सूची

- झालावाड़ हादसे के बाद सरकारी स्तर पर ताबड़-तोड़ बैठकें हुईं और यह सामने आया कि प्रदेश में 2699 जर्जर सरकारी इमारतें चिन्हित की गई हैं, जिन पर अब बुलडोजर चलेगा। लेकिन, पीड़ितायक स्थिति यह है कि एक सूची महीनों से सरकार के सामान्य प्रशासन विभाग की वेबसाइट पर पढ़ी है। इस सूची में हर जिले के आवासीय और गैर आवासीय जर्जर सरकारी इमारतों की पूरी जानकारी है। इसमें यह भी बताया गया है कि इमारत जर्जर क्यों है, अभी किसी उपयोग में आ रही है या नहीं और इसका कोई उपयोग हो सकता है या इसे तोड़ना ही बेहतर है।
- इस सूची में ज्यादातर जर्जर इमारतें या तो स्कूलों की हैं या पंचायत भवन, कृषि भवन या अस्पतालों की हैं। यह सूची कई माह से सरकार के पास है, लेकिन कार्रवाई के नाम पर वही सरकारी ढर्ण हावी है कि जब कोई हादसा होगा या कोई घटना सामने आएगी, तब इस सूची पर जमी धूल झाड़ी जाएगी।

हर जिले में बड़ी संख्या में हैं जर्जर इमारतें... यह सूची बताती है कि हर जिले में बड़ी संख्या में जर्जर सरकारी इमारतें मौजूद हैं। जयपुर जिले की ही बात करें तो यहाँ 371 गैर आवासीय व 16 आवासीय सरकारी जर्जर भवन हैं। वहाँ प्रदेश के दो अन्य सबसे बड़े जिलों जोधपुर और कोटा की बात करें तो जोधपुर में 302 गैर आवासीय व 136 आवासीय तथा कोटा में 119 गैर आवासीय व 36 आवासीय जर्जर सरकारी भवन हैं। सबसे ज्यादा खराब हालात बाइमेर के हैं, जहाँ करीब 1200 गैर आवासीय और आवासीय जर्जर भवन हैं।

जानकर भी अनजान वयों

हर सरकारी भवन में प्रतिदिन में बड़ी संख्या में लोग आते हैं। सरकार के जनप्रतिनिधि और बड़े अधिकारियों का आवागमन भी रहता है। वे भवन के जर्जर हालात पर चिंता भी जाहिर करते हैं, लेकिन जब मरम्मत या नए निर्माण की बात आती है तो प्राथमिकताएं बदल जाती हैं। मरम्मत या नए निर्माण का पैसा तब तक नहीं मिलता, जब तक कोई हादसा ना हो जाए या संबंधित जनप्रतिनिधि या बड़े अधिकारी का 'हित' इससे ना जुड़ जाए। यही कारण है कि बरसों तक ये इमारतें जीर्ण-शीर्ण अवस्था में भी काम में ली जाती रहती हैं। शिक्षा विभाग में बरसों तक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में काम कर चुके शिक्षाविद् और साहित्यकार डा. राजेन्द्र मोहन शर्मा कहते हैं कि यह मसला अपेक्षा से ज्यादा उपेक्षा का है। सबकुछ जानते हुए भी जिम्मेदार अधिकारी खामोश बने रहते हैं। इसका बड़ा कारण है प्रशासनिक उदासीनता, भ्रष्टाचार और प्राथमिकताओं का गलत चयन। अधिकारियों का मौन उनकी जवाबदेही की कमी को दर्शाता है और इसी के नतीजे के रूप में झालावाड़ जैसी घटनाएं सामने आती हैं।



ख्या किया जाना चाहिए... यह बात सही है कि सरकार के पास करने के लिए और भी बहुत कुछ होता है। सरकार की प्राथमिकताएं बदलती रहती हैं, लेकिन सरकार को यह समझना चाहिए कि सिर्फ सचिवालय, मुख्यमंत्री कार्यालय या मंत्रियों और विभागों के मुख्यालय ही नहीं, बल्कि हर सरकारी इमारत अच्छी स्थिति में होनी चाहिए। बेहतर कार्यदशाएं कर्मचारियों को बेहतर काम करने के लिए प्रेरित करती हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है निजी कम्पनियों के चमत्कार ऑफिस, जो वहाँ काम करने वाले कर्मचारियों की उत्पादकता को बढ़ा देते हैं। इसीलिए हर विभाग के बजट में उससे जुड़े सरकारी भवनों के निर्माण और मरम्मत का पर्याप्त इंतजाम होना चाहिए।

■ स्कूल और कॉलेजों के मामले में दानदाताओं और भासाशाहों का सहयोग हमेशा से मिलता रहा है। हालात तो ये ही कि दानदाताओं के सहयोग से बने भवनों की मरम्मत तक समय पर नहीं हो पाती। स्कूलों, संस्था प्रधानों और अस्पताल अधीक्षकों को इसे लेकर पूरी सक्रियता से काम करना होगा। इस मामले में अब तो निजी कम्पनियां भी सहयोग करती हैं, क्योंकि कार्पोरेट सोशल रिस्पांसबोलिटी यानी सीएसआर एक्टिविटी के तहत उन्हें भी ऐसे कामों पर खर्च करना पड़ता है। सबसे बड़ी जिम्मेदारी जनप्रतिनिधियों की है। विधायकों और सांसदों के पास खुद का कोष होता है और वे दानदाताओं को भी प्रेरित कर सकते हैं। यदि हर जनप्रतिनिधि अपने क्षेत्र की सरकारी इमारतों की स्थिति को लेकर खुद सहयोग करें और सहयोग जुटाएं तो यह समस्या चुटकियों में खत्म हो सकती है।



सिर्फ बजट का प्रावधान काफी नहीं... इस पूरे मामले में एक बड़ा पहलू भ्रष्टाचार का है। सरकारी निर्माण या मरम्मत के काम में भ्रष्टाचार एक बहुत बड़ी समस्या है। राजेन्द्र मोहन शर्मा कहते हैं कि सरकारी निर्माण कार्यों का नियमित निरीक्षण और पैसे का सही उपयोग सुनिश्चित करना बड़ी चुनौती है। सरकार बजट का प्रावधान कर देती है, लेकिन यह पैसा सही ढंग से और समय पर काम नहीं आ पाता। निर्माण और मरम्मत में घटिया सामग्री का इस्तेमाल समस्या को कम करने के बजाए बड़ा देते हैं। ऐसे में निर्माण और मरम्मत में पूरी सावधानी और ईमानदारी रखी जाए, तभी समस्या का स्थाइ समाधान हो सकता है।

■ बहरहाल जर्जर सरकारी इमारतें एक ऐसा मुद्दा है, जिसके बारे में सिर्फ ईमानदार इच्छाशक्ति की जरूरत है। यदि जनप्रतिनिधि या जिम्मेदार अधिकारी समस्या को अनदेखा करने की प्रवृत्ति छोड़ दें। ये ऐसा मुद्दा ही नहीं है जो किसी हादसे का कारण बनें।

क्या विकास की अंधी दौड़ हिमालय को विलुप्ति की ओर ले जा रही है?

आहत पहाड़ का प्रतिशोध

धराली, उत्तरकाशी की त्रासदी ने एक बार फिर हिमालयी अस्थिरता की सच्चाई को उजागर कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणियां चेताती हैं कि यदि नीतियों और विकास मॉडल को तुरंत नहीं बदला गया तो हिमालय और उससे निकलने वाली जीवनदायिनी नदियों का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। क्लाउडबर्स्ट, भूस्खलन और ग्लोबल वार्मिंग ने मिलकर पहाड़ को आपदाओं का केंद्र बना दिया है। सवाल यह है कि क्या हम प्रकृति को समझने और उसके साथ तालमेल बैठाने के बजाय उसे चुनौती देकर खुद अपने भविष्य को संकट में नहीं डाल रहे?



रमेश शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

‘हिमालय के विनाश का सबसे बड़ा कारण जल विद्युत परियोजनाएं, चार लेन सड़कें, बनों का विनाश, बहुमंजिला इमारतें और अनियंत्रित पर्यटन है। पर्यावरण और पारिस्थितिकी की कीमत पर राजस्व नहीं कमाया जा सकता।’ यह बहुत ही सख्त टिप्पणी धराली, उत्तरकाशी की त्रासदी के ठीक एक सप्ताह पहले सुप्रीम कोर्ट ने 28 जुलाई 2025 को केन्द्र और हिमाचल प्रदेश सरकार के खिलाफ की और उनकी नीतियों को लेकर जमकर खिंचाई की।

सुप्रीम कोर्ट ने हालात की गंभीरता को उजागर करते हुए साफ शब्दों में चेतावनी दी कि यदि संपूर्ण नीति और व्यवहार नहीं बदले गए तो हिमालय विलुप्त हो जाएगा और हिमालयी राज्यों का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। सुप्रीम कोर्ट की यह तत्त्व टिप्पणी हिमालय क्षेत्र में तेजी से बढ़ते निर्माण और सड़कों पर हो रहे चौड़ीकरण को लेकर दायर जनहित याचिकाओं की सुनवाई के दौरान आई। हिमालय भारत ही नहीं, परीदक्षिण एशिया की जलवायी, नदियों और पारिस्थितिकी का आधार है। यहां की नाजुकता और

विविधता पर सुप्रीम अदालत की टिप्पणी जाहिर करती है कि इसके संरक्षण के लिए हमारी नीतिगत व्यवस्थाएं अनुकूल नहीं हैं। इसमें बहुत खोट है।

हिमालय से निकलने वाली नदियां करोड़ों लोगों की जीवन रेखा हैं। हिमालय का अस्तित्व संकट में पड़ने का अर्थ है— पानी की गंभीर किल्लत, जिससे भारत समेत कई देशों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। (हालांकि इस मसले पर सुनवाई जारी है, लेकिन यह टिप्पणी हिमाचल प्रदेश ही नहीं, संपूर्ण हिमालय क्षेत्र के लिए प्रासांगिक है।)

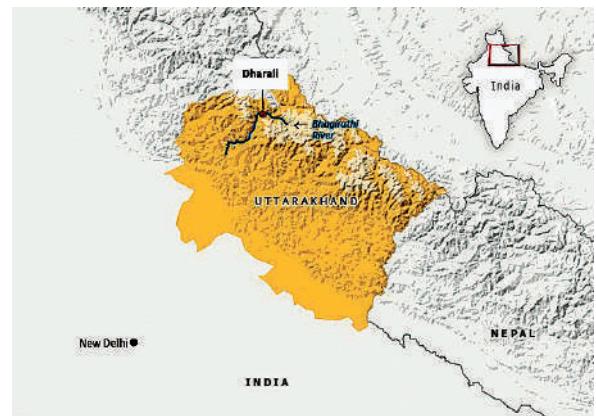
आपदा आंकड़ों की जुबानी

- उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर, तीनों जगह पिछले एक माह में बादल फटने की घटनाओं से आए दिन तबाही के भयानक मंजर दिखाइ दे रहे हैं। एक दशक (2013–2023) में इसरो और वाडिया इंस्टीट्यूट की रिपोर्टों के अनुसार, उत्तराखण्ड, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर में 2200 से अधिक भूस्खलन और 350 से अधिक क्लाउडबर्स्ट दर्ज हुए हैं। आईसीआईएमओडी (इंटरनेशनल सेंटर फार इंटीग्रेटेड माउटेन डेवलपमेन्ट) के अनुसार, हिमालय के ग्लेशियर औसतन 35 फीसदी तेजी से सिकुड़ रहे हैं और इसने पहाड़ की प्राकृतिक भू-रचना पर गहरा असर डाला है। (वर्ष 2024 और 2025 में तीनों राज्यों की भीषण आपदाओं को इसमें शामिल नहीं किया गया है)

- दो न्यायाधीशों की पीठ ने इस कथन के माध्यम से उस सच्चाई को उजागर किया है, जिसे दशकों से हमारी सरकारें, हमारी व्यवस्था, वैज्ञानिक, पर्यावरणविद्, और जिम्मेदार आमजन लगातार अनदेखा करते आए हैं। आपदाएं चेता रहीं हैं कि हिमालय भी इस अनदेखी को अब नहीं सहेगा। बादल फटने की बढ़ती घटनाएं बता रही हैं कि हिमालय की सेहत ठीक नहीं है। संपूर्ण हिमालय क्षेत्र बहुत ही संवेदनशील आपदाओं का केंद्र बना हुआ है।



तबाही के डरावने मंजर... उत्तरकाशी के धराली और किशतवाड़ के विशोटी गांव में तबाही के जो वीडियो डरावना मंजर दिखा रहे हैं। वे आज भी अब भी हर किसी के जेहन में चम्पा हैं। कई दिन गुजरने के बाद भी तबाही के जख्म हरे हैं। धराली त्रासदी में सैकड़ों घर, होटल और दुकानें बह गए, जबकि कई लोग मारे गए और हजारों प्रभावित हुए। अब तक पुनर्वास से जुड़े कार्य धीमी गति से चल रहे हैं। बादल फटने पर अथाह पानी किस तरह से पूरे वेग से सामने आने वाली हर चीज को तिनके की तरह बहा ले गया। तबाही दबे पांव आई और किसी को संभलने का मौका भी नहीं दिया। चंद सेंकड़ में सैकड़ों इमारतें, मकान, होटल आदि जमींदोज हो गए।



- 5 अगस्त को उत्तरकाशी के धराली में एक के बाद एक पांच जगह बादल फटने की घटनाओं के बाद हिमाचल प्रदेश के रामपुर, बुशाहर, लाहोल स्पीति, कुल्लू, जम्मू कश्मीर के किशतवाड़, कठुवा, पुंछ, पहलगाम की घटनाओं ने सोचने पर मजबूर कर दिया है।

बारिश का बदला पैटर्न

- हिमालय क्षेत्र में ग्लोबल वार्मिंग ने बारिश का पैटर्न बदल दिया है। कम समय में भीषण बारिश होने लगी है। भारत मौसम विज्ञान विभाग, वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी और इसरो के संयुक्त डेटा के अनुसार, हिमालयी क्षेत्र में वर्ष 2000 की तुलना में अब औसतन 1.3°C अधिक वार्षिक तापमान दर्ज किया गया है। यह बर्फ के पिघलने, जल स्रोतों के सूखने और असमय बारिश का कारण बन रहा है।
- ग्लोबल वार्मिंग के चलते हिमनद (ग्लेशियर) के टूटने से पहाड़ों की ऊंची चोटियों में हिमनद की झीलें बन रहीं हैं। तेज बारिश या बादल फटने से भयंकर तबाही हो रही है। यह भविष्य के लिए बहुत बड़ा खतरा बन रहीं है। यह टाइम बम की तरह हैं कभी भी फट सकती हैं। माना जाता है कि वर्ष 2013 में केदारनाथ का हादसा भी ऐसी की हिमनद झील के टूटने से हुआ था। धराली में भी 5 अगस्त को सैलाब आने के बाद हॉर्टिल (स्प्लिट्जरलैंड ऑफ इंडिया) में कृत्रिम झील बन गई है। यह आने वाले दिनों के लिए पूरे क्षेत्र में संकट पैदा करेगी। इसीलिए पर्यावरणविद् कभी भी पहाड़ों में बड़े बांध बनाने के पक्ष में नहीं रहे। आपदाओं की बढ़ती तीव्रता को देखते हुए इन पर पांचदी लगानी चाहिए। नदियों से रेत की खुदाई बंद कर बहाव क्षेत्र में पक्का निर्माण सख्ती से रोका जाना चाहिए, ताकि पानी के रास्ते बंद नहीं हों।
- सुप्रीम कोर्ट ने जैसी टिप्पणी की है कि पहाड़ी इलाकों के विकास मॉडल पर नए सिरे से विचार करना जरूरी है। संवेदनशील पहाड़ी क्षेत्रों में बसावट और पक्के निर्माण के लिए नीति निर्धारण के साथ व्यापक आपदा प्रबंधन रणनीति पर समन्वित रूप से कार्य करने की जरूरत है। पहाड़ अध्यात्म के केंद्र हैं, पर्यटन के नाम पर विलासिता के केंद्र नहीं बनने चाहिए। पर्यटन के लिए सख्त नियम बनाने और उन पर अपन रखना जरूरी है।



गायब होंगे ग्लेशियर?

जलवायु परिवर्तन (तापमान और मौसम के पैटर्न में लम्बे समय तक बदलाव) का दंश झेलते हुए संपूर्ण हिमालय क्षेत्र बहुत ही संवेदनशील बन गया है। संयुक्त राष्ट्र की 2023 की रिपोर्ट बताती है कि हिमालय के ग्लेशियर (हिमनद) जिस गति से पिछले रहे हैं, आगामी 25 वर्षों में दक्षिण एशिया के 75 फीसदी जलस्रोतों के सूखने का खतरा है। यानी विकसित भारत बनने का सपना साकार होने तक (लक्ष्य 2047) हिमालय क्या सिफे कहानियों में रह जाएगा? आईसीआईएमओडी की 2023 रिपोर्ट कहती है कि हिंदू-कुश हिमालयी क्षेत्र के दो-तिहाई ग्लेशियर यदि मौजूदा दर से पिछलते रहे, तो सदी के अंत तक गायब हो सकते हैं। हिमालयी अस्थिरता का सबसे बड़ा वैज्ञानिक प्रमाण यह है कि हिमाचल के कुल्लू, धर्मशाला, मंडी, मनाली जैसे खूबसूरत स्थान भूकंपीय क्षेत्र के लिहाज से जोन 3 में आते थे, ये अब जोन 4 और 5 में शिफ्ट हो गए, अर्थात् अति संवेदनशील हो गए।

आपदाओं की जड़ - मानवीय भूल

सवाल उठता है कि पहाड़ी क्षेत्र में तबाही के मंजर में पिछले एक दशक में इतनी तेजी क्यों आई? दरअसल तबाही पहाड़ी क्षेत्रों में इंसानी गतिविधियां बढ़ने का ही नतीजा है। बड़ी संख्या में पेड़ काटने, पर्यटन के नाम पर जंगलों का दोहन, पक्के निर्माण, नाजुक पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल विवेकपूर्ण तरीके से काम नहीं करना इसका बड़ा कारण है। यही टिप्पणी सुप्रीम कोर्ट के जजों ने भी की है।

बाढ़ के विकराल होने के पीछे मूल कारण उसके बहाव क्षेत्र में अवरोध पैदा करना है। नदियों के किनारे पक्के निर्माण कर दिए गए। जहां पानी बहना चाहिए वहां आवास या होटलें बना दी गईं। नदियों में रेत की निरंतर खुदाई, जमीन का कटाव, पहाड़ी क्षेत्र में प्लास्टिक का बढ़ता उपयोग, पहाड़ के नैसर्गिक बातावरण के साथ निरंतर छेड़छाड़, बेशुमार पावर प्रोजेक्ट और पहाड़ काट कर बनाई जा रही सुरोंगें इसे खोखला कर रही हैं। इसीलिए पूरे हिमालय क्षेत्र में एक के बाद एक हो रही क्लाउडबर्स्ट की घटनाएं हमारे सिस्टम के

साथ मानवीय भूलों पर कई सवाल खड़े कर रही हैं।

चंद सेकंड में पूरा गांव तिनके की तरह बह गया है तो समझ लें कि यह प्रकृति के प्रति हमारी उदासीनता का आत्मघाती नतीजा है। बेशक बादलों का फटना प्राकृतिक घटनाएं हैं, इसे हम नियंत्रित नहीं कर सकते, लेकिन उसके रास्ते पर अवरोध खड़े कर हम कैसे बच सकते हैं? सैलानियों को सहूलियतों के नाम पर हमने पहाड़ों से खिलवाड़ किया है। प्रकृति कोई भेदभाव नहीं करती, वह अपना हिसाब बराबर करती है। कुदरत से अत्याचार हुआ है तो वह बख्शा भी नहीं जाएगा।

पहाड़ की तबाही सिर्फ पहाड़ तक की सीमित नहीं रहती। इससे मैदान भी अछूते नहीं रह सकते। जब भी बाढ़ आती है, उसके मार्ग में आने वाले हर गांव, कस्बे, नगर, महानगर भी चपेट में आते हैं। यही कारण है कि है कि पहाड़ में आई बाढ़ का असर हरिद्वार प्रयागराज, दिल्ली, बनारस पटना जैसे महानगरों में दिखाई दिया और लाखों—करोंडों लोग इससे प्रभावित हुए।

धराशायी विकास मॉडल... आज जोशीमठ (ज्योर्टिमठ) राष्ट्रीय स्तर पर चेतावनी का प्रतीक बना हुआ है कि जब प्रकृति की नाजुकता को नजरअंदाज कर निर्माण होते हैं, तो पूरा शहर जर्मीदोज हो सकता है। जोशीमठ पांच दशक से संवेदनशील जौन है। 1970 के दशक से ही यहां जमीन धंस रही है, मकानों में दरों आ रही है। इसे भूस्खलन भी कहा जाता है। हाल के वर्षों में यह और भी बदरत हो गई है। वर्ष 1976 में गढ़वाल के तत्कालीन कमिशनर एमसी मिश्रा की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने रिपोर्ट दी थी कि जोशीमठ को बचाने के लिए फैरन कदम उठाने चाहिए। निर्माण पर रोक लगाकर हरियाली बढ़ाई जानी चाहिए। पांच दशक बाद भी स्थिति सुधारने की बजाय बिगड़ती ही चली गई। वर्ष 2023 में भूस्खलन से अनेक मकान टूटे, जिससे आबादी को विस्थापन के लिए मजबूर होना पड़ा। इससे पहले 2021 में चमोली में ग्लेशियर टूटा, थोली गंगा में अचानक बाढ़ आ गई। तपोवन विष्णु गार्डन पन बिजली परियोजना में काम कर रहे अनेक श्रमिकों की जान चली गई। जोशीमठ शहर अतिसंवेदनशील भूकंपीय क्षेत्र—5 में आता है। आपदाएं रोकने के लिए पर्यावरण संरक्षण के मापदंड अपनाए बिना यहां विकास नहीं हो सकता।

यहां भी बेरहम प्रकृति... जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड ही नहीं, प्रकृति की बेरहमी अनेक बार पूर्वोत्तर के मिजोरम, त्रिपुरा, नगालैंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश, दक्षिण भारत के केरल, महाराष्ट्र आदि जगह भी दिखाई दी। पिछले द्वाई दशक में इन प्रदेशों में सबसे अधिक भूस्खलन की घटनाएं हुई हैं। ये अति-संवेदनशील जौन में माने जाने लगे हैं। इसके अलावा नेपाल और भूटान की पहाड़ियों में भी पिछले वर्षों में बाढ़ और भूस्खलन से हजारों लोग विस्थापित हुए हैं, जो बताता है कि संकट केवल भारत तक सीमित नहीं है।

जोधपुर में ड्रोन शो से र

जोधपुर में आयोजित राज्य स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह की पूर्व संध्या पर आकाश में उस समय एक खास ऐतिहासिक घटना हुई 'सिंदूर' में मुंहतोड़ जवाब देने के बाद भारत में यह पहला भव्य शो रहा। शो के दौरान आजादी की जंग में हमारे रियल हीरोज के बीच समारोह के तहत मेहरानगढ़ में एटहोम कार्यक्रम के दौरान जोधपुर विकास प्राधिकरण की ओर से गढ़ की तलहटी से 550 ड्रोनों ने नागरिक मौजूद रहे। जिला कलेक्टर श्री गौरव अग्रवाल के निर्देशन में जेडीए आयुक्त श्री उत्साह



बोटलैब डायनेमिक्स ने किया ड्रोन शो

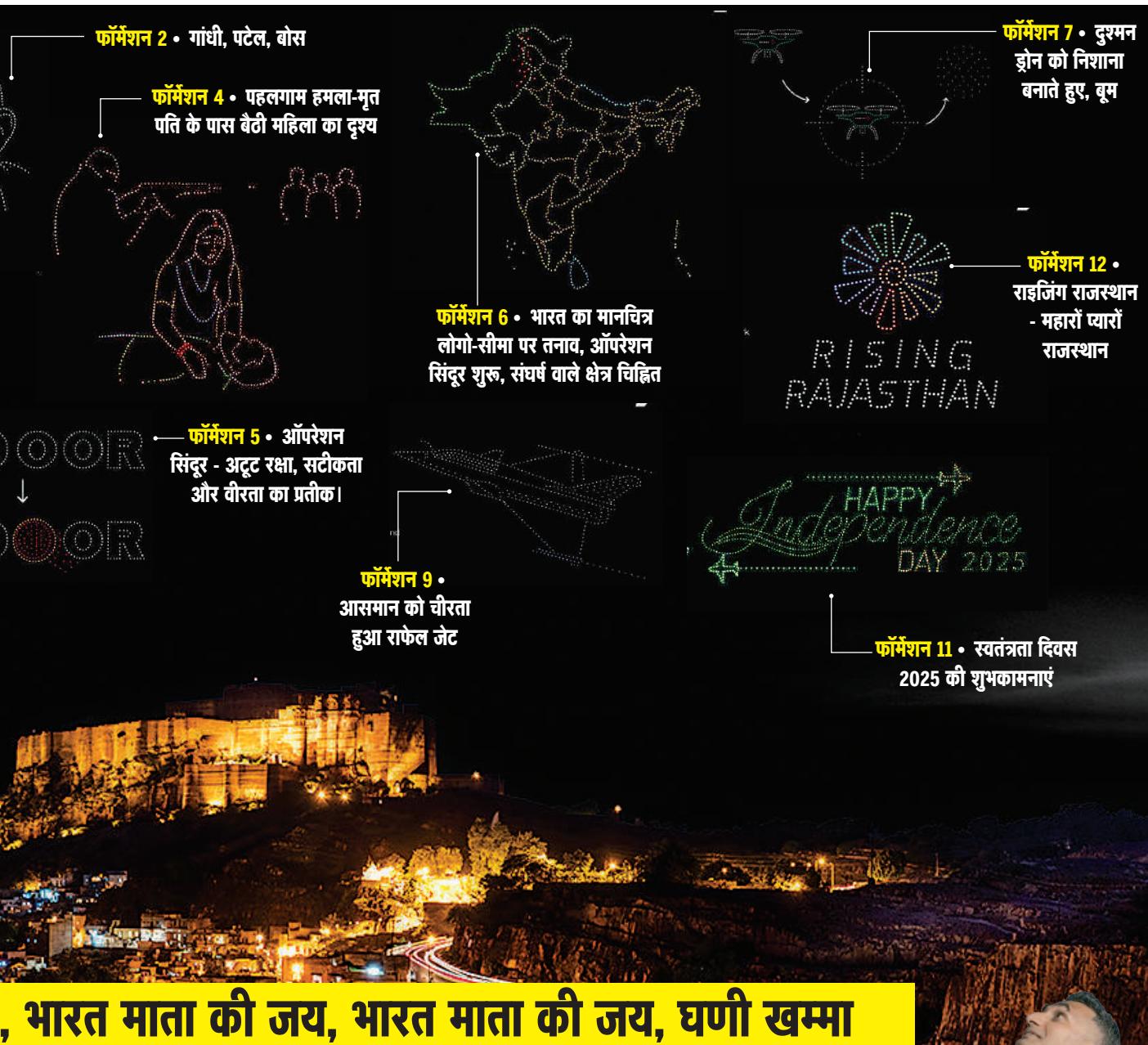
बोटलैब डायनेमिक्स ड्रोन तकनीक के क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ रहा है। बोटलैब ने ऐसी तकनीक विकसित की है, जिससे कई ड्रोन को स्वायत्त रूप से एक साथ उड़ान भरने के लिए निर्धारित कार्यों को पूरा करने और आकाश में संरचनाएं बनाने में सक्षम बनाता है। एक शोध उन्मुख स्टार्ट-अप होने के नाते और यूएवी अनुप्रयोगों के लिए अनुसंधान एवं विकास में सात साल से अधिक समय बिताने के बाद, बोटलैब ने समाधानों को तैनात करते समय लचीलापन और सटीकता सुनिश्चित करने के लिए सभी समाधानों को इन-हाउस बनाया है। 29 जनवरी 2022 को बीटिंग रिट्रीट समारोह के लिए राष्ट्रपति भवन में 1000 ड्रोन के साथ भारत के सबसे बड़े ड्रोन लाइट शो की मेजबानी का रिकॉर्ड बनाकर इस वर्टिकल को लॉन्च किया गया। 17 मई 2022 को मुंबई में आकाश में भारत का पहला क्यूआर कोड प्रदर्शित किया और फिर 26 जून 2022 को अफ्रीका के सबसे बड़े ड्रोन लाइट शो की मेजबानी की। मनोरंजन उद्योग में कंपनी का मिशन अंततः प्रदूषण को खत्म करने को सभी आतिशबाजी की जगह ड्रोन-लाइट-शो को लाना है। बोटलैब डायनेमिक्स अपने संस्थापक अनुज कुमार बरनवाल, सीईओ तन्मय बुनकर और सरिता अहलावत व बिजनेस डेवलपमेंट अतुल सहरावत के निर्देशन में अपने मिशन की ओर लगातार बढ़ रही है।



रचा इतिहास

देश में 'ऑपरेशन सिंदूर' पर 550 ड्रोन से भव्य शो

जब 550 ड्रोनों ने एक साथ उड़कर ऑपरेशन सिंदूर और हमारी स्वाधीनता की कहानी को प्रदर्शित किया। पाकिस्तान को 'ऑपरेशन गोला' में बताने के साथ ही आजादी के दीवानों के संघर्ष को ड्रोन शो के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। राज्य स्तरीय स्वाधीनता दिवस ये प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा सहित अनेक जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी और गणमान्य चौधरी, श्री महेंद्र सिंह पंवार, निदेशक, अभियांत्रिकी और उनकी कुशल टीम ने ये इतिहास रचा।



, भारत माता की जय, भारत माता की जय, घणी खम्मा

जोधपुर... देवियों और सज्जनों, उनासीवें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

आसमान के विस्तार के बीच आज हम सब परंपरा और प्रौद्योगिकी के मेल के साथ आजादी का उत्सव एक नए उत्साह और उमंग से मनाने के महान देश की महागाथा सुनाने के लिए इस नक्षत्रमयी आकाश के सितारे आज स्वयं धरती पर आ पहुंचे हैं। आइए, हम उन दूरदर्शी महापुरुषों आजादी हमारे लिए जीती। साथ ही उन बहादुर वीरों को सलाम करें जो हमारी सीमाओं पर डटे हैं, ताकि यह अनपोल आजादी सुरक्षित और अमर बनी रहे। उनका साहस हमारी प्रगति को गति देता है; उनका बलिदान हमारे मार्ग को रोशन करता है।



18 लाख से ज्यादा भारतीय अब दुनिया की यूनिवर्सिटीज में विदेशी डिग्री, ग्लोबल करियर



मृदुलिका सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

कभी दुनिया भर के छात्र भारत की तक्षशिला और नालंदा जैसी विश्वविद्यालयों में शिक्षा पाने आते थे, और आज भारतीय छात्र उसी ज्ञान—यात्रा को विदेश जाकर आगे बढ़ा रहे हैं। 2025 तक 18 लाख से ज्यादा भारतीय छात्र दुनिया की यूनिवर्सिटीज में पढ़ रहे हैं, जिनमें अब केवल अमीर ही नहीं, बल्कि मिडिल क्लास भी शामिल है। अमेरिका से लेकर कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी तक भारतीय छात्रों की मौजूदगी नए रिकॉर्ड बना रही है। बेहतर करियर, रिसर्च सुविधाएं, वर्क वीजा और स्थायी निवास (PR) की संभावना इस रुझान को और मजबूती देती है। हालांकि ऊंचा खर्च, वीजा रिजेक्शन और सांस्कृतिक चुनौतियां अब भी मुश्किलें खड़ी करती हैं, फिर भी ग्लोबल क्लासरूम का आकर्षण भारतीय युवाओं का सबसे बड़ा सपना बना हुआ है।



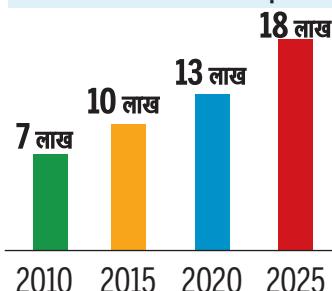
कभी भारत ग्लोबल एजुकेशन का हब हुआ करता था। तक्षशिला और नालंदा इस बात का प्रतीक हैं। यहां दुनियाभर के छात्र शिक्षा हासिल करने आते थे। ये इस बात का भी प्रतीक है कि भारत में शिक्षा का आकर्षण कभी सीमाओं तक सीमित नहीं रहा। जैसे पहले विदेशी छात्र भारत आते थे, अब भारतीय छात्र विदेश जाना पसंद कर रहे हैं अपनी-अपनी तक्षशिला और नालंदा की खोज में।

विदेश में पढ़ाई भी सिर्फ अमीरों का शौक माना जाता था, लेकिन आज यह भारत के हायर से लेकर लोअर मिडिल क्लास का सपना बन चुका है। हर साल लाखों भारतीय छात्र अपने सपनों को हकीकत में बदलने के लिए बैग पैक करते हैं और किसी न किसी विदेशी यूनिवर्सिटी का रुख करते हैं। सवाल यह है कि यह सफर अब कितना आसान है, कितनी मुश्किलें हैं, और आखिर क्यों इतनी बड़ी संख्या में भारतीय छात्र अपना देश छोड़कर विदेश पढ़ने जाते हैं? आइए जानते हैं इस स्पेशल स्टोरी में—

18 लाख से अधिक रुट्टेंट पहुंचे विदेश

2025 के ताजा आंकड़े बताते हैं कि 18 लाख से अधिक भारतीय छात्र विदेश में पढ़ाई कर रहे हैं। यह संख्या 2013 के मुकाबले लगभग तीन गुना है। इसका मतलब यह है कि अब हर 10 अंतरराष्ट्रीय छात्रों में से एक भारतीय है। यह ट्रेंड भारत को दुनिया का सबसे बड़ा छात्र-भेजने वाला देश बना देता है।

2010 से 2025 के बीच बढ़ी छात्रों की वृद्धि की गति



*यानी हर पांच साल में भारतीय छात्रों की विदेश जाने की संख्या औसतन 30–35 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है।

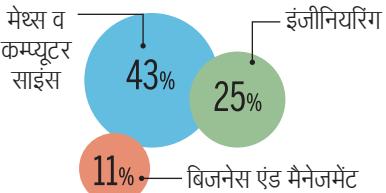
यूएसए सबसे ज्यादा पॉपुलर

विदेश जाकर पढ़ाई का सपना देखने वाले भारतीय छात्रों के लिए कुछ देशों ने खुद को हॉट डेस्टिनेशन के रूप में स्थापित किया है।

| देश | भारतीय छात्रों की संख्या (2025) | खास वजह |
|--------------|---------------------------------|--|
| यूएसए | 3,31,602 | STEM शिक्षा, रिसर्च अवसर, ओपीटी वर्क वीजा |
| कनाडा | 1,37,608 | पीआर पाथवे, सस्ती ट्रूयून, मल्टीकल्चरल माहौल |
| यूके | 92,355 | 2 साल का पीएसडब्ल्यू वीजा, एमबीए लोकप्रिय |
| ऑस्ट्रेलिया | 1,18,109 | हाई-क्वालिटी एजुकेशन, पीआर अवसर |
| जर्मनी | 49,500 | ट्रूयून-फ्री/कम फीस, इंजीनियरिंग और रिसर्च |
| जॉर्जिया | 20,000 | सस्ता एमबीबीएस, आसान एडमिशन प्रोसेस |
| उज्बेकिस्तान | 15,000 | किफायती मेडिकल शिक्षा |

STEM कोर्स हैं सबसे डिमांड में

भारतीय छात्रों का झाकाव अब भी STEM की ओर सबसे अधिक है। आंकड़ों के अनुसार:



MBBS: रूस, जॉर्जिया, उज्बेकिस्तान में सबसे डिमांडिंग डिजाइन, आर्ट-हॉमिस्टिलिटी: यूरोप व ऑस्ट्रेलिया में लोकप्रिय STEM की लोकप्रियता का कारण है कि यह ग्लोबल जॉब मार्केट में सबसे ज्यादा डिमांड वाला क्षेत्र है। वहीं मैडिकल शिक्षा भारत की सीमित सीटों और ऊची फीस की वजह से विदेश में अपेक्षाकृत आसान और सस्ती मानी जाती है।

भारतीय छात्र क्यों जाना चाहते हैं विदेश?

- बेहतर करियर और इंटरनेशनल एक्सपोजर
 - सीटों की कमी और प्रतियोगिता
 - भारत में टॉप कॉलेजों में सीटें सीमित हैं, जिससे छात्रों को वैकल्पिक रास्ता ढूँढ़ना पड़ता है।
 - बेहतर रिसर्च और टेक्नोलॉजी
 - विदेशी यूनिवर्सिटी में एडवांस लैब्स, इंटरनेशनल रिसर्च प्रोजेक्ट्स और बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर मिलता है।
 - वर्क वीजा और PR के आकर्षक रास्ते
 - कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और यूके जैसे देश पीआर (परमानेंट रेसिडेंसी) और वर्क वीजा की आसान पॉलिसी देते हैं।
 - संस्कृति और नेटवर्किंग
- विदेश पढ़ाई का मतलब है मल्टीकल्चरल माहौल और ग्लोबल नेटवर्किंग।

OPT और PSW वीजा: छात्रों की सबसे बड़ी ताक़त

OPT यानी

(Optional Practical Training – USA)

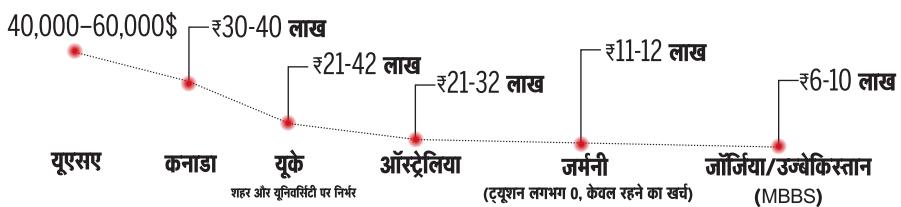
इसमें पढ़ाई पूरी करने के बाद 12 महीने तक काम करने का अवसर, STEM छात्रों के लिए 24 महीने से ज्यादा का एक्सटेंशन, यानी कुल 3 साल तक काम की अनुमति और अमेरिकी कंपनियों में करियर की शुरुआत का बेहतरीन मौका माना जाता है।

PSW यानी

(Post Study Work Visa – UK & Australia)

यूके में डिग्री के बाद 2 साल (PhD के लिए 3 साल) तक काम करने का मौका और ऑस्ट्रेलिया में टेम्परी ग्रेजुएट वीजा से 2–4 साल तक काम की अनुमति और अवसर यह परमानेंट रेसिडेंसी (PR) की ओर पहला कदम बनता है।

खर्च का गणित: कहां कितना?



*खर्च प्रति वर्ष में

कितना आसान और कितना मुश्किल?

आसान पहलू

स्कॉलरशिप और एजुकेशन लोन - आर्थिक बोझ हल्का।

एजुकेशन कंसल्टेंसी और ग्लोबल टाई-अप्स - एडमिशन आसान।

वर्क परमिट और PR पॉलिसी - करियर स्थिर।

EASY WAY

HARD WAY

मुश्किल पहलू

उच्च खर्च - यूएस में मास्टर्स - 40,000 से 60,000 डॉलर वीजा रिजेक्शन - कड़े नियमों और पॉलिसी बदलाव की चुनौती।

नीतिगत अस्थिरता - जैसे अमेरिका में ट्रम्प प्रशासन के दौरान।

मानसिक और सांस्कृतिक चुनौतियां - भाषा, मौसम और अकेलेपन की समस्या।

पीआर आकर्षित करता है... एक्सप्टर्स के अनुसार, पीआर (परमानेंट रेसिडेंसी) यानी किसी देश में स्थायी निवास का अधिकार। छात्र पढ़ाई के बाद वर्क वीजा पर नौकरी करते हैं और फिर पीआर के लिए आवेदन करते हैं। पीआर मिलने पर लंबे समय तक उस देश में रहने का अधिकार मिलता है। नौकरी, हेल्थकेयर और एजुकेशन जैसी सुविधाएं नागरिकों जैसी मिलती हैं। फैमिली को भी बुलाने का विकल्प होता है। नागरिकता (सिटीजनशिप) का ग्रास्ता खुलता है। इसलिए कनाडा और ऑस्ट्रेलिया भारतीय छात्रों के लिए बेहद आकर्षक गंतव्य हैं।

कुल मिलाकर विदेश में पढ़ाई भारतीय युवाओं के लिए अब सिर्फ डिग्री हासिल करने का रास्ता नहीं, बल्कि जीवन बदलने वाली यात्रा बन चुकी है। यह सफर उतना ही चुनौतीपूर्ण है, जितना आकर्षक। पैसे, वीजा और पॉलिसी जैसी मुश्किलें हैं, लेकिन करियर और जीवन के नए अवसर इस राह को अब भी सबसे बड़ा सपना बनाते हैं।

टेक्नोलॉजी की नई दुनिया में अवसर भी, चुनौतियां भी, सवाल यह है कि महिलाएं कहां खड़ी हैं?

एआइ क्रांति में बराबरी की दावेदारी

21वीं सदी को तकनीक का युग कहा जा रहा है और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) इसकी धुरी बन चुका है। शिक्षा, स्वास्थ्य, बिज़नेस से लेकर महिला सुरक्षा तक, हर क्षेत्र में एआइ संभावनाओं की नई खिड़कियां खोल रहा है। लेकिन क्या महिलाएं इस टेक्नोलॉजी रेवोल्यूशन का समान रूप से हिस्सा बन पाएंगी? इतिहास बताता है कि औद्योगिक क्रांति से लेकर इंटरनेट तक, महिलाएं अक्सर देर से जुड़ीं और पीछे रह गईं। आज भी जेंडर गैप, डिजिटल डिवाइड और साइबर सुरक्षा जैसे गंभीर अवरोध सामने हैं। सवाल यह है कि क्या महिलाएं एआइ की निर्माता और नेतृत्वकर्ता बन पाएंगी, या फिर उपभोक्ता तक सीमित रह जाएंगी?



डॉ. मधु बैनर्जी
पत्रकार व लेखिका

21 वीं सदी को टेक्नोलॉजी का युग कहा जा रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) आज एक तकनीकी शब्द नहीं रह गया, बल्कि यह हमारे जीवन का हिस्सा बन चुका है। बैंकिंग, शिक्षा, हेल्थ सेक्टर, मीडिया, बिज़नेस, कृषि, कानून हर क्षेत्र में एआइ ने गहरी पैठ बना ली है। यह कहना गलत नहीं होगा कि भविष्य का समाज और अर्थव्यवस्था एआइ के बिना अध्यूषा होगा, लेकिन इस टेक्नोलॉजिकल क्रांति में सबसे बड़ा प्रश्न ये है कि महिलाओं की भूमिका इसमें क्या होगी? क्या भारतीय महिलाएं इस बदलाव में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित कर पाएंगी या एक बार पिछे रह जाएंगी?

इतिहास गवाह है कि जब भी नई तकनीक आई, महिलाओं को उसके इस्तेमाल और लाभ तक पहुंचने में देर लगी। चाहे वह औद्योगिक क्रांति रही हो, कम्प्यूटर का दौर रहा हो या इंटरनेट का फैलाव, महिलाओं की भागीदारी सीमित रही। सामाजिक प्रतिबंध, शिक्षा में पिछापान और आर्थिक असमानता के कारण महिलाएं अक्सर तकनीकी अवसरों से वंचित रह गईं। आज भी भारत जैसे देशों में ग्रामीण और शहरी इलाकों की महिलाएं डिजिटल साक्षरता में पुरुषों से पीछे हैं। यही बजह है कि एआइ के क्षेत्र में भी महिलाओं की संख्या अभी बेहद कम है।

अवसरों की नई दुनिया

फिर भी यह मानना होगा कि एआइ महिलाओं के लिए नई संभावनाओं के द्वारा खोल रहा है।

रोजगार के अवसर: डेटा साइंटिस्ट, मशीन लर्निंग इंजीनियर, रोबोटिक्स एक्सपर्ट, एआइ ट्रेनर, डिजिटल कंटेंट क्रिएटर जैसे क्षेत्र तेजी से उभर रहे हैं। यदि महिलाएं इसमें कदम बढ़ाएं तो करियर की नई दिशा पा सकती हैं।

घर और काम का संतुलन: एआइ आधारित टूल्स और ऐप्स से महिलाएं अपने घरेलू काम आसान बना सकती हैं। ऑनलाइन शिक्षा, वर्क फ्रॉम हाम और हेल्थ ट्रैकिंग सिस्टम ने कामकाजी महिलाओं की चुनौतियां कम की हैं।

▪ महिला सुरक्षा: एआइ से लैस स्मार्ट कैमरे, एसओएस ऐप्स और लोकेशन ट्रैकिंग फीचर ने महिला सुरक्षा के नए विकल्प दिए हैं। कई शहरों में स्मार्ट पुलिसिंग का आधार एआइ ही है।

स्वास्थ्य और मातृत्व देखभाल

- एआइ आधारित हेल्थ एप्स महिलाओं को पीरियड ट्रैकिंग, प्रेनेंसी मॉनिटरिंग और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी उपलब्ध करा रहे हैं। हालांकि तस्वीर केवल उजती नहीं है, इसमें कई गहरे सवाल भी हैं-

1. जेंडर गैग इन टेक्नोलॉजी

- वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की रिपोर्ट बताती है कि एआइ सेक्टर में काम करने वाले कर्मचारियों में केवल 26 प्रतिशत महिलाएं हैं। यह असमानता बताती है कि टेक्नोलॉजी का नेतृत्व अब भी पुरुषों के हाथ में है।

2. एल्गोरिद्म में भेदभाव:

- एआइ उतना ही निष्पक्ष है, जितना डेटा उसे दिया गया है। अगर डेटा में लैंगिक पूर्वाग्रह है तो परिणाम भी महिलाओं के खिलाफ होंगे। कई शोधों ने दिखाया है कि एआइ आधारित भर्ती सिस्टम अक्सर महिलाओं को कमतर आंकता है।

3. नौकरी छिनने का डर:

- एआइ ऑटोमेशन से सबसे ज्यादा असर उन महिलाओं पर पड़ेगा जो छोटे-छोटे जॉब्स या सर्विस सेक्टर में काम करती हैं। रिसेप्शन, कस्टमर सर्विस या डेटा एंट्री जैसे क्षेत्र धीरे-धीरे मशीनों के हवाले होते जा रहे हैं।

4. साइबर सुरक्षा:

- एआइ आधारित डीपफेक टेक्नोलॉजी महिलाओं के लिए गंभीर खतरा बन चुकी है। उनकी फेक वीडियो और तस्वीरें बनाकर ब्लैकमेलिंग की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं।



- भारत में महिलाएं पहले ही 'डिजिटल डिवाइड' यानी डिजिटल असमानता का सामना कर रही हैं। ग्रामीण महिलाओं में स्मार्टफोन और इंटरनेट का इस्तेमाल अब भी सीमित है। ऐसे में एआइ सेक्टर में उनकी भागीदारी बेहद कम है।
- हालांकि हाल के वर्षों में सरकार और निजी क्षेत्र ने कई कार्यक्रम शुरू किए हैं।
- 'डिजिटल इंडिया' और 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के जरिए लड़कियों को डिजिटल शिक्षा से जोड़ने की कौशिश।
- स्टार्टअप इंडिया और महिला उद्यमिता योजनाएं महिलाओं को टेक्नोलॉजी आधारित बिज़नेस में प्रोत्साहित कर रही हैं।
- IITs और इंजीनियरिंग कॉलेजों में लड़कियों की संख्या बढ़ रही है, जो एआइ रिसर्च की दिशा में सकारात्मक संकेत है।

भविष्य की संभावनाएं: सही दिशा में कदम उठाए जाएं तो महिलाएं एआइ क्रांति की अगुआ बन सकती हैं। स्कूल और कॉलेज स्तर पर लड़कियों को कोडिंग, डेटा साइंस और मशीन लर्निंग की शिक्षा दी जानी चाहिए।

महिला-उन्मुख नीतियां

सरकार को ऐसी नीतियां बनानी होंगी, जिनसे महिलाएं एआइ स्टार्टअप्स और रिसर्च में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले सकें।

सुरक्षा व कानूनी ढांचा

डीपफेक और ऑनलाइन उत्पीड़न से महिलाओं की सुरक्षा के लिए सख्त कानून और तकनीकी समाधान जरूरी हैं।

मेंटॉरशिप व रोल मॉडल

टेक्नोलॉजी की दुनिया में सफल महिला वैज्ञानिकों और उद्यमियों की कहानियां सामने लानी होंगी, ताकि युवा लड़कियां प्रेरित हों।

एआइ केवल तकनीक नहीं, बल्कि भविष्य की सामाजिक-आर्थिक धूरी है। अगर महिलाएं इसमें बराबरी से शामिल नहीं होतीं, तो यह क्रांति अधूरी रह जाएगी। जरूरत है कि शिक्षा, नीतियों और सामाजिक सोच के स्तर पर बदलाव लाया जाए। महिलाएं केवल एआइ का उपभोक्ता न बनें, बल्कि इसके निर्माता, शोधकर्ता और नीति-निर्माता भी बनें, क्योंकि असली प्रगति वही होगी, जिसमें टेक्नोलॉजी और जेंडर इक्वेलिटी साथ-साथ चलें।

राष्ट्रपति ट्रंप की सौदेबाज कूटनीति यूक्रेन में शांति की शुरुआत या राजनीतिक नाटक?

रूस-यूक्रेन युद्ध चौथे वर्ष में है और इसके असर से यूरोप ऊर्जा संकट, खाद्यान्त्र असुरक्षा और वैश्विक अस्थिरता झेल रहा है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चुनावी वादे के तहत युद्धविराम का आश्वासन दिया था। अब पुतिन और जेलेंस्की से उनकी वाताएं तथा यूरोपीय नेताओं के साथ उच्च स्तरीय बैठक ने संवाद की संभावना को पुनर्जीवित किया है। यूरोप इस पहल को सकारात्मक मान रहा है, किंतु रूस की कठोर शर्तें बनी हुई हैं। भारत के लिए यह पहल ऊर्जा व खाद्यान्त्र सुरक्षा से सीधे जुड़ी है। सवाल यही है— क्या यह ऐतिहासिक अवसर स्थायी शांति लाएगा या क्षणिक राजनीतिक प्रदर्शन रह जाएगा।



राजस्थान टुडे न्यूज डेस्क

रूस-यूक्रेन युद्ध चौथे वर्ष में है। इस संघर्ष ने केवल यूरोप ही नहीं, पूरे वैश्विक परिदृश्य को अस्थिर कर दिया है। अनुमान है कि अब तक तीन लाख से अधिक लोग मारे जा चुके हैं, सात मिलियन से अधिक लोग विस्थापित हुए हैं, और ऊर्जा से लेकर खाद्यान्त्र आपूर्ति तक की वैश्विक श्रृंखलाएं गहरे संकट में फंसी हैं। यूरोप अपूर्व ऊर्जा असुरक्षा का सामना कर रहा है और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अस्थिरता बनी हुई है। ऐसे समय में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की हालिया कूटनीतिक सक्रियता को अनदेखा करना संभव नहीं है। यह पहल अवसर भी है और जोखिम भी।

ट्रंप ने चुनाव प्रचार में वादा किया था कि वे सत्ता में आते ही युद्धविराम करवाएंगे। सत्ता संभालने के तुरंत बाद उन्होंने यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की से बातचीत की थी, परंतु कोई ठोस नतीजा नहीं निकला। अगस्त 2025 में घटनाएं तेजी से बदलीं— 15 अगस्त को अलास्का में ट्रंप ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की और 18 अगस्त को व्हाइट हाउस में जेलेंस्की व यूरोप के नेताओं के साथ उच्च स्तरीय बैठक की। यह स्पष्ट संकेत है कि अमेरिका प्रत्यक्ष रूप से शांति प्रक्रिया का सूत्रधार बनने की कोशिश कर रहा है।

ट्रंप की कूटनीतिक शैली असामान्य है। वे प्रोटोकॉल और औपचारिकता की जगह व्यक्तिगत समीकरणों और सौदेबाजी जैसी सोंधी बातचीत पर भरोसा करते हैं। यही कारण है कि उन्होंने पुतिन को लाल कालीन और राष्ट्रपति की लिमोजिन में सवारी दी— एक प्रतीकात्मक संदेश कि औपचारिकताओं से परे जाकर व्यक्तिगत विश्वास ही समाधान की कुंजी हो सकता है। परंतु इतिहास बताता है कि केवल व्यक्तिगत समीकरणों से पैदा हुई शांति अक्सर टिकाऊ नहीं होती।

यूरोप की प्रतिक्रिया भिन्नी है। नाटो महासचिव



मार्क रुड्डे ने इसे “गतिरोध तोड़ने का क्षण” कहा। इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने इसे “नया चरण” बताया, जबकि फिनलैंड के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टेब का आकलन है कि ढाई सप्ताह में हुई प्रगति, पिछले तीन वर्षों से अधिक है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टाम्पर ने स्वीकार किया कि अब तक कोई वार्ता को इस मुकाम तक नहीं ला सका। जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज हालांकि सावधानी बरतते हुए कहते हैं कि मार्ग तो खुला है, किंतु आगे जटिल वार्ताओं की कठिनाई भी उतनी ही गहरी है।

यूक्रेन की स्थिति अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। नाटो की सदस्यता अभी दूर है, पर विश्चमी सुरक्षा गारंटी, हथियारों की आपूर्ति और संभावित सैनिक तैनाती उसे आंशिक सहारा देती है। परंतु रूस की कठोर शर्तें अपरिवर्तित हैं— युद्धविराम के बदले यूक्रेन को अपने भूभाग का बड़ा हिस्सा छोड़ना होगा। यह प्रस्ताव न केवल जेलेंस्की के लिए राजनीतिक अस्वीकार्य है, बल्कि यूक्रेन की संप्रभुता और राष्ट्रीय अस्मिता के लिए सीधा खतरा है।

अब प्रश्न यह उठता है कि इस पूरी पहल का भारत पर क्या प्रभाव होगा? भारत इस युद्ध के शुरुआती दिनों से ही संतुलनकारी भूमिका निभा रहा है। उसने एक और रूस के साथ अपनी पारम्परिक रणनीतिक साझेदारी बनाए रखी, वहीं दूसरी ओर अमेरिका और यूरोप के साथ भी रिश्तों को और मजबूत किया। भारत के लिए इस युद्ध का सबसे बड़ा असर ऊर्जा और खाद्यान्त्र सुरक्षा पर पड़ा है। कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों और गेहूं व सूरजमुखी तेल की आपूर्ति पर संकट ने भारतीय बाजार को प्रभावित किया। भारत ने रूस से रियायती दर पर तेल खरीदकर इस दबाव को कुछ हट तक कम किया, लेकिन परिचमी

आलोचना का सम्मान भी किया।

यदि ट्रंप की पहल से स्थायी शांति की दिशा खुलती है, तो भारत को सबसे अधिक लाभ होगा—ऊर्जा बाजार स्थिर होंगे, खाद्यान्त्र आपूर्ति सुचारू होगी और अंतरराष्ट्रीय व्यापार को राहत मिलेगी। पर यदि यह पहल विफल होती है, तो वैश्विक अस्थिरता और बढ़ेगी। भारत को तब और कठिन संतुलन साधना होगा—रूस से अपनी ऊर्जा निर्भरत और परिचम के साथ सामरिक साझेदारी दोनों को एक साथ निभाना होगा।

अमेरिका की यह पहल इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में नेतृत्व के संकट को उजागर करती है। चीन एशिया-प्रशांत में आक्रामक है, परिचम एशिया में अस्थिरता गहरी हो रही है, और यूरोप युद्ध से बोझिल है। यदि अमेरिका यह साबित करने में विफल रहता है कि वह शांति का वास्तविक सूत्रधार बन सकता है, तो वैश्विक शक्ति-संतुलन पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। भारत जैसे देशों के लिए यह संदेश निर्णायक होगा कि किस महाशक्ति के साथ दीर्घकालिक संतुलन साधा जाए।

ट्रंप की पहल अवसर भी है और जुआ भी। यदि वे सफलता पाते हैं, तो यह उनके कार्यकाल की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी और अमेरिकी कूटनीति की ऐतिहासिक जीत भी। किंतु यदि वे विफल होते हैं, तो यह केवल यूक्रेन और यूरोप ही नहीं, बल्कि भारत और पूरे वैश्विक दक्षिण के लिए और गहरी अस्थिरता का संकेत होगा। इतिहास गवाह है कि युद्ध समाप्त करना युद्ध शुरू करने से कहीं कठिन है। अब दुनिया की निगाहें इसी पर टिकी हैं कि क्या ट्रंप की यह पहल स्थायी शांति का मार्ग खोलेगी या राजनीतिक नाटक बनकर रह जाएगी।

अमेरिका के दंडात्मक टैरिफ़ के लिए तैयार भारत

आर्थिक झटका और आगे की राह

भारत-अमेरिका व्यापारिक रिश्ते तनावपूर्ण मोड़ पर पहुंच गए हैं। अमेरिका ने 27 अगस्त से भारत के नियांत पर कुल 50 प्रतिशत टैरिफ़ लागू कर दिया है, जिससे वस्त्र, आभूषण और समुद्री भोजन उद्योगों पर गहरा असर पड़ेगा। विवाद का केंद्र रूस से तेल खरीद है। भारत ऊर्जा सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्ता पर अडिग है। समाधान केवल संवाद और संतुलन से ही संभव है।



राजस्थान टुडे न्यूज डेस्क

पि छले दो दशकों में भारत और अमेरिका ने रक्षा, तकनीक, ऊर्जा और निवेश जैसे क्षेत्रों में अच्छी प्रगति की है। यह सहयोग दोनों को एक-दूसरे के लिए अहम साझेदार भी बनाता रहा, लेकिन इसी माह यह रिश्ते अचानक तनावपूर्ण हो गए। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारत के नियांत पर पचास प्रतिशत दंडात्मक टैरिफ़ का ऐलान कर आर्थिक हल्कों में हलचल मचा दी। यह कदम सिर्फ़ व्यापारिक असहमति का परिणाम नहीं है, बल्कि रूस-यूक्रेन युद्ध, अमेरिकी चुनावी राजनीति और ऊर्जा सुरक्षा से जुड़ी व्यापक वैश्विक परिस्थितियों का मिला-जुला असर है।

गत वर्ष अमेरिका भारत का सबसे बड़ा नियांत गंतव्य रहा था। लगभग 87 अरब डॉलर का माल भारत ने अमेरिका को बेचा, जो कुल नियांत का करीब 18 प्रतिशत था। ऐसे में दंडात्मक टैरिफ़ का सीधा असर उन क्षेत्रों पर होगा, जो अमेरिका के बाजार पर सबसे अधिक निर्भर हैं। वस्त्र और परिधान उद्योग को गहरा धक्का लगेगा, क्योंकि इस क्षेत्र में बांग्लादेश और वियतनाम जैसे प्रतिस्पर्धी देशों को बढ़ा मिल जाएगी। समुद्री भोजन नियांत प्रभावित होने से तटीय राज्यों की अर्थव्यवस्था भी प्रभावित हो सकती है, जबकि पहले से ही वैश्विक मंदी से ज़ूझ रहे सूरत व मुंबई के आभूषण उद्योग पर भी दबाव बढ़ेगा। सिर्फ़ फ़ारास्ट्रीटिकल्स और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों को अशिक रहत मिल पाई है। विशेषज्ञों की मानें तो इन्हें भारी शुल्क के बाद भारतीय उत्पादों का अमेरिकी बाजार में प्रतिस्पर्धा में बने रहना कठिन होगा।

ऐसा अनुमान है कि भारत की वृद्धि दर 70 से 100 आधार अंकों तक घट सकती है और विकास दर 6 प्रतिशत से नीचे आ सकती है। अंतरराष्ट्रीय एजेंसी ऐस एंड पी के अनुसार, भारत की जीडीपी का लगभग 1.2 प्रतिशत हिस्सा सीधे तौर पर प्रभावित होगा। इससे नौकरियों पर संकट खड़ा हो सकता है। वस्त्र, आभूषण और समुद्री भोजन जैसे श्रम-प्रधान उद्योगों में पहले से ही 100 अंडर रद्द होने लगे हैं, जिससे असुरक्षा बढ़ रही है।



विवाद की वजह भारत द्वारा रूस से तेल खरीदना है। अमेरिका का आरोप है कि भारत सस्ता रूसी तेल खरीदकर मास्को को युद्ध जारी रखने में मदद कर रहा है और इस तरह “रूस का वैश्विक क्लियरिंगहाउस” बन गया है। हालांकि भारत ने इस आरोप को सिरे से खारिज किया है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने स्पष्ट कहा है कि भारत की खरीद ने वैश्विक तेल बाजार को स्थिर बनाए रखने में अहम भूमिका निभाई है और यही तेल अमेरिका और यूरोप भारत से परिष्कृत रूप में खरीद रहे हैं। साथ ही यह आलोचना महज दोहरे मानदंड का प्रतिबिंब है।

भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक है और घरेलू ऊर्जा मांग पूरी करने के लिए सस्ता रूसी तेल उसके लिए आवश्यक है। अमेरिका चाहता है कि भारत परिचमी प्रतिबंधों का पालन करे, जबकि भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्ता बनाए रखने पर अडिग है। यही कारण है कि दोनों देशों के बीच वार्ता लंबे समय से अटकी रही है। इस पर घरेलू राजनीति का दबाव भी है। अमेरिका में कृषि और डेयरी लॉबी भारत में बाजार पहुंच चाहती है और चुनावी वर्ष में राष्ट्रपति ट्रम्प का सख्त रुख अपनाना “अमेरिकी हितों की रक्षा” के संदेश के तौर पर देखा जा रहा है। वहीं भारत में प्रधानमंत्री मोदी किसानों के बोट बैंक को नज़रअंदाज नहीं कर सकते और कृषि-डेयरी पर कोई समझौता नहीं करना चाहते।

भारत ने इस संकट से निपटने के लिए कई रणनीतिक कदम उठाए हैं। एक ओर वह ब्रिक्स साझेदारी को मजबूत कर डॉलर पर निर्भरता कम करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, वहीं रूस के

साथ द्विपक्षीय व्यापार बाधाएं कम करने पर सहमति बनी है। चीन के साथ भी रिश्ते सुधारने की कोशिश की जा रही है, भले ही सीमा विवाद अब भी कायम है। घरेलू स्तर पर सरकार ने 2.8 अरब डॉलर का नियांत सहायता पैकेज और उपभोक्ता मांग को बढ़ाने के लिए कर कटौती जैसी पहलों की है।

आगे के परिदृश्य तीन तरह के हो सकते हैं। पहला, टकराव गहराता है और दोनों देश एक-दूसरे पर प्रतिशोधी टैरिफ़ लगाते हैं, जिससे वैश्विक आपूर्ति शून्खला प्रभावित होती है। दूसरा, सीमित समझौते के तहत कृषि और डेयरी पर कुछ रियायतें दी जाती हैं और अमेरिका आंशिक रूप से टैरिफ़ हटाता है। तीसरा और सबसे व्यावहारिक विकल्प है कि भारत नियांत का विविधीकरण करे और यूरोप, अफ्रीका व एशिया-प्रशांत की ओर अधिक ज़ुके, जिससे मध्यम अवधि में अधिक आत्मनिर्भर बने।

आखिरकार भारत और अमेरिका दोनों के पास खोने को बहुत कुछ है। अमेरिका भारत जैसे विशाल बाजार और रणनीतिक सहयोगी को खोना नहीं चाहेगा, वहीं भारत भी दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से टकराव का जोखिम नहीं उठा सकता। समाधान केवल संवाद, लचीलापन और संतुलन से संभव है। भारत को नियांत विविधीकरण और आत्मनिर्भरता पर ध्यान देना होगा, जबकि अमेरिका को समझना होगा कि भारत अब केवल सहयोगी नहीं बल्कि समान साझेदार है। इस संकट का सकारात्मक पहलू यह है कि भारत अपनी अर्थिक कूटनीति और रणनीतिक स्वायत्ता को और मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

गावस्कर, द्रविड़ और सचिन की धरोहर को आगे बढ़ाते गिल—जायसवाल

टेस्ट क्रिकेट का स्वर्णकाल

20 जून से 4 अगस्त 2025 तक इंग्लैंड की उछालभरी पिचों पर खेली गई एंडरसन—तेंदुलकर ट्रॉफी 2-2 की बराबरी पर समाप्त हुई, लेकिन यह शृंखला भारतीय टेस्ट क्रिकेट के भविष्य की कहानी बन गई। शुभमन गिल ने कप्तानी और बल्लेबाजी में मिसाल कायम की, मोहम्मद सिराज ने बेहतरीन गेंदबाजी का नेतृत्व किया, यशस्वी जायसवाल ने केनिंगटन ओवल पर शतक ठोका, और नाइटवॉचमैन आकाश दीप की जुझारू पारी ने सबका ध्यान खींचा। रविंद्र जडेजा ने निचले क्रम से ऑल-राउंड प्रभाव छोड़ा। सचिन तेंदुलकर ने इस प्रदर्शन को “10/10” करार दिया, जबकि युवराज सिंह ने गिल की कप्तानी को “बड़े मंच पर आगमन” बताया।



अजय अस्थाना
वरिष्ठ पत्रकार

भा रत और इंग्लैंड के बीच टेस्ट क्रिकेट की प्रतिरूपिता हमेशा से एक कठिन इमित्हान रही है। ड्यूक गेंद की चमक, बादलभरी परिस्थितियों में स्क्रिंग, और उछालभरी पिचों का अनिश्चित व्यवहार—ये सभी मिलकर बल्लेबाजों और गेंदबाजों की तकनीक, धैर्य, और मानसिक संबल की परीक्षा लेते हैं। 2025 की एंडरसन—तेंदुलकर ट्रॉफी ने साबित कर दिया कि भारतीय टेस्ट क्रिकेट की बागड़ेर अब एक ऐसी पीढ़ी के हाथों में है, जो न केवल इन चुनौतियों का सामना कर सकती है, बल्कि उन्हें अवसर में बदल सकती है। पांच टेस्टों की इस शृंखला का 2-2 से झँग होना भले ही कागज पर बराबरी दिखाता हो, लेकिन मैदान पर यह भारतीय युवाओं की जीत थी। एक ऐसी जीत, जो अगले दशक के लिए टेस्ट क्रिकेट में भारत के वर्चस्व की नींव रखती है।



शुभमन गिल : नेतृत्व का नया चेहरा

- इस शृंखला की धुरी थे 25 वर्षीय कप्तान शुभमन गिल। उनकी 5 टेस्ट मैचों की 10 पारियों में 75.40 की औसत से 754 रनों की उपलब्धि, जिसमें एजबेस्टन में 269 और 161 की मैराथन पारियां शामिल हैं, जो किसी भी भारतीय टेस्ट कप्तान द्वारा विदेशी धरती पर दुर्लभ है। गिल ने न केवल बल्ले से योगदान दिया, बल्कि उनकी शांत और खानानीकी कप्तानी ने टीम को निर्णायक क्षणों में एक-जुट रखा। लॉइस में जब इंग्लैंड ने दूसरी पारी में तेजी से रन बनाए, तो गिल ने सत्र प्रबंधन के साथ गेंदबाजों को छोटे-छोटे स्पेल में उपयोग किया, जिससे जो रुट जैसे बल्लेबाजों को दबाव में रखा गया। मैनचेस्टर में उनकी फील्ड सेटिंग्स ने इंग्लिश मध्यक्रम को बांधे रखा, और ओवल में उनकी अंतिम सत्र की रणनीति ने छह रनों की ऐतिहासिक जीत सुनिश्चित की।
- गिल की कप्तानी में गांगुली-जैसी आक्रामकता और द्रविड़-जैसी धैर्य दिखा। उनके शब्द, “हम ‘यान’ का टैग हटाकर ‘टफ’ बनाना चाहते हैं,” यह दर्शाते हैं कि उनका नेतृत्व केवल रणनीति तक सीमित नहीं, बल्कि ड्रेसिंग रूम की मानसिकता को गढ़ने की प्रक्रिया है। यह वही दृष्टिकोण है, जिसने 2000 के दशक में सौरव गांगुली के नेतृत्व में भारतीय टीम को विदेशी दौरों पर नई पहचान दी थी।

यशरवी जायसवाल : आक्रामकता का नया प्रतीक

- युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने इस शृंखला में आक्रामकता को टेस्ट क्रिकेट की लिय में ढाला। केनिंगटन ओवल की दूसरी पारी में उनका शतक (118) भारत की बढ़त की निर्णायक मोड़ तक ले गया। बादलभरी परिस्थितियों में, जहां ड्यूक गेंद स्क्रिंग और सीम करती है, जायसवाल ने कवर-ड्राइव और पुल शॉट्स का स्टीक चयन किया। उनकी तकनीक में सुनील गावस्कर का अनुशासन और वीरेंद्र सहवाग की स्वाभाविकता का मेल दिखा। गावस्कर ने हमेशा “लांगर लेन” (ऑफ-स्टम्प के बाहर गेंद छोड़ने) की वकालत की थी, और जायसवाल ने इसे बखूबी अपनाया। फिर भी, जब अवसर मिला, तो उन्होंने सहवाग-जैसी निर्भीकता से स्क्वायर-कट और लॉफेट्ड कवर ड्राइव लगाए।
- जायसवाल की सबसे बड़ी ताकत थी उनकी क्रीज पर “मौजूदामी”。 ओवल में जब भारत 30/2 पर संकट में था, तो जायसवाल ने न केवल स्कोरबोर्ड को चलाया, बल्कि इंग्लिश गेंदबाजों के आत्मविश्वास को तोड़ा। यह वही गुण है, जो सचिन तेंदुलकर ने अपने करियर में बार-बार प्रदर्शित किया, परिस्थिति को पढ़ना, जोखिम को मापना, और लंबे समय तक क्रीज पर डटे रहना।



आकाश दीप : अनपेक्षित नायक



■ आकाश दीप का नाम इस श्रृंखला में एक अनोखे कारण से चर्चा में रहा। नाइटवॉचमैन के रूप में 66 रनों की जुझारू पारी। आमतौर पर नाइटवॉचमैन की भूमिका केवल विकेट बचाने तक सीमित होती है, लेकिन दीप ने इसे स्कोर बनाने का अवसर बनाया। मैनचेस्टर में, जब भारत ने दिन का खेल खत्म होने से पहले दो विकेट खो दिए थे, दीप ने नई गेंद के खिलाफ सहजता दिखाई। उनके स्ववायर-ड्राइव और डिफेंसिव शॉट्स ने इंग्लिश गेंदबाजों को सुबह के सत्र में निराश किया और मध्यक्रम को रिस्तरता दी। यह पारी घरेलू क्रिकेट से आए उनके “खड़े रहे और मारो” आत्मविश्वास को दर्शाती थी, जो भारत के तेज गेंदबाजी ढांचे की गहराई का प्रतीक है।

मोहम्मद सिराज : गेंदबाजी का अगुआ



■ गेंदबाजी में मोहम्मद सिराज ने श्रृंखला को जीवंत कर दिया। उनके 23 विकेट, जिनमें ओवल में छह रनों की जीत में 5/67 का निर्णायक स्पेल शामिल था, ने उन्हें श्रृंखला का सबसे प्रभावी गेंदबाज बनाया। सिराज की रन-अप की ऊंची, लंबाई पर अनुशासित गेंदबाजी, और पुरानी गेंद से रिवर्स स्लिंग का कुशल उपयोग उन्हें हर सत्र में खतरनाक बनाए रखता था। ■ सिराज ने इस श्रृंखला में “स्पेल प्रबंधन” की कला को परिष्कृत किया। छोटे, तीखे स्पेल के बाद रणनीतिक विश्राम और फिर नया आक्रमण—यह वही तकनीक है, जिसे जहीर खान ने 2000 के दशक में भारतीय तेज गेंदबाजी को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए उपयोग किया था। ओवल के आखिरी दिन, जब रोशनी ढल रही थी और इंग्लैंड को केवल 20 रन चाहिए थे, सिराज की एक परफेक्ट यॉर्किंग ने जोश टंग को बोल्ड किया, और स्लिप-कॉर्डिंग की सटीक कैचिंग ने भारत को जीत दिलाई। यह क्षण न केवल श्रृंखला का क्लाइमेक्स था, बल्कि सिराज के नेतृत्व और दबाव में प्रदर्शन की गवाही भी था।

रविंद्र जडेजा : संतुलन का आधार



■ रविंद्र जडेजा इस श्रृंखला के “बैलेंस-की” खिलाड़ी रहे। नंबर 6/7 पर बल्लेबाजी करते हुए 512 रन और 12 विकेट के साथ उन्होंने ऑल-राउंड प्रदर्शन का मानक स्थापित किया। मैनचेस्टर में उनकी 87 रनों की पारी और लॉडर्स में चार विकेट ने भारत को मुश्किल क्षणों में संभाला। जडेजा की बाएं-हाथ की स्पिन में विविधता—एंगल बदलना, फ्लैट ट्राइजेक्टरी, और पॉइंट-कवर के बीच रन रोकना—ने तेज गेंदबाजों को सांस लेने का मौका दिया। यह वही बहुआयामी भूमिका थी, जिसने 2000 के दशक में अनिल कुबले और हरभजन सिंह के साथ मिलकर भारतीय टेस्ट टीम को संतुलन प्रदान किया था।



ऐतिहासिक जीत : ओवल का रोमांच...

श्रृंखला का चरम बिंदु था केनिंगटन ओवल में छह रनों की जीत। भारत की टेस्ट इतिहास की सबसे संकरी जीतों में से एक। आखिरी दिन, जैसे-जैसे बादल गहराए और रोशनी मढ़म हुई, वैसे-वैसे दर्शकों की धड़कनें तेज हुईं। इंग्लैंड को 20 रनों की जरूरत थी, और जो रूट क्रीज पर थे। सिराज की एक तेज यॉर्किंग और जायसवाल की स्लिप में शानदार कैच ने खेल को पलट दिया। यह जीत इसलिए भी खास थी, क्योंकि भारत के प्रमुख तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह “वकलोड मैनेजमेंट” के कारण अंतिम टेस्ट से बाहर थे। उनकी अनुपस्थिति में सिराज, आकाश दीप, और वॉशिंगटन सुंदर जैसे युवाओं ने जिम्मेदारी संभाली, जिसने भारत की गेंदबाजी गहराई को रेखांकित किया।

पुराने दिग्गजों की सीख, नया जोश

यह श्रृंखला केवल वर्तमान की कहानी नहीं, बल्कि भारतीय टेस्ट क्रिकेट की समृद्ध विरासत का आधुनिक संस्करण है। सुनील गावस्कर ने सिखाया कि इंग्लैंड में “लांगर लन” पर खेलना—ऑफ-स्टंप के बाहर गेंद छोड़ना ही लंबी पारी की कुंजी है। राहुल द्रविड़ ने मानसिक संबल और प्रक्रिया-केंद्रित ट्रॉटिकोण को स्थापित किया। सचिन तेंदुलकर ने गेंद की सीम और पिच की स्थिति के आधार पर छोटी-छोटी समायोजन (जैसे, बैक-लिफ्ट की

ऊंचाई) से विदेशी पिचों को रन-फ्रेंडली बनाया। वीवीएस लक्षण ने दबाव में क्रीज की मौजूदगी और निःस्वार्थ साझेदारियों का महत्व बताया। सौरभ गांगुली ने विदेशी दौरों पर लड़ने की संस्कृति दी, और वीरेंद्र सहवाग ने तेज स्कोरिंग की संभावनाओं को उत्तराधिकार किया।

आज के गिल, जायसवाल, सिराज, और आकाश दीप इन सीखों का आधुनिक अवतार हैं। गिल की कप्तानी में द्रविड़ का धैर्य और गांगुली की

आक्रामकता एक साथ दिखती है। जायसवाल के शॉट-चयन में गावस्कर का अनुशासन और सहवाग की निर्भीकता का मेल है। सिराज का “हार्ट-ओवर-स्पीड” ट्रॉटिकोण जहार खान और मोहम्मद शमी की परम्परा को आगे बढ़ाता है। कपिल देव, जवागल श्रीनाथ व वेंकटेश प्रसाद के खेल को देखकर बड़े हुए आकाश दीप उस घरेलू क्रिकेट ढांचे का प्रतीक हैं, जिसने भारत को तेज गेंदबाजों की नई फौज दी है।

विपक्ष की चुनौती... यह बराबरी केवल भारत की कहानी नहीं थी। इंग्लैंड के जो रूट ने 532 रनों के साथ बल्लेबाजी में दबदबा बनाया, और जोश टंग ने 19 विकेट लेकर मेजबानों की उम्मीदें जीवित रखीं। फिर भी, हर निर्णायक क्षण में भारतीय युवाओं ने जवाब दिया। मैनचेस्टर में जडेजा और चोटिल ऋषभ पंत की 120 रनों की साझेदारी ने भारत को हार से बचाया, और लॉडर्स में गिल की रणनीति ने इंग्लैंड को दूसरी पारी में 250 रनों पर समेट दिया। यह संतुलन—युवा जोश और अनुभवी रणनीति—भारत की ताकत थी।



टीम-बिल्डिंग का नया सिद्धांत

इस श्रृंखला ने भारतीय चयन और टीम-बिल्डिंग के नए सिद्धांत को रेखांकित किया—युवा और अनुभव का संतुलन। जडेजा और पंत जैसे स्थापित खिलाड़ियों के साथ गिल, जायसवाल, और आकाश दीप जैसे नए चेहरों ने बेंच की गहराई बढ़ाई। सबसे महत्वपूर्ण था “रोल व्हैलैरीटी”। गिल का नेतृत्व, जायसवाल की आक्रामक शुरुआत, सिराज की गेंदबाजी की अगुवाई, और जडेजा की ऑल-राउंड भूमिका, या यूं कह लो कि हर खिलाड़ी को अपनी जिम्मेदारी स्पष्ट थी। यहीं कारण था कि दबाव के क्षणों में घबराहट की बजाय निष्पादन दिखा।

प्रशंसकों-दिग्गजों की प्रतिक्रिया

श्रृंखला के बाद दिग्गजों की प्रतिक्रियाएं इस प्रदर्शन की गवाही देती हैं। सचिन तेंदुलकर ने सोशल मीडिया पर लिखा, “Series 2–2, Performance 10/10! SUPERMEN from INDIA!” युवराज सिंह ने गिल की कप्तानी को “बड़े मंच पर आगमन” करार दिया। ये टिप्पणियां केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि इस पीढ़ी के खेल-विकास की ठोस मान्यता हैं।

भविष्य का रोडमैप

विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के अगले चक्र में भारत के पास एक ठोस रोडमैप है। गिल-जायसवाल की सलामी जोड़ी, पंत-जडेजा की मध्यक्रम आक्रामकता, और सिराज के नेतृत्व में तेज गेंदबाजी। ये सभी मिलकर भारत को विदेशी दौरों पर वर्चस्व के लिए तैयार करते हैं। इस श्रृंखला ने दो मूल्यवान उपहार दिए: पहला, यह भरोसा कि नई पीढ़ी पांचवें दिन की थकान तक लड़ सकती है; दूसरा, यह प्रमाण कि पुराने दिग्गजों की सीख आज भी कारगर है, बशर्ते उसे आधुनिक फिटनेस और डेटा-संचालित रणनीति से जोड़ा जाए।

इंग्लैंड में 2–2 की बराबरी कोई समझौता नहीं, बल्कि एक प्रक्रिया की परिपक्वता का प्रतीक है। यह श्रृंखला भारतीय टेस्ट क्रिकेट के नए स्वरूपकाल की शुरुआत है, जहां ये युवा खिलाड़ी पुराने दिग्गजों की सीख को नए जाश के साथ जो रहे हैं। आखिरी दिन, आखिरी सत्र, और सिराज की यॉकर ने ओवल को भारत का गढ़ बना दिया। सवाल यह है: क्या यह पीढ़ी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी? यह श्रृंखला स्पष्ट कहती है, हां, और समय इसका गवाह भी बनेगा।

‘टरबन गैन’ जे.आर. मेहता



बलवंत राज मेहता
वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार

जो धूपुर की धरती पर समय-समय पर ऐसे व्यक्तित्व जन्मे जिन्होंने अपने आचरण, आदर्शों और कर्म से समाज की दिशा बदली। इन विभूतियों में जसवंत राज मेहता का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। वे ऐसे जनप्रतिनिधि रहे जिन्होंने सिद्धांतों को सत्ता से ऊपर रखा और जनता का विश्वास ही अपनी सबसे बड़ी पूँजी माना। संसद में उनका जोधपुरी साफा केवल पहनावा नहीं था, बल्कि उनकी पहचान और मर्यादा का प्रतीक था। तभी तो पंडित नेहरू उन्हें स्नेह से “टरबन मैन” कहा करते थे।

जसवंत राज मेहता का जन्म एक जैन परिवार में हुआ। संस्कारों की गहराई और सेवा का भाव उनमें बचपन से ही था। सरदार स्कूल में प्रारम्भिक शिक्षा के बाद आगे की पढ़ाई उन्होंने जसवंत कॉलेज से की। यही संस्थान उनके विचारों की प्रयोगशाला बने, जहां वे छात्र जीवन में ही नेतृत्व और संगठन क्षमता के लिए पहचाने जाने लगे। उनका व्यक्तित्व प्रशासनिक सेवाओं में भी चमका। उन्होंने उप जिला कलेक्टर से लेकर मुख्य सचिव और विधिक सलाहकार तक के पदों पर काम किया। उनकी कार्यशैली हमेशा पारदर्शी और जनहितकारी रही। 1946 का वर्ष उनके जीवन में निर्णायक साक्षित हुआ। खाद्य नीति पर सरकार का निर्णय उन्हें जनता के हित के विपरीत लगा। उन्होंने पद, प्रतिष्ठा और सुविधाएं छोड़कर त्यागपत्र दे दिया। यह केवल नौकरी का त्याग नहीं था, बल्कि उनके सिद्धांतों की जीत थी। इस त्याग ने उन्हें साधारण अधिकारी से असाधारण व्यक्तित्व बना दिया।

इसके बाद उनके लिए राजनीति की राह खुली और 1952 का लोकसभा चुनाव उनके जीवन का ऐतिहासिक पदाव था। जोधपुर की जनता के विश्वास के सहरे उन्होंने निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा और भारी बहुमत से संसद बने। संसद में जसवंत राज मेहता का व्यक्तित्व अलग ही आभा बिखेरता था। वे पारम्परिक जोधपुरी वेशभूता और साफे में संसद भवन पहुँचते। वे मरुभूमि की समस्याएं, किसानों की पीड़ा और जनता की तकलीफें पूरे दमखम से सदन में उठाते। उनकी स्पष्टवादिता और सादगी उन्हें अलग पहचान दिलाती थी।

उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण प्रसंग लालबहादुर शास्त्री से जुड़ा है। 1957 में शास्त्रीजी ने उन्हें कांग्रेस में शामिल होने का आग्रह किया। मेहता ने साफ़ कहा कि यदि उनके मित्र और सहयोगी हरिशचंद्र माथुर कांग्रेस में आते हैं, तभी वे भी शामिल होंगे। यह शर्त सिद्धांत और घनिष्ठ मित्रता की मिसाल थी। अंततः वे कांग्रेस में आए और उनकी पहचान और भी मजबूत हुई। 1957 में उनकी जीत पर जोधपुर में ऐतिहासिक स्वागत हुआ, जो उनकी लोकप्रियता की निशानी थी।



सार्वजनिक जीवन में जसवंतराज मेहता के योगदान की सूची लम्जी है। राजस्थान हाईकोर्ट की बैंच को जोधपुर में कायम रखने में उनकी अहम भूमिका रही। गिरदीकोट से सोजती गेट तक नई सड़क की परिकल्पना भी उनकी ही थी, जो बाद में शहर की सबसे महत्वपूर्ण धरमनिर्याएँ में से एक बनी। उनकी पहचान केवल नेता की नहीं, बल्कि संवेदनशील लेखक की भी थी। पत्र लेखन में वे पारंगत थे। महाराजा से लेकर संसद तक, सभी उनकी लेखनी की कला के कायल थे।



उनकी ईमानदारी के किससे आज भी आदर्श बनकर सामने आते हैं। नाजायज धन लेना उनके सिद्धांतों के विपरीत था। जब निजी जीवन में कर्ज का बोझ बढ़ा, तब भी उन्होंने बेईमानी का सहारा नहीं लिया। उन्होंने जोधपुर के पावटा स्थित विशाल बंगले को बेचकर कर्ज चुकाया। गृहस्थ जीवन में वे समान रूप से सरल और सादगीप्रिय थे। पल्ती चंदादेवी और चार बच्चों के साथ उन्होंने संयुक्त परिवार की परम्परा निर्भाई। उनका मानना था कि यदि समाज संयुक्त परिवार की भावना से चले, तो अधिकांश समस्याएं अपने आप समाप्त हो जाएंगी। वे

जातिप्रथा जैसी झूँझियों के खिलाफ थे। कुछ समय तक उन्होंने अपने नाम से “मेहता” उपनाम हटाकर केवल “जसवंत राज” लिखना शुरू किया।

जोधपुर और पाली की जनता के लिए वे उस वृक्ष की तरह रहे जिसकी छाया सबको समान ठंडक देती है। उनकी दूरदृश्यता और निष्पक्षता ने उन्हें लोकप्रिय नेता बनाया। 1946 में लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रवेश कर सबसे अधिक मतों से विजयी होना और फिर लगातार तीन बार सांसद चुना जाना उनके जनाधार का सबूत है।

उनके पुत्र प्रो. वी.आर. मेहता स्मृतियों में कहते हैं “पिताजी ने कभी अपने लिए कुछ सुरक्षित नहीं रखा। वे हमेशा कहते थे कि जीवन का असली मूल्य दूसरों के लिए जीने में है।” यह शिक्षा वे अपने परिवार और समाज दोनों को देते रहे।

दुर्भाग्य यह है कि आज जोधपुर शहर में उनके नाम का कोई बड़ा स्मारक या स्मृति आयोजन नहीं है। जबकि सच्चाई यह है कि उनकी वजह से ही जोधपुर की न्यायिक गरिमा, सड़क संरचना और जनप्रतिनिधित्व मजबूत हुआ। उनका जीवन हमें सिखाता है कि राजनीति केवल सत्ता का खेल नहीं, बल्कि जनसेवा का माध्यम है। उनका जीवन हर युग और हर पीढ़ी के लिए प्रेरणा है। सचमुच, जसवंत राज मेहता साफे से संसद तक की ऐसी यात्रा के प्रतीक है, जिसे भुलाना असंभव है।

नागर शैली में मारु गुर्जर शैली के साथ विशिष्ट स्वामिनारायणीय शैली अक्षरधाम मंदिर : आकर्षक स्थापत्य

नागर शैली भारत की प्रमुख मंदिर स्थापत्य शैलियों में से एक है, जो विशेषतः उत्तर और पश्चिम भारत में विकसित हुई। इस नागर शैली की पश्चिमी भारत में जो विशिष्ट और परिष्कृत रूप विकसित हुआ, उसे ही “मारु-गुर्जर शैली” या “सोलंकी शैली” कहा जाता है। यह शैली मुख्यतः राजस्थान और गुजरात में 10वीं से 13वीं शताब्दी के मध्य उत्कर्ष पर थी।

इसके अतिरिक्त उत्तर मध्यकाल में भगवान् स्वामिनारायण ने उपर्युक्त शैली को आधार बनाकर एक नई मंदिर शैली को विकसित किया, जिसे स्वामिनारायणीय मंदिर स्थापत्य शैली कहा जाता है। जोधपुर का अक्षरधाम मंदिर इसी मिश्रित शैली में बनाया गया है। यहां इस शैली की मुख्य विशेषताएं दी गई हैं:



1. निर्माण सामग्री

* मुख्यतः जोधपुरी बलुआ पत्थर तथा कहीं संगमरमर का भी प्रयोग हुआ है। यह मंदिर हमारे प्राचीन स्थापत्य पद्धति से बनाया गया है, जिसमें लौह या अन्य धातु का प्रयोग नहीं किया जाता। दो पाषाण खंडों को एक विशिष्ट ताल-कुचिका विधि से परस्पर जोड़ा जाता है।

2. शिल्पी

पिण्डवाडा, सागवाडा, भरतपुर, जोधपुर, जयपुर आदि स्थानों से आए करीब 500 शिल्पियों और कारीगरों ने सात वर्षों में इस मंदिर को पूर्ण किया है।

3. जगती व बहुतल मंदिर संरचना

- नागर प्रासाद शैली के मंदिर प्रायः एक ऊंचे चबूतरे पर बनते हैं, जिसे जगती कहा जाता है। यहां इस मंदिर में जगती पर मंदिर का प्रथम भूतल है, जिसे अभिषेक मंडप कहते हैं। भगवान् स्वामिनारायण की किशोर मूर्ति नीलकंठवर्णी के रूप में यहां प्रतिष्ठित है। यहां इस धातु मूर्ति पर नित्य जलाभिषेक होगा। अभिषेक मंडप तीनों ओर से नक्काशी दार जालीदार पाषाण खण्डों और स्तंभों से आवृत है।
- इसके ऊपर के तल पर मुख्य मंदिर है। मंदिर का गर्भगृह उठकर तीन भिन्न शिखरों के रूप में आसमान को छूता प्रतीत होता है। इस प्रकार गर्भगृह के तीन मुख्य खंड हुए, जिसमें मध्य खंड में भगवान् स्वामिनारायण, अक्षरब्रह्म गुणातीतानन्द स्वामी महाराज, प्रथम खंड में राधा-कृष्ण भगवान् तथा अंतिम खंड में घनश्याम महाराज की मूर्तियां प्रतिष्ठित होंगी।
- मंदिर का मुख्य मंडप ठीक मध्य में है। गुम्बदनुमा इस मंडप की ऊंचाई मुख्य मंदिर के अन्य हिस्सों से बहुत अधिक है, जिससे यहां एक तीसरी मंजिल का निर्माण हुआ है। मंदिर का मुख्य तल गर्भगृह को छोड़कर तीनों दिशाओं से खुला है। मंदिर के ठीक सामने विस्तृत कलात्मक सीढियों का निर्माण किया गया है, जिससे जो भक्त भूतल पर बने नीलकंठ अभिषेक मंडप में न जाना चाहते हों, वे नीचे से इस प्रथम मंजिल पर सीधे ही आ सकते हैं।
- मंदिर के इस ऊपरी तल पर आते ही दोनों ओर क्रमशः हनुमान जी और गणपति जी के मंदिर हैं। यहां दर्शन कर भक्त आगे मुख्य मंडप की ओर बढ़ता है।
- इस प्रकार यहां कुल पांच शिखर होने से इस मंदिर को पञ्चशिखरीय मंदिर भी कहा जाता है।

4. प्रदक्षिणा पथ



मुख्य मंदिर तल पर परिकमा खुली रखी गई है। मुख्य मंदिर तल से करीब दो फीट नीचे के इस विशाल तल पर होकर भक्तजन सम्पूर्ण मंदिर की परिकमा कर सकते हैं। मुख्य मंदिर तल पर प्रदक्षिणा करते भक्त मंदिर पैठिका जो

करीब दो फीट ऊँची है, वहां बेदों, पुराणों के प्रेरणादायी मंत्रों-श्लोकों को पढ़ सकते हैं। यह बड़ी ही विशिष्ट रचना है।

5. अत्यंत जटिल, महीन और अलंकृत शिल्पकला



- प्रत्येक दीवार, मंडप, स्तम्भ, छत और प्रवेशद्वार पर बारीक नक्काशी।
- देवताओं, दिव्यालों, संतों, भक्तों की मूर्तियों और पौराणिक कथाओं से युक्त मूर्तिशिल्प।
- स्तम्भों पर बेलबूटों, पशु-पक्षियों व ज्यामितीय आकृतियों की सुंदर नक्काशी।

6. शिखर की विशिष्ट बनावट



- नागर शैली के अंतर्गत तीव्र आरोही और लंबवत शिखर यहां दृष्टिगोचर होते हैं। शिखर पर छोटे-छोटे शिखर (उरुशुग), झरोखें और वितान का समावेश इसे अधिक आकर्षक बनाता है।
- शिखर के ऊपर आमलक (कदम्ब फलाकार पत्थर) और उसके ऊपर कलश है।
- ध्वज दंड और ध्वज भी इस शैली की मुख्य विशेषता है।

स्वामिनारायणीय विशेषताओं के साथ मारु-गुर्जर शैली, नागर परम्परा का सबसे सुंदर और कलात्मक रूप इस मंदिर में निखर उठा है। यह विशिष्ट स्थापत्य शैली जोधपुर के इस अक्षरधाम मंदिर को कई मायानों में अद्वितीय बनाती है। इसकी सबसे प्रमुख विशेषता इसकी सूक्ष्म शिल्पकला, संतुलित संरचना और अभिनव वास्तुकला है, जिसने परिचम भारत की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध किया है। हमारी प्राचीन विरासत को युनायटेड किया है। - **डॉ. ज्ञाननन्ददास रथापी**

7. गर्भगृह, मंडप और अर्धमंडप



मंदिर तीन प्रमुख भागों में विभक्त— गर्भगृह, महा मंडप (गुम्बद) और अर्धमंडप है। इसके अतिरिक्त अन्तराल भी है, जो मुख्य मंडप को गर्भगृह से अलग करता है, जिसे कोली मंडप भी कहा जाता है। स्वामिनारायण परम्परा के ब्रह्मचारी संतों के बैठने और पूजा अर्चन करने के लिए इसे बड़े ही विशेष रूप से बनाया जाता है।

मंदिर के तीनों दिशाओं में आती सीढ़ियों की समाप्ति पर वितान मंडपों की उपस्थिति इस मंदिर की बड़ी विशेषता है।

8. स्तम्भों की अद्वितीयता

परम्परा के अनुसार एक ही बहुकोणीय या वृत्ताकार स्तम्भ के अनेक नक्काशीदार विभाग होते हैं, इन्हें एक के ऊपर एक संयोजित कर अत्यंत भव्य और नयन रम्य बनाया गया है। इनके विभाग- खारो, कुम्भी, स्तंभ, ठेकी, भरनी, काटासरो, भेटासरो आदि हैं।

स्तम्भों में आल भी हैं, जिनमें भगवान के चरित्रों व लीलाओं को अंकित किया गया है।

9. तोरण द्वार

मंदिरों के प्रवेश पर बड़े तोरण-द्वार की उपस्थिति भव्य है। इसके अलावा मंदिर के हर दो सतम्भों को खूबसूरत तोरण से जोड़ा गया है, ये धनुशाकर हैं।

ये तोरण बहुत सजावटी और कला-कौशल से परिपूर्ण होते हैं। यहां इसे हाथियों की सूड पर से उभारा गया है, जो अत्यंत आकर्षक है।



10. मनमोहक मूर्तियां

यहां १५१ से अधिक बड़ी भाव-प्रवान मूर्तियां हैं, जिनमें अवतारों, ऋषियों की प्रतिमाएं विशेष हैं। इन प्रतिमाओं में शृगार, भवित, नृत्य आदि की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है। यहां गुरु परम्परा की मूर्तियां, गणपति जी तथा शिवस्वरूपों की मूर्तियां अत्यंत मनमोहक हैं।

11. मंडोवर

मंदिर की बाह्य दीवारों को मंडोवर कहा जाता है। यहां अति नयन रम्य देवताओं, दिव्यालों, मुक्तों, संतों, भक्तों की मूर्तियों से यह अलंकृत है।

12. बहु मंजिल

वैसे तो राणकपुर आदि मंदिरों में बहु मंजिल स्थापत्य है, किन्तु भूमि तल पर अभिषेक मंडप की रचना स्वामिनारायण मंदिरों की अप्रतिम विशेषता है।

तखल्लुस का मायाजाल

फिल्मों से लेकर शायरी तक— क्यों रचनाकार अपने नाम बदलकर नई पहचान गढ़ते हैं?



दिनेश सिंदल कवि, लेखक

फिल्मी दुनिया हो या कविता और ग़ज़ल का संसार, मूल नामों से आगे बढ़कर छद्दमा नाम अपनाना एक परम्परा बन चुकी है। कभी यह बाजार और ब्रांडिंग की जरूरत बन जाता है, तो कभी जाति और मजहब की पहचान से मुक्त होने का माध्यम। दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन से लेकर ग़ालिब और गुलज़ार तक। हर नाम के पीछे छुपा है एक तखल्लुस, जो कलाकार की सार्वजनिक छवि और निजी पहचान के बीच एक मायाजाल रचता है। सवाल यह है कि क्या हम कलाकार को उसके तखल्लुस से पहचानते हैं या उसके असली अस्तित्व से?

क

ला के क्षेत्र में अगर हम देखें तो प्रायः बहुत से कलाकार अपना मूल नाम छुपा कर किसी छद्दमा नाम का प्रयोग करते हैं। फिल्मों में तो यह आम बात है।

जैसे मोहम्मद यूसुफ खान ‘दिलीप कुमार’ हो जाते हैं। राजीव भटिया ‘अक्षय कुमार’ हो जाते हैं। धर्म सिंह देओल ‘धर्मेंद्र’ हो जाते हैं। प्रीतम सिंह ‘प्रति जिंटा’ हो जाती है। तबस्सुम फतिमा हाशमी ‘तब्बू’ हो जाती है। करनजीत कौर बोहरा ‘सनी लियोन’ हो जाती है। हरिकृष्ण गिरी गोस्वामी ‘मनोज कुमार’ हो जाते हैं। अब्दुल रहमान ‘शाहरुख खान’ हो जाते हैं। रीमा लांबा ‘मलिका शेरावत’ हो जाती है। और इंकलाब श्रीवास्तव को तो आप जानते ही होंगे। नहीं जानते जिन्हें आजकल आप ‘अमिताभ बच्चन’ कहते हैं। ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे।

कलाकार अपने मूल नाम को छोड़कर वह नाम रखता है जो सुनने में आकर्षक हो, याद रखने में आसान हो या उसके व्यक्तित्व या संगीत शैली को बेहतर ढंग से दर्शाता हो। फिल्मों में इसे ‘स्क्रीन नेम’ या ‘ब्रांड नेम’ कहते हैं, जो किसी कलाकार के काम को प्रतिबिंబित करता है। इससे उसे ‘ब्रांड’ बनने में मदद मिलती है। उसकी अलग पहचान बनती है।

उर्दू व हिंदी कविता में भी इसका प्रचलन रहा है। जिसका इस्तेमाल शायर अपनी रचना के अंत में सिग्नेचर की तरह करता है। दुष्यंत कुमार त्यारी जब हिंदी गजलों में लोकप्रिय हुए तो वे दुष्यंत कुमार ही रह गए। ब्रांडिंग ‘दुष्यंत’ की ही हुई। उन्होंने अपने एक मात्र गजल संग्रह साए में धूप से लोकप्रियता पाई। जब ‘साए में धूप’ लोकप्रिय हुआ तो कई गजलकारों ने अपना रुख हिंदी गजल की तरफ किया। कई गजलकारों ने ‘साए में धूप’ की तर्ज पर अपने गजल संग्रहों के नाम रखे। यह इस ब्रांड को भूमाने की कोशिश भी थी। और बाजार का आकर्षण भी।

क्यों कोई मिर्जा असदुल्लाह खान, ‘ग़ालिब’ हो जाते हैं, संपूर्ण सिंह कालरा, ‘गुलज़ार’ हो जाते हैं और शिव किशन बिस्सा, शीन. काफ. निजाम हो जाते हैं और कचरू प्रसाद स्कर्सेना, ‘गुलशन’ (छद्दमा नाम) हो जाते हैं।

उर्दू में इसे ‘तखल्लुस’ कहते हैं। हिंदी में इसे ‘उपनाम’ या ‘छद्दमा’ भी कहते हैं। इसे आप ‘पेन नेम’ भी कह सकते हैं, जो कवियों/शायरों द्वारा अपनी रचना में इस्तेमाल किया जाता है। तखल्लुस की रस्म ईरान से चली। ईरान में प्रायः बादशाहों की शान में कसीदे पढ़े जाते थे। और बादशाह खुश होकर शायर को इनाम इत्यादि दिया करते थे। कसीदा चोरी न हो जाए, अतः शायर सिग्नेचर के तौर पर नीचे अपना नाम लिख दिया करते थे।

तखल्लुस शब्द अरबी से आया है। जिसका अर्थ होता है मुक्त होना, बचाव या छुटकारा पाना। सवाल ये है कि शायर या कवि किस चीज से मुक्त होना चाहता है? किससे छुटकारा पाना चाहता है? किससे बचना चाहता है? जी हाँ! इससे शायर या कवि अपनी जाति व अपने मजहब की पहचान से छुटकारा पाता है। तखल्लुस ऐसा ही चुना जाता है जो उस रचनाकार की जाति व उसके मजहब की पहचान को ढक ले।

सवाल यह है कि क्या कोई कलाकार चौबीसों घंटे कलाकार बना रहता है? यानी की ‘गुलशनजी’ चौबीसों घंटे ‘गुलशनजी’ बने रहते हैं या कभी-कभी ‘कचरू प्रसाद स्कर्सेना’ भी बन जाते हैं।

- हम किसी कलाकार को पर्दे पर देखते हैं या किसी रचनाकार की रचना को पढ़ते हैं तो उसकी वैसी ही छवि अपने दिलो- दिमाग में बना लेते हैं जैसी पर्दे पर दिखाई पड़ती है या उसकी रचना में झलकती है। हम रचना में झलकने वाले या स्क्रीन पर दिखने वाले व्यक्तित्व को ही उस रचनाकार का व्यक्तित्व मान लेते हैं। लेकिन जब हम ‘गुलशनजी’ से मिलने जाते हैं तो वहाँ हमारी मुलाकात ‘कचरू प्रसाद स्कर्सेना’ से होती है, जिसमें ‘गुलशनजी’ की महक हम छूटते हैं और निराशा हाथ लगती है।
- क्योंकि आज का कवि- शायर किसी सरकारी विभाग में काम कर रहा है। कहीं बैंक में पैसे गिन रहा है तो कहीं स्कूल- कॉलेज में बच्चों को पढ़ा रहा है। वहाँ वह शायर या कवि नहीं है। वहाँ वह सरकारी बाबू, केशियर, और अध्यापक है। कहीं- कहीं तो ये नौकरी भी उसने अपनी जातीय पहचान के आधार से पाई होती है।
- ऐसी स्थिति में कृतित्व से ज्यादा व्यक्तित्व महत्वपूर्ण हो जाता है। वैसे भी कलाकार किसी एक जाति, धर्म या मजहब की नहीं होता, वह सबका होता है। पर क्या उसका एक कलाकार की तरह रूपांतरण हुआ है?
- आजकल बीड़ियों और रील के जमाने में शायर को रचना के साथ अपने नाम या अपने हस्ताक्षर की जरूरत नहीं रही। उसे पढ़ते हुए आप देख या सुन सकते हैं। लेकिन हर पुरानी चीज बुरी नहीं होती। अगर रचनाकार मजहब और जाति से ऊपर उठ कर बात करता है तो उसका स्वागत होना चाहिए।

संतुलन, साधना और मर्यादा: औरा का सशक्त सूत्र

सकारात्मक व्यक्तित्व का जादू

हर इंसान के चारों ओर फैली अदृश्य ऊर्जा, जिसे औरा कहते हैं, उसके विचारों, भावनाओं और कर्मों का दर्पण होती है। यह ऊर्जा न सिर्फ इंसान के व्यक्तित्व को आकर्षक बनाती है, बल्कि जीवन में सकारात्मक बदलाव और संतुलन लाने में भी मदद करती है। हम यदि अपनी सही सोच, भावनाओं का संतुलन, मर्यादित कर्म और साधना पर ध्यान दें या नियंत्रण रखें तो अपने औरा को विकसित कर सकते हैं।



रेणुका विजय गांधी
लेखिका

दु निया को देखें और समझने का हमारा तरीका सिर्फ आंख या कान से ही नहीं होता, वरन् कई बार हमारा आभासंडल यानी हमारी ऊर्जा भी हमारे व्यक्तित्व और जीवन को आकर देती है। “औरा” वह अदृश्य परत है जो हर इंसान के साथ साये की तरह उसके चारों ओर फैली होती है। यह न केवल हमारे मानसिक और भावनात्मक स्थिति का दर्पण होती है, बल्कि यह हमारे संबंधों व सामाजिक प्रभाव को भी नियंत्रित करती है।

“औरा” आखिर है क्या..?

“औरा” को आम भाषा में एक व्यक्ति के कर्मों का आभासंडल, उसकी ऊर्जा, उसके विचारों व भावनाओं का पिटारा है। इसे हम उस चमक या आकर्षण के तौर पर समझ सकते हैं जो किसी इंसान को अन्य लोगों से अलग व प्रभावशाली बनाती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझें तो औरा हमारे शरीर के ऊर्जा केंद्रों यानी विभिन्न चक्रों और मानसिक स्थिति के साथ जुड़ा होता है। मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक अध्ययन दोनों यह मानते हैं कि हमारी मानसिक और भावनात्मक स्थिति हमारे आस-पास की ऊर्जा पर प्रभाव डालती है। ये हकीकत भी है।



विचारों की शक्ति और औरा

विचार को हम “औरा” का मूल आधार मान सकते हैं। यदि किसी व्यक्ति के विचार नकारात्मक, अविश्वासी या द्वेषपूर्ण हैं, तो उसका आभासंडल कभी स्थिर और आकर्षक नहीं रह पाता। इसके विपरीत, सकारात्मक, प्रेमपूर्ण और रचनात्मक विचार ही किसी इंसान के आभासंडल को आकर्षक बनाते हैं। उदाहरण के लिए, विवेकानंद की सरल और निस्वार्थ सोच ने न केवल लोगों को आकर्षित किया, बल्कि उनके कार्यों में भी ऊर्जा का प्रवाह बना। उनके साथ रहकर लोग प्रेरित होते थे, और इसे हम उनके आभासंडल की शक्ति का जीवंत उदाहरण मान सकते हैं।

भावनाओं का संतुलन

हमारे भावनात्मक अनुभव व विचार भी “औरा” के विकास में महती भूमिका निभाते हैं। क्रोध, ईर्ष्या और भय जैसी नकारात्मक भावनाएं जहां औरा को धुंधला कर देती हैं, वहीं करुणा, सहनशीलता और प्रेम इसे प्रवर्ह व ऊर्जावान बनाते हैं। ये मान कर चलिए कि कैसा भी संकट क्यों न हो, शांत और संतुलित रहने वाला नेता, शिक्षक या संत अपने चारों ओर सकारात्मक ऊर्जा फैलाता है। नेल्सन मंडेला का जीवन इसका जीवंत प्रमाण है। लम्बी जेल की यातनाओं और अन्याय के बाद भी उनके भीतर करुणा और क्षमा का भाव कायम रहा। उनके व्यक्तित्व की यह आभा लोगों को प्रेरित करती रही और उनका औरा स्थायी रूप से प्रभावशाली बना।

कर्म की मर्यादा और औरा



किसी भी इंसान का आचरण व उसके कर्म भी उसके औरा को गहराई प्रदान करते हैं। ईमानदारी, मर्यादा और कर्तव्यनिष्ठा से किए गए कार्य किसी भी व्यक्ति को आकर्षक बना सकते हैं। आप देखें, चिकित्सकों और शिक्षकों का औरा अक्सर उनके कार्य के प्रति निष्ठा और सामाजिक सेवाओं से विकसित होता है। ऐसे लोग जब भी लोगों की मदद करते हैं, उन्हें दिशा प्रदान करते हैं, तो उसका आभामंडल प्राकृतिक रूप से लोगों को सुकून भरा अहसास कराता है।

औरा केवल ऊर्जा का दर्पण ही नहीं, वरन् आत्मविश्वास का स्रोत भी है। जब इंसान अपने मूल्यों और सिद्धांतों के अनुरूप जीता है, तो उसका व्यक्तित्व आकर्षक और लोगों को प्रेरित करने वाला बनता है। हालांकि औरा को हम एक आध्यात्मिक अवधारणा मान सकते हैं, लेकिन आधुनिक विज्ञान ने भी इसे समझने की कोशिश की है। शोध बताते हैं कि मानसिक स्थिति और भावनात्मक संतुलन के आधार पर ही हमारे शरीर के विद्युत और चुंबकीय क्षेत्र बदलते रहते हैं। ये तथा मानिए कि जब कोई व्यक्ति सकारात्मक भावनाओं व मानसिक संतुलन में जी रहा होता है, तो उसका शरीर नकारात्मक ऊर्जा को कम और सकारात्मक ऊर्जा को अधिक उत्सर्जित करता है, जो उसे आकर्षक बनाती है। अतः हमें ये मानना चाहिए कि औरा को विकसित करने के लिए जैसे ही हम मानसिक और भावनात्मक संतुलन, सकारात्मक विचार, मर्यादित कर्म, नियमित साधना और सकारात्मक संगति जैसे गुणों को अपनाते हैं, तो हमारा औरा न केवल हमारी अंतरिक ऊर्जा को शक्तिशाली बनाता है, बल्कि यह दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनता है। औरा केवल व्यक्तित्व की चमक नहीं, बल्कि जीवन की सकारात्मक ऊर्जा और महान मूल्यों का प्रतीक भी है।

एक कविता

स्वागत हो हर आगत का

नीलांबर परिधान है सुशोभित,
करे धरती मां की धानी चुनर सुसज्जित,
कोयल, मोर, पवीहा, सब मिल,
भोर का करते स्वागत प्रतिदिन,
होता अरुणमय ब्रह्मांड आलोकित,
सब होते प्रफुल्लित और उल्लासित,
होता सृष्टि का कण-कण प्रस्फुटित,
नृत्य करे मन मूरू, हो उत्तेजित।
आओ हम भी सृष्टि से सीखें,

आदर, सत्कार और अनुग्रह भाव,
हम भी करें हर आगत का स्वागत,
हो ऊर्जा और उत्साह भाव अवतरित,
हृदय में प्रेम भाव तरंगित,
हो आत्मीयता का भाव संचारित॥
स्वागत हो हर सकारात्मकता का,
स्वागत हो हर अभिनव प्रयास का,
अभिनंदन हो नवाचार का,
अभिवादन हो सदाचार का।

ऊंच- नीच का भेद मिटाकर,
श्रम की गरिमा प्रतिस्थापित कर,
अनुभव को दें समुचित सम्मान,
हर वर्ग की प्रतिष्ठा का रखें ध्यान ॥॥॥
सच्चा इंकलाब तभी आयेगा,
संग, आमूलचूल परिवर्तन लायेगा,
व्यापकता और विलक्षणता लिए,
सारे विश्व में भारत का परचम लहराएगा ॥॥॥
-डॉ. शोभा भंडारी

साधना और ध्यान जरूरी

ध्यान, प्राणायाम और आत्मचिंतन जैसी साधनाएं इंसान के आभामंडल के विकास में महत्वपूर्ण हैं। इनका निरन्तर अभ्यास मानसिक शांति और ऊर्जा संतुलन को बढ़ाते हैं। उदाहरण के लिए, योगचार्य या साधक नियमित साधना से न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक ऊर्जा को संचित करते हैं, जिससे उनका औरा अन्य लोगों के लिए प्रेरणादायक बनता है। ध्यान से मन शांत होता है और जब मन शांत होता है तो इंसान अपने भीतर की ऊर्जा से जुड़ता है, और उसका आभामंडल स्वाभाविक रूप से आकर्षक हो जाता है।

सकारात्मक संगति का प्रभाव

हमें ये भी खासतौर से ध्यान में रखना चाहिए कि हम जिन लोगों के साथ समय बिताते हैं, उनका प्रभाव भी हमारे औरा पर पड़ता है। श्रेष्ठ चरित्र, सकारात्मक व उत्साही लोगों का सान्त्रिध्य हमारे औरा को आकर्षक बनाता है। इसके विपरीत नकारात्मक या कुकर्मी लोगों की संगति इंसान के आभामंडल को क्षति पहुंचाते हैं। ऐसे में सकारात्मक और प्रेरणादायक संगति को चुनना भी बेहतर जीवन के लिए जरूरी है।

‘War 2’ की बॉक्स ऑफिस जंग शुरुआती धमाके के बाद धीमी पड़ती रपतार

बॉलीवुड की बहुप्रतीक्षित फिल्म ‘War 2’ इस समय सिनेमाघरों में धूम मचा रही है। ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर की स्टार पावर से सजी यह फिल्म यशराज फिल्म्स के स्पाई यूनिवर्स की सबसे बड़ी कड़ी मानी जा रही थी। शुरुआती दिनों में फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर तूफानी शुरुआत की और पहले हफ्ते में 250 करोड़ से अधिक का कलेक्शन दर्ज कर लिया। लेकिन अब, रिलीज के नौ दिनों बाद, फिल्म की कमाई धीमी पड़ती दिख रही है।

शुरुआती रिकॉर्ड और उम्मीदें

फिल्म का ट्रेलर रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर छा गया था। ऋतिक रोशन की सुपरस्टार इमेज और जूनियर एनटीआर की साउथ में अपार लोकप्रियता के चलते उम्मीद थी कि War 2 एक पैन-इंडिया ब्लॉकबस्टर साबित होगी। पहले ही दिन फिल्म ने 60 करोड़ से ज्यादा का धमाकेदार ओपनिंग कलेक्शन किया। दूसरे और तीसरे दिन में भी दर्शकों की भीड़ उमड़ी और यह फिल्म तेजी से 200 करोड़ कलब में शामिल हो गई।

नौवें दिन की स्थिति

हालांकि, दूसरे हफ्ते में फिल्म की रपतार कम होने लगी। रिपोर्ट्स के अनुसार, फिल्म ने नौवें दिन तक दुनियाभर में लगभग 320 करोड़ रुपए का बिजनेस किया। यह आंकड़ा भले ही बहुत बड़ा लगे, लेकिन शुरुआती रपतार के मुकाबले यह गिरावट चिंताजनक है। खासकर तब जब फिल्म से उम्मीद थी कि यह पठान और जवान जैसी फिल्मों के रिकॉर्ड तोड़े। विशेषज्ञ मानते हैं कि फिल्म की रपतार धीमी पड़ने के कारण हो सकते हैं।

- कहानी की आलोचना:** दर्शकों और समीक्षकों का कहना है कि फिल्म की एक्शन सीरीजेस तो शानदार हैं, लेकिन कहानी उतनी पकड़ नहीं बना पाई जितनी उम्मीद थी।
- लंबाई:** लगभग तीन घंटे की फिल्म होने के कारण दर्शकों को थकान महसूस हुई।
- प्रतिस्पर्धा:** इस समय सिनेमाघरों में अन्य बड़ी फिल्में भी रिलीज हो चुकी हैं, जिससे दर्शकों का ध्यान बंटा।

इसके बावजूद, ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर की स्क्रीन प्रेर्जेंस ने दर्शकों को आकर्षित किया है। दोनों की केमिस्ट्री और एक्शन सीन्स फिल्म का सबसे बड़ा आकर्षण हैं। खासकर जूनियर एनटीआर का पैन-इंडिया फैन बेस फिल्म को साउथ में मजबूत पकड़ दिला रहा है। वहीं ऋतिक की लोकप्रियता नॉर्थ इंडिया में फिल्म के लिए बैकबोन साबित हो रही है।

बॉक्स ऑफिस भविष्य

फिल्म ट्रेड एक्सपर्ट्स का मानना है कि अगर War 2 अगले हफ्ते तक स्थिर रहती है तो यह 400 करोड़ का आंकड़ा पार कर सकती है। लेकिन अगर गिरावट इसी तरह जारी रही, तो यह फिल्म बड़ी शुरुआत के बावजूद अपेक्षाओं पर पूरी तरह खरी नहीं उत्तर पाएगी।



स्पाई यूनिवर्स पर असर... यशराज फिल्म्स का स्पाई यूनिवर्स (जिसमें एक था टाइगर, टाइगर जिंदा है, पठान, टाइगर 3 शामिल हैं) अब तक लगातार सफलता का गवाह रहा है। War 2 से उम्मीद थी कि यह उस ब्रह्मांड को और आगे बढ़ाएगी। अगर फिल्म लंबी रेस में टिकी है, तो यह यूनिवर्स के लिए वरदान साबित होगी, लेकिन अगर नहीं, तो यह पहली बार होगा जब इस फ्रेंचाइजी को मिश्रित प्रतिक्रिया मिलेगी।

War 2 की कहानी बॉक्स ऑफिस के लिए एक मिश्रित तस्वीर पेश कर रही है। शुरुआती दिनों का जबरदस्त धमाका इसे इस साल की सबसे बड़ी ओपनिंग फिल्मों में शामिल करता है, लेकिन धीमी होती कमाई यह बताती है कि सिर्फ स्टार पावर और एक्शन के सहारे कोई फिल्म लंबे समय तक नहीं टिक सकती। आज के दर्शक दमदार कहानी और भावनात्मक जुड़ाव भी चाहते हैं। इसलिए, War 2 एक बार फिर यह सवाल उठाती है— क्या बॉलीवुड सिर्फ स्पेक्टेकल और स्टार पावर पर निर्भर रह सकता है, या अब समय आ गया है कि कंटेंट को भी उतनी ही अहमियत दी जाए जितनी बड़े बजट और ग्लैमर को दी जाती है।

तीर्थ से आत्मा तक: आस्था, अनुशासन और अदृश्य शक्ति से संवाद का अनुभव पर्वत के पार: कैलाश यात्रा और आत्मा का साक्षात्कार

कैलाश मानसरोवर की यात्रा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मनुष्य की सीमाओं और सामर्थ्य की गहरी परीक्षा है। यह वह मार्ग है जहां आस्था और विज्ञान, राजनीति और अध्यात्म, कठिनाई और संतोष एक साथ चलते हैं। लेखक पिता- पुत्री ने इस तीर्थयात्रा में हर पड़ाव को न सिफ़र पार किया, बल्कि आत्मा की गहराई तक महसूस भी किया। कभी व्यवस्था की कठोरता, कभी प्रकृति की चुनौती, और कभी शिव की अनंत शांति—इस यात्रा ने उन्हें यह एहसास कराया कि इंसान चाहे जितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, अंतिम सीमा अदृश्य शक्ति के सामने ही आकर रुक जाती है।



लेखक अपनी पुत्री राधिका के साथ।

लेखक: माधव कृष्ण डागा 'कैलाशी'
सहलेखिका: सुश्री राधिका डागा

"हिन्दू" शब्द केवल एक धर्म की पहचान नहीं, बल्कि सृष्टि के उस मूल को दर्शाता है जिसमें हर रचना, हर आस्था और हर धारा समाहित हो जाती है। समय-समय पर इसे अलग-अलग परिभाषाओं में समझाया गया है, परंतु मूल भाव यही है कि जीवन और मृत्यु का अंतिम निर्णय किसी अदृश्य शक्ति के हाथ में ही है। आधुनिक इंसान तकनीक और विज्ञान के बल पर कितना भी उत्तर हो जाए, परंतु यह सच कभी नहीं बदलता। हाल की कुछ विभीषिकाओं ने हमें बार-बार यह अहसास कराया है।

इसी सत्य को हमने (मैं माधव कृष्ण और मेरी सुपुत्री राधिका) अपनी तीर्थयात्रा में प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया। हमारे साथ गए अन्य यात्रियों ने भी इस अनुभूति को आत्मसात किया। इस यात्रा-वृत्तांत में हम केवल कठिन मार्ग या व्यवस्थाओं का वर्णन ही नहीं कर रहे, बल्कि उस अतिम संवाद को साझा कर रहे हैं जो कैलाश मानसरोवर जैसी पवित्र यात्रा में संभव हो पाता है।



कैलाश का आङ्गन... भारतीय परम्परा में तीर्थयात्राओं की अनेक कहावतें और मान्यताएं हैं। "सारे तीर्थ बार-बार, गंगा सागर एक बार" या "जय केदार बाबा", ऐसी धारणाएं हर आस्तिक के मन में बसती हैं। परंतु इनके ऊपर एक ही तीर्थ है जो हर हिंदू की आकांक्षा और आजीवन सपना माना जाता है—कैलाश मानसरोवर।

कैलाश केवल हिमालय का एक पर्वत नहीं है। यह वह स्थान है जिसे शिव का निवास कहा जाता है, जहां जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर आदिनाथ की तपस्या की मान्यता है, जहां बौद्ध और सिख धर्म से भी जुड़े प्रसंग हैं। यह स्थल चरों धरों के अनुयायियों को एक सूत्र में पिरो देता है।

तिब्बत और राजनीति की परछाई... इस यात्रा को समझने के लिए तिब्बत का संदर्भ अनिवार्य है। 19वीं शताब्दी में यह मंगोलिया के प्रभाव में था। 1949-51 में चीन ने जबरन इस पर कब्जा कर लिया। भारत के प्रयास के बावजूद तिब्बत को बचाना संभव नहीं हो पाया। इसका परिणाम 1962 के भारत-चीन युद्ध के रूप में सामने आया। तब से लेकर आज तक तिब्बत निवार्सित धर्मगुरु दलाई लामा के लिए दर्द का प्रतीक और चीन के लिए रणनीतिक संपदा बना हुआ है।

आज तिब्बत में यूरेनियम, लिथियम और अन्य खनिज संपदा प्रचुर मात्रा में है। वहां का जल भंडार भी चीन ने भविष्य की योजनाओं के लिए सुरक्षित कर रखा है। यह भी सच है कि विकास के मामले में चीन ने तिब्बत को जिस तरह बदला है, वह भारत की गति से कहीं आगे है।

परंतु इन राजनीतिक और सामरिक चर्चाओं के बीच जब कोई श्रद्धालु कैलाश की ओर कदम बढ़ाता है, तो उसे केवल आस्था का दीप मार्गदर्शन करता है।

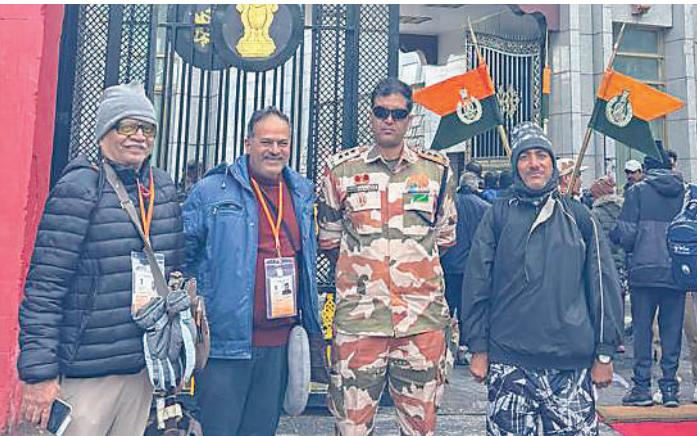
यात्रा की शुरुआत



- कोविड-19 महामारी के कारण वर्षों तक यह यात्रा स्थगित रही। 2025 पहला वर्ष है जब चीन ने भारतीय यात्रियों के लिए 650 वीजा परमिट जारी किए। 50-50 के समूहों में यात्रा आयोजित की गई, जिनके साथ विदेश मंत्रालय का एक रिटायर्ड अधिकारी बतौर लायजनिंग ऑफिसर, एक डॉक्टर और चार रसोइए साथ होते हैं।
- हमारे समूह में भी यात्रा की तैयारी उत्साह से शुरू हुई। सबसे पहले गाजियाबाद स्थित कैलाश मानसरोवर भवन में ठहराव और मेडिकल परीक्षण की व्यवस्था भारत सरकार द्वारा की गई। यह व्यवस्था इतनी उत्तम साथ होते हैं।

- यात्रियों के लिए एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाया गया, जिसमें आवश्यक सूचनाएं साझा की जाती थीं। कठोर चिकित्सा परीक्षण में कुछ यात्री अंतिम क्षणों में भी अयोग्य पाए गए और प्रतीक्षा सूची से अन्य शामिल किए गए।
- फिर दिल्ली के प्रतिष्ठित अस्पताल में विस्तृत जांच हुई। उसके बाद आईटीबीपी (भारत-तिब्बत सीमा पुलिस) के प्रशिक्षण केंद्र में सेना के चिकित्सकों ने हमें और तैयार किया। उन्होंने 'क्या करना है और क्या नहीं' की सूची विस्तार से समझाई।

सिविक्म से चीन की सीमा तक... हमारा सफर बागडोगरा से गंगटोक और फिर नाथू-ला बॉर्डर तक पहुंचा। गंगटोक में होटल और सेना के गेस्ट हाउस में ठहरने का अवसर मिला। ऊंचाई के अनुकूल होने के लिए सुबह की सैर और अध्यास भी कराया गया। नाथू-ला से पहले सभी यात्रियों को पुनः मेडिकल परीक्षण से गुजरना पड़ा। यह बार-बार की जांच डराती जरूर है, परंतु इसी से यात्रा सुरक्षित बनती है। भारतीय सीमा पर सेना ने भावधारी विदाई दी। वहीं चीन की ओर से दूतावास अधिकारियों ने स्वागत किया। यहां से तिब्बत का कठिन, लेकिन अनुशासित सफर शुरू हुआ।



तिब्बत की जगीन पर... तिब्बत में प्रवेश करते ही नियमों की कठोरता स्पष्ट महसूस हुई। मोबाइल और दस्तावेजों की संघन जंच की गई। दलाई लामा या चीनी शासन के विरुद्ध कोई भी सामग्री सख्त वर्जित है। यात्रा के दौरान होटल और बस की व्यवस्था चीन सरकार द्वारा की जाती है। परंतु पर्वतीय इलाकों के गेस्ट हाउसों की हालत अच्छी नहीं थी, विशेषकर शौचालयों की। भारतीय और नेपाली श्रद्धालुओं की भारी संख्या को देखते हुए चीन शायद जानबूझकर यहां सुविधाएं सीमित रखता है। भाषा की समस्या भी सामने आई, हालांकि चीनी अधिकारी इशारों और टूटी-फूटी अंग्रेजी से उचित संवाद कर लेते थे। सौभाग्य से हमारे साथ भारतीय रसोइयों की टीम थी, जो हर सुबह तीन बजे उठकर नाश्ता और भोजन तैयार करती थी। यहीं हमारी सबसे बड़ी सहारा बनी।

कैलाश के साक्षात्कार में... अंततः वह क्षण आया जब हमने कैलाश पर्वत की परिक्रमा शुरू की। तीन दिनों की यह कठिन यात्रा जीवन का सबसे गहरा अनुभव साबित हुई। बिना पानी वाले खुले शौचालयों की कठिनाई से लेकर ऊंचाई पर सांस लेने की समस्या तक, हर चुनौती ने हमें परखा।

परंतु जब विशाल कैलाश हमारे सामने खड़ा था, तो सारी कठिनाइयां तुच्छ लगने लगीं। यह वही क्षण था जब आत्मा और परमात्मा का मिलन प्रतीत होता है।

गैरीकुंड और मानसरोवर झील के दर्शन इस यात्रा की पराक्रमा थे। मानसरोवर के किनारे हमने पवित्र जल से स्नान किया। चीनी नियमों के अनुसार डुबकी नहीं लगा सकते थे, इसलिए बाल्टी से स्नान करना पड़ा। हमारे साथ आए विद्वान् पंडितों ने यज्ञ-हवन किया। बरसात के बीच तंबू तानकर भी हमने मंत्रोच्चार जारी रखा।

वापसी और कृतज्ञता... तीन दिन की परिक्रमा और कैलाश पवित्र-मानसरोवर दर्शन के बाद जब हम बेस कैम्प लौटे तो मन हल्का और आत्मा समृद्ध महसूस कर रही थी। वापसी की यात्रा अपेक्षाकृत सहज लगी।

भारतीय सीमा पर सेना ने गर्मजोशी से स्वागत किया। सिविक्म सरकार के विदाई समारोह और प्रमाण-पत्र वितरण ने हमें गौरव का अहसास कराया।

हम सभी यात्री इस यात्रा को जीवन की सबसे बड़ी पूँजी मानते हैं। भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, हमारे एलओ आलोक सूद, चिकित्सक डॉ. दीपक और पूरी रसोई टीम का हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

सबसे बढ़कर हम अपने सहयोगियों के आभारी हैं, जिनके बीच सहयोग, प्रेम और विश्वास की मिसाल देखने को मिली। यहीं वह संदेश है कि जो इस यात्रा से हमें मिला-आस्था केवल ईश्वर तक पहुंचने का माध्यम नहीं, बल्कि मनुष्यों के बीच सेतु बनाने का भी मार्ग है।

कैलाश मानसरोवर की यात्रा हमें यह याद दिलाती है कि मनुष्य की उपलब्धियां चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हों, उसकी सीमाएं हैं। अंतिम सत्य वही है जो अद्वैत शक्ति के हाथ में है। यहीं शक्ति हमें विनम्र बनाती है और जीवन को उद्देश्य देती है। हम चाहते हैं कि हर भारतीय इस यात्रा के महत्व को समझें। श्रद्धा और नियमों का पालन करते हुए ही आस्था का सच्चा अर्थ मिलता है।

शंभो... यहीं स्मरण हमें शक्ति भी देता है और मार्ग भी

ग्रहों की चाल



विपुल डोभाल, ज्योतिष, पीटारीश्वर।
श्री शनिधाम आश्रम, विकासनगर देहरादून
ईमेल : vipravaani@gmail.com
मोबाइल : 9928424374



मेष

इस राशि के जातकों के लिए यह महीना शुभ समाचारों से भरा हुआ रहेगा। कई पुराने रुक्षे हुए कार्य पूर्ण होते दिखाई दे रहे हैं। प्रेम संबंध प्रगाढ़ होते हैं। वैताहिक जीवन सुखद दिखाई दे रहा है। भूमि भवन वाहन की खरीद के लिए यह समय अनुकूल है। स्वास्थ्य की दौड़ से थोड़ा ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। कुटुंबीय विवाद से स्वयं को दूर रखने तो अच्छा रहेगा। सुसुराल पक्ष में किसी उत्सव में शामिल हो सकते हैं।

शुक्रवार को सफेद चीजों का दान करना शुभ रहेगा।



वृषभ

इस राशि के जातकों के लिए यह सरकारी नौकरी की तलाश कर रहे हैं, यह महीना शुभ रहने वाला है। विदेश का प्लान अगर आप बना रहे हैं तो वह भी सफल होता दिखाई दे रहा है। भूमि, भवन की खरीद बेशक एक महीने के लिए ठाट सकते हैं। भाई बहनों के साथ बहुत ही सौभाग्यपूर्ण रिश्ते रहेंगे और पुरानी खाटास भी दूर होती है। रपतापाप असंतुलित हो सकता है। कार्यस्थल पर वर्कलोड बढ़ेगा। किंतु आप उस अनुपात में कम ही रहेंगी।

भगवान शिव की उपासना और शनि शिला पर तेल अभिषेक आपके लिए शुभ रहेगा।



मिथुन

इस राशि के जातकों के लिए यह समय रिस्क से दूर रहने का है। रिस्क व्यावसायिक हो या व्यक्तिगत, दोनों से ही दूरी बनाकर रखें। मान सम्मान को ठेस पहुंच सकती है किसी भी विवाद से दूर रहना अच्छा रहेगा। भग्य साथ देता दिल रहा है, लेकिन फिर भी कार्य स्थल पर गुप्त शत्रुओं से सकर्त रहें। हृदय या सीने से संबंधित समस्या आ सकती है।

भगवान गणेश की उपासना आपके लिए इस माह शुभ रहेगी।



कर्क

इस राशि के जातकों के लिए नवीन प्रेम के अद्याय प्रारंभ हो सकते हैं। नेत्र दोष या सिर दर्द की समस्या रह सकती है। भाइयों से विवाद की स्थिति बनी रहेगी। भग्य बिल्कुल भी साथ देता नहीं दिखाई दे रहा है। क्रोध पर नियंत्रण रखते हुए चलें। सूर्य को जल अर्पित करना आपके लिए शुभ रहेगा।



सिंह

इस राशि के जातकों के लिए यह समय सफलता की सीढ़ियां चढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। सरकारी और अर्थ सरकारी तंत्र से जुड़े लोगों को लाभ होता है। राजनीति के अलाइड में भी आपकी विजय सुनिश्चित है। सुखद समाचारों की प्राप्ति होती है। किसी नई भूमि या भवन की खरीद हो सकती है। पल्ली को स्वास्थ्य कर्ष रहेगा।

सुबह उठकर खाली पेट रहते हुए कृष्णतरों को भोजन करना आपके लिए शुभ रहेगा।



कन्या

इस राशि के जातकों को क्रोधाधिवय रहेगा तो नेत्र दोष होगा। सिर दर्द से संबंधित समस्या रहेगी। साथ ही साथ नाभि और निचले हिस्से रोगग्रस्त रह सकते हैं। भाई बहनों के साथ संबंध मधुर होते हैं। आय के साथन बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। कार्यस्थल पर की गई कोई गलती आप पर आरोप प्रत्यारोप के रास्ते प्रशस्त कर सकती है। अपने गुण या माता-पिता के चरण स्पर्श करके दिन की शुभआत करना आपके लिए शुभ रहेगा।



तुला

इस राशि के जातकों के लिए संतान संबंधित स्वास्थ्य की समस्या रह सकती है। आय से अधिक व्यय होता है। व्यर्थ के मानसिक तनाव रह सकते हैं। कला के क्षेत्र में जो लोग कार्य कर रहे हैं उन्हें लाभ प्राप्त होता है। भग्य का प्रतिशत कम है इसलिए कर्म पर विश्वास करके आगे बढ़े तो सफलता मिलेगी। भगवान शिव की उपासना आपके लिए शुभ फलदारी होगी।



वृश्चिक

इस राशि के जातकों का मन अस्थिर रहेगा। कई विचार और प्राणिनग का आवागमन होगा, किंतु क्रियान्वयन होने की संभावना कम ही नज़र आती है। सरकारी नौकरियों की तैयारी कर रहे युवाओं को सफलता प्राप्त होने की संभावना है। भूमि भवन और वाहन की खरीद के लिए यह समय शुभ नहीं है। कोई कच्छी मुकाबले बाजी से बाहर रखें, अन्यथा मानवानि की संभावना है। बालाजी की उपासना आपको शुभ फल प्रदान करेगी।



धनु

इस राशि के जातक इस महीने आत्म स्वाभिमान की सफलता के बीच में बाधक न बनने दें। थोड़ा झूक कर चलेंगे तो ईश्वर की काफी बड़ी कृपा बन सकती है। आवश्यकता से अधिक रिस्क परेशानी में डाल सकता है। भाग्य बेहतरीन रूप से साथ देता दिखाई दे रहा है। प्रॉपर्टी से रिलेटेड कोई भी विवाद या खरीद फरोख्त नुकसान दे सकती है। पल्ली को स्वास्थ्य कर्ष रहेगा। शनि देव की उपासना इस महीने आपको शुभ फल प्रदान करेगी।



मकर

इस राशि के जातकों के लिए यह समय बहुत ही अनुकूल और भग्य वृद्धि करका रहता है। जिस क्षेत्र में भी आप हाथ डालेंगे, आपको लाभ मिलता दिखाई दे रहा है। किंतु कोई भी निर्णय जल्दबाजी में ना लें। प्रेम के मामले में यह माह आपके लिए लाभकारी दिखाई दे रहा है। खानपान पर नियंत्रण रखें, अन्यथा पेट संबंधी रोग हो सकते हैं। धन लाभ भी होता दिखाई दे रहा है। शनि देव की उपासना आपको शुभ फल प्रदान करने वाली है।



कुंभ

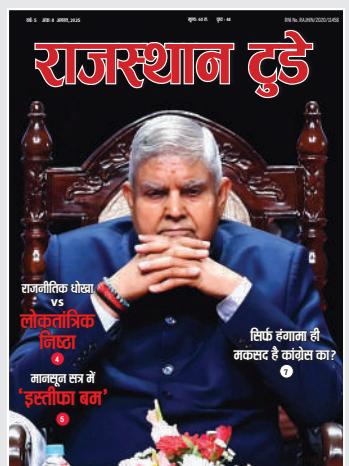
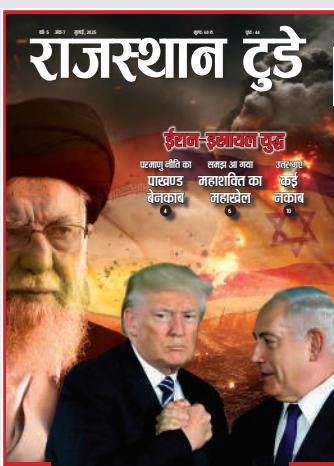
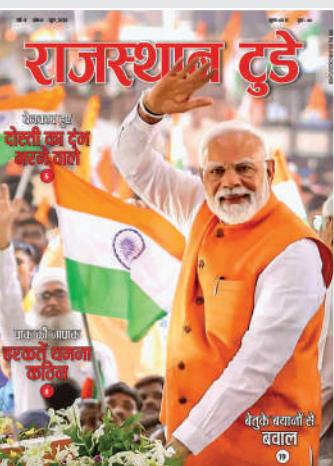
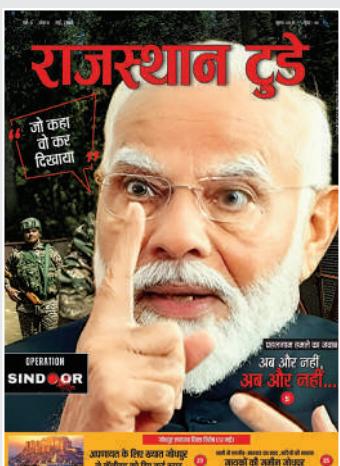
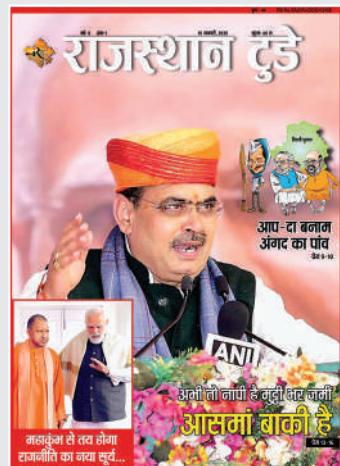
इस राशि के जातकों को इस महीने भाग दौड़ का सामना करना होगा। किंतु इस भाग दौड़ का शुभ फल अंततः आपको प्राप्त होता दिखाई दे रहा है। पांच में थकान, सूजन, चोट जैसी संभावनाएं बढ़ रही हैं। सुझबुझ के साथ लाभकारी होंगे। संतान की ओर से कुछ निराश हाथ लग सकती है। पल्ली के साथ मनमुदावर होता है। प्रेम संबंधों में भी खाटास आ सकती है। शनि देव और हनुमान जी की उपासना आपके लिए शुभ रहेगी।

इस राशि के जातक अगर इस महीने मन को शांत रखकर प्रौढ़ मस्तिष्क से निर्णय लेंगे तो सफलता अर्जित होगी। कोई कच्छी से किसी हुए लोगों के लिए यह महीना शुभ फलदार नहीं है। भाइयों के साथ विवाद की आशंका है। वाहन बहुत सकर्ता के साथ चलाएं, अन्यथा दुर्घटना घट सकती है। पल्ली के साथ संबंधों में तनाव रह सकता है। इस सबके बावजूद भी भग्य साथ देता दिखाई दे रहा है। संयम इस महीने आपके भग्य की कुंजी होगा। गुरु या पिता तुल्य व्यवित के चरण स्पर्श कर कर दिन की शुभआत करें।



राजस्थान टुडे

आपकी पत्रिका, आपकी बात



मासिक समाचार पत्रिका के लिए सदस्यता प्रपत्र

नमस्कार,

हम आपको हमारी मासिक समाचार पत्रिका के साथ जोड़ने के लिए आमंत्रित करते हैं। हमारी पत्रिका में आपको देश और दुनिया की नवीनतम खबरें, विशेषज्ञों के लेख और विश्लेषण, और विशेष सामग्री मिलेगी।

सदस्यता विवरण

- सदस्यता शुल्क: 1000 पोस्टल चार्ज सहित प्रति वर्ष (12 अंक)
- सदस्यता अवधि: 1 वर्ष (12 अंक)
- भुगतान विकल्प: ऑनलाइन UPI भुगतान

सदस्यता प्रपत्र

| | |
|-------------|---|
| नाम | : |
| पता | : |
| शहर | : |
| राज्य | : |
| पिन कोड | : |
| मोबाइल नंबर | : |
| ईमेल आईडी | : |

भुगतान विवरण

ऑनलाइन भुगतान

UPI QR code



8107800000@pz

हमारा पता

राजस्थान टुडे



बी-4, एम आर हार्ड्स,
भास्कर सर्कल, रातानाडा,
जोधपुर- 342011

संपर्क जानकारी

वाट्सएप नंबर: +91 8107800000
ईमेल: rajasthantoday@gmail.com

धन्यवाद,
राजस्थान टुडे टीम

RNI No.- RAJHINDI/2020/11485

सदस्यता के लिए आवेदन करें: यदि आप हमारी मासिक समाचार पत्रिका के लिए सदस्यता लेना चाहते हैं, तो कृपया इस प्रपत्र को भरें और हमारे WhatsApp नंबर पर भेजें। हम आपको जल्द ही अपनी पत्रिका के साथ जोड़ देंगे।

ਨਈ ਦਿਤਾ-ਨਈ ਸੋਚ



रॉयल प्रॉपर्टीज के डायरेक्टर, डॉ. हरदीप सिंह सलूजा को दैनिक भास्कर रियल एस्टेट एक्सीलेंस अवॉर्ड्स 2025 में एक्सीलेंस इन मिस्टर थ्यूज डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स इन जोधपुर के लिए सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित पुस्तकार राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने जयपुर के भव्य रामबाग पैलेस में आयोजित समारोह में प्रदान किया। यह सम्मान न केवल हरदीप सिंह की उपलब्धियों का प्रतीक है, बल्कि जोधपुर में रियल एस्टेट के क्षेत्र में उनके योगदान को भी दर्शाता है।

डॉ. हरदीप सिंह सलूजा रॉयल प्रापर्टीज एवं
डेवलपर्स के निदेशक एक ऐसे उद्यमी है
जिन्होंने अपने पिता की शिक्षाओं को अपना कर
जोधपुर के रियल एस्टेट क्षेत्र में क्रांति ला दी।
शिवांग में त्रिलोक सिंह जी कौर-इन्द्रजीत कौर
सलूजा के यहाँ जन्मे डॉ. हरदीप सिंह ने अपने
परिवार की उद्यमशीलता की विरासत को आगे
बढ़ाने का संकल्प लिया और इसमें डॉ. हरदीप
सिंह सलूजा की धर्मपत्नी जो कि एक कुशल
ग्रहणी होने के साथ-साथ पाक कला में भी बख्खी
रुची रखते हुए अपना पारिवारिक दायित्व निभा
रही हैं व अपने पति का कंधे से कंधा मिला कर
सहयोग कर रही है।

आइकोनिक पीस अवार्ड कौसिल नई दिल्ली द्वारा
डॉ. हरदीप सिंह सलूजा को समाज सेवा के क्षेत्र में
होनररी डॉक्टरेट अवार्ड से सम्मानित किया गया।
नई दिल्ली स्थित कान्स्टट्यूशन क्लब में आयोजित
करीब 200 लोगों की मौजूदगी में मुख्य अतिथि
विजेंद्र जी सांपला पूर्व सामाजिक न्याय मंत्री व
सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायधीशों की उपस्थिति में
हुए इस कार्यक्रम में अश्विन कुमार दुबे एडवोकेट
ऑन रिकॉर्ड सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया द्वारा यह
उपाधि समाज सेवा में विशेष योगदान के लिए दिया
गया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने
अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

लॉ एक्सपर्ट के रूप में...



इंटीरियर ऑर्किटेक्चर व वास्तु में नवाचार



A portrait of Jasmeet Saluja, a man with a beard and mustache, wearing an orange turban and a light-colored shirt with a blue elephant print. He is holding a cigarette in his right hand. The background shows a window with vertical blinds.



ROYALE
PROPERTIES & DEVELOPERS

521-A/1 Ilmaid Heritage Defence Lab Road Ratnada Jodhpur (Raj.)

Contact: 93148-10522 / 93147-10522

Email: royalenproperties24@gmail.com